

जीवनअनुभव

मनोज पाण्डेय

प्रकाशकः

ज्ञान विज्ञान ब्रह्मज्ञान

ब्रह्मपुरा मिर्जापुर उत्तर प्रदेश

भारत

वितरक

ज्ञान विज्ञान विज्ञान ब्रह्मज्ञान

वैदिक विश्वविद्यालय

ब्रह्मपुरा

प्रथम संसकरण

इलेक्ट्रानिक 2018

मुल्यः - 75.00

सम्पर्क सुत्रः-

0 9467557954

Email manojpandey94@yahoo.com

Email gyanviegyanbrhamgyan98@gmail.com

प्रस्तावना

आज के आधुनिक समय में जब कम्प्युटर, मोबाइल और इन्टरनेट कि महत्त्वकांक्षा अत्यधिक बढ़ चुकी है, लोगों का इसके बिना आज आधुनिक युग में के जीना असंभव-सा प्रतित हो रहा है। एक प्रकार से आज लोगों का जीवन काफी हद तक इन संसाधनों पर निर्भर-सा हो गया है और हर व्यक्ति अपने ज़रूरत कि सभी जानकारियों के लिये व्यापार के लिये या किसी प्रकार कि ज्ञान कि जिज्ञासा को शान्त करने के लिये भी इस मोबाईल, कम्प्युट का भरपुर सहयोग ले रहा है और इसका हर एक क्षेत्र में प्रयोग है रहा है धड़ल्ले से, एक तरफ इसकी व्यापकता के साथ अत्यधिक विस्तार हो रहा है। जिसके कारण सभी प्रकार कि भौतिक दूरिया कम हो रही है, मनुष्य ने पृथ्वी के सिमा को पार करके अपने पैर अंतरिक्ष और सूदूर दूसरें मंगल, चादादि ग्रहों पर अपने पैर जमाने के लिये भर सक प्रयास रत है और इसके विपरित इसके कारण होने वाले विकार से हमारे समाज को बहुत बड़ा नुकसान उठाना पड़ रहा है। जैसा कि हम सब जानते है कि किसी भी वैज्ञानिक खोज का शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के परिणाम भी आते है जिनसे बचने का उपाय भी तलासना पड़ता है, जिस प्रकार से सूर्य कि गर्मी पृथ्वी के सभी प्राणियों को ना मिले तो उनाक जीवन यहाँ पर रहना संभव नहीं है और यदि अधिक गर्मि सूर्य से मिलने लगे तो भी जीना बहुत कठिन है। दोनों स्थित में सबसे अधिक खतरा जीवन को ही उठाना पड़ेगा। सूर्य को इससे कोई नुकसान नहीं है, जिस प्रकार से चाकु तरवुज पर गिरे या तरवुज चाकु पर गिरे नुकसाना या कटना तो तरवुज को ही है। चाकु का नुकसान नहीं होगा। इसी प्रकार से इन सभी आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों का मानव जीवन में अत्यधिक समावेश होने का कारण और जब इनका कोई सिमित दायरा नहीं है। और यह जब संतुलन के अस्तर से अधिक हो कर मानव को अपने जालिम पंजों में फंसा लेती है। तो उसके दुस्परिणाम भी सामने आने लगते है। जैसे समाज में भयंकर हिंशा उपद्रव, मानशिक अशान्ति और प्रत्येक प्रकार के आन्तरिक सद्गुणों का लोप हो रहा है। लोगों के अन्दर के जगत के परम आनन्द से अत्यधिक दूर निरंतर होते जा रहे है। जिसके कारण ही समाज में अत्यधिक अज्ञान का प्रचार प्रसार बढ़ रहा है। आधुनिकता के नाम पर लोग पशुओं के समान जीवन जीने के लिये निरंतर अग्रसर किया जा रहा है। लोगों का झुकाव दिन प्रतिदिन चारित्रिक पतन कि तरफ बढ़ रहा है। जीवन में सदाचार भक्ति भावना सद्गुणों का आभाव होता जारहा है। सारे रिस्ते, नाते, सम्बंध प्रेम भाव का आभाव और सम्बंध टुट कर एकांगी जीवन में परिवर्तित होते जा जारहे है। लोगों कि गोपनियता समाप्त हो रही है, लोगों में भरोशा विश्वास के भावों का आभाव तिब्रता से हो रहा है। लोग इनके अस्थान पर नशें का शिकार और अनेक प्ररकार कि उच्छृखलता और स्वछन्दता को अपना आधार बना रहें है। जिसके के कारण सब कुछ जीवन का जो मुख्य आधार है। वह सब विखर रहा है। प्रेम, करुणा, दया, स्नेह, सहानुभुति, आस्था दैविय शक्तियों के प्रति अविश्वास जिसके कारण अस्थान-अस्थान पर निरंतर वैमनस्यता का ही विस्तार हो रहा है। यह सब एक प्रकार कि ऐसी असाध्य विमारियाँ है जिसका इलाज आज के आधुनिक विज्ञान और उसके द्वारा उतपन्न संसाधनों के द्वारा संभव नहीं प्रतित हो रहा है। इन सब का समाधान हमारें पुरुषों ने बहुत पहले ही हम सब को सुझाया है, जैसा कि हमारी संस्कृति के मुख्य आधार भुत स्तम्भ वेद, वेदांङ्ग, उपनिषद, दर्शन, रामायण, महाभारत, पुराणादि जो हमारी मानविय संवदनावों को समझने वालों ने, मानव जाती के कल्याण के लिये कठिन तपस्या और साधना से ज्ञान अज्ञान में अन्तर करने के लिये निश्चित किया है। और हम सब लोगों के जीवन को सुन्दर, सुरम्य और आनन्दपूर्ण बनाने के लिये ही, इन नैतिक विचार और नैतिक सद्गुणों के उद्भव विस्तार से ही किसी भी प्राणि का कल्याण संभव है। उसके प्रति लोगों का ध्यान आकर्सित हो और लोगों के जीवन में सूमधुरता आयें। इस प्रयोजन के लिये यह सारे मार्ग हमारे महापुरुषों नें हमें सुझाये है। आज ज़रूरत आगई है कि हम सब उनके सुझाये मार्ग का अनुसरण करें और

उसको हृदयंगम करके जीवन को सउन्नत करे, और हर प्रकार उत्थान के लिये अग्रसर हो और अपने जीवन कि उन समस्या का समाधान प्राप्त करें जिनका समाधान विज्ञान के पास नहीं है।

मनोज पाण्डेय,

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर हरयाण, भारत

भूमिका

भारत बहुत प्राचीन एवं विविधताओं से भरा देश है। भारत में हर धर्म के लोग निवास करते है यहाँ बहुधर्मी लोगो की कमी नहीं है। इसलिए भारत सबसे प्राचीन और महान देश है। लेकिन क्या आप जानते है? आज हम जिस भारत को देखते हैं अतीत में भारत ऐसा नहीं था। भारत बहुत विशाल देश हुआ करता था। ईरान से लेकर इंडोनेशिया तक सारा भारत ही था, लेकिन समय के साथ-साथ भारत के टुकड़े होते चले गये जिससे भारत की संस्कृति का अलग-अलग जगहों में बटवारां हो गया। आज हम आपको उन देशों को नाम बतायेंगे जो कभी भारत का हिस्सा हुआ करते थे।

बता दें सांस्कृतिक दृष्टि से प्राचीन भारत की सीमाएं विश्व में दूर-दूर तक फैली हुई थीं। भारत ने राजनीतिक आक्रमण तो कहीं नहीं किए परंतु सांस्कृतिक दिग्विजय अभियान के लिए भारतीय मनीषी विश्वभर में गए। शायद इसीलिए भारतीय संस्कृति और सभ्यता के चिन्ह विश्व के अधिकतर देशों में मिलते हैं। आज हम आपको बता रहे हैं कि हमारा प्राचीन सांस्कृतिक भारत कहां तक था।

1. ईरान – ईरान में आर्य संस्कृति का उद्भव 2000 ई. पू. उस वक्त हुआ जब ब्लूचिस्तान के मार्ग से आर्य ईरान पहुंचे और अपनी सभ्यता व संस्कृति का प्रचार वहां किया। उन्हीं के नाम पर इस देश का नाम आर्याना पड़ा। 644 ई. में अरबों ने ईरान पर आक्रमण कर उसे जीत लिया। 2. कम्बोडिया – माना जाता है कि प्रथम शताब्दी में कौंडिन्य नामक एक ब्राह्मण ने हिन्द-चीन में हिन्दू राज्य की स्थापना की। इन्हीं के नाम पर कम्बोडिया देश हुआ। हिन्द-चीन ने मिलकर यहां खमेर साम्राज्य की स्थापना की थी। यह भी माना जाता है कि भारतीय राज्य कम्बोज के उपनिवेश के रूप में कम्बोडिया की स्थापना हुई थी। कम्बोडिया को पहले कंपूचिया और उससे पहले कम्बोज के नाम से जाना जाता था, यह दक्षिण-पूर्व एशिया का एक प्रमुख देश है। पहले यह हिन्दू राष्ट्र था, अब बौद्ध राष्ट्र है। लगभग 600 वर्षों तक फूनान ने इस प्रदेश में हिन्दू संस्कृति का प्रचार एवं प्रसार करने में महत्वपूर्ण योग दिया, तत्पश्चात इस क्षेत्र में कम्बुज या कम्बोज का महान राज्य स्थापित हुआ। 3. वियतनाम – वियतनाम का पुराना नाम चम्पा था। दूसरी शताब्दी में स्थापित चम्पा भारतीय संस्कृति का प्रमुख केंद्र था। यहां के चम लोगों ने भारतीय धर्म, भाषा, सभ्यता ग्रहण की थी। 1825 में चम्पा के महान हिन्दू राज्य का अन्त हुआ। 4. मलेशिया – प्रथम शताब्दी में साहसी भारतीयों ने मलेशिया पहुंचकर वहां के निवासियों को भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से परिचित करवाया। कालान्तर में मलेशिया में शैव, वैष्णव तथा बौद्ध धर्म का प्रचलन हो गया। 1948 में अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त हो यह सम्प्रभुता सम्पन्न राज्य बना। 5. इण्डोनेशिया – इण्डोनिशिया भी किसी समय में भारत का एक सम्पन्न राज्य था। आज इण्डोनेशिया में बाली द्वीप को छोड़कर शेष सभी द्वीपों पर मुसलमान बहुसंख्यक हैं। फिर भी यहाँ के लोग हिन्दू धर्म एवं हिन्दू देवी-देवताओं से से जुड़े हुए है एवं हिन्दू संस्कृति का निर्वहन कर रहे है। इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता जाने वाले यात्रियों के लिए उत्तर-पश्चिम तट पर स्थित शहर के बीचोंबीच भव्य निर्मित अनेक घोड़ों से खिंचने वाले रथ पर श्री कृष्ण-अर्जुन की प्रतिमा सर्वाधिक आकर्षित करने वाली है। इस शहर में जगह-जगह आपको हिंदू स्थपत्य कला का दर्शन होता रहेगा। वहीं इंडोनेशिया में पांच बड़े-बड़े हिंदू मंदिर भी हैं। भारत के भगवान राम और

अन्य कई देवताओं की मूर्तियां या मंदिर आपको सहज ही मिल जाएंगे जो की इंडोनेशिया को भारत की संस्कृति से कहीं न कहीं जोडने का कार्य करते हैं। 7. फिलीपींस – फिलीपींस में किसी समय भारतीय संस्कृति का पूर्ण प्रभाव था पर 15 वीं शताब्दी में मुसलमानों ने आक्रमण कर वहां आधिपत्य जमा लिया। आज भी फिलीपींस में कुछ हिन्दू रीति-रिवाज प्रचलित हैं। 8. अफगानिस्तान – अफगानिस्तान 350 इ.पू. तक भारत का एक अंग था। सातवीं शताब्दी में इस्लाम के आगमन के बाद अफगानिस्तान धीरे-धीरे राजनीतिक और बाद में सांस्कृतिक रूप से भारत से अलग हो गया। 9. नेपाल – नेपाल विश्व का एक मात्र हिन्दू देश है, जिसका एकीकरण गोरखा राजा ने 1769 ई. में किया था। पूर्व में यह प्रायः भारतीय राज्यों का ही अंग रहा।

10. भूटान – प्राचीन काल में भूटान भद्र देश के नाम से जाना जाता था। 8 अगस्त 1949 में भारत-भूटान संधि हुई जिससे स्वतंत्र प्रभुता सम्पन्न भूटान की पहचान बनी। 11. तिब्बत – तिब्बत का उल्लेख हमारे ग्रन्थों में त्रिविष्टप के नाम से आता है। यहां बौद्ध धर्म का प्रचार चौथी शताब्दी में शुरू हुआ। तिब्बत प्राचीन भारत के सांस्कृतिक प्रभाव क्षेत्र में था। भारतीय कांग्रेसी नेताओं की अदूरदर्शिता के कारण चीन ने 1957 में तिब्बत पर कब्जा कर लिया। 12. श्रीलंका – श्रीलंका का प्राचीन नाम ताम्रपर्णी था। श्रीलंका भारत का प्रमुख अंग था। 1505 में पुर्तगाली, 1606 में डच और 1795 में अंग्रेजों ने लंका पर अधिकार किया। 1935 ई. में अंग्रेजों ने लंका को भारत से अलग कर दिया। 13. म्यांमार (बर्मा) – अराकान की अनुश्रुतियों के अनुसार यहां का प्रथम राजा वाराणसी का एक राजकुमार था। 1852 में अंग्रेजों का बर्मा पर अधिकार हो गया। 1937 में भारत से इसे अलग कर दिया गया। 14. पाकिस्तान – 15 अगस्त, 1947 के पहले पाकिस्तान भारत का एक अंग था। हालांकि बटवारे के बाद पाकिस्तान में बहुत से हिन्दू मंदिर तोड़ दिये गये हैं, जो बचे भी हैं उनकी हालत बहुत ही जर्जर है। बांग्लादेश – बांग्लादेश भी 15 अगस्त 1947 के पहले भारत का अंग था। देश विभाजन के बाद पूर्वी पाकिस्तान के रूप में यह भारत से अलग हो गया। 1971 में यह पाकिस्तान से भी अलग हो गया। इसके अलावा भारतीय संस्कृति चीन, जापान, मंगोलिया, लाओस, हॉन्गकॉन्ग, ताइवान, मकाउ, सिंगापुर, दक्षिण कोरिया एवं उत्तर कोरिया सहित विश्व के अनेकों देशों में फैली हुई थी। बौद्ध धर्म विश्व का दूसरा सबसे बड़ा धर्म है और इस धर्म का जन्म ई.पू. छठी शताब्दी में भारत में हुआ था।

"विजानीह्यार्यान्ये च दस्यवो बर्हिष्मते रंधया शासद व्रतान्।" यह ऋग्वेद का मंत्र 1/51/8 है तथा 'उत शूद्र उतार्ये।' यह अथर्ववेद का प्रमाण है। कि आर्य नाम धार्मिक, विद्वान, आप्त पुरुषों का और इन से विपरीत जनों का नाम दस्यु अर्थात् डाकु, दुष्ट, अधार्मिक और अविद्वान् है तथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य द्विजों का नाम आर्य और शूद्र का नाम अनार्य अर्थात् अनाड़ी है। जब वेद ऐसे कहता है, तो दूसरे विदेशियों के कपोलकल्पित को बुद्धिमान् लोग कभी नहीं मान सकते। और देवासुर संग्राम में आर्यावर्तीय अर्जुन तथा महाराजा दशरथ आदि, हिमालय पहाड़ में आर्य और दस्यु-मलेच्छ-असुरों का जो युद्ध हुआ था, उसमें देव अर्थात् आर्यों की रक्षा और असुरों के पराजय करने को सहायक हुए थे। (अर्जुन व दशरथ के काल अलग अलग होने से यह भी सम्भावना लगती है कि यह देवासुर संग्राम अनेक बार हुआ)। इससे यही सिद्ध होता है कि आर्यावर्त्त के बाहर चारों ओर जो हिमालय के पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, देश में मनुष्य रहते हैं, उन्हीं का नाम असुर सिद्ध होता है। क्योंकि जब जब हिमालय प्रदेशस्थ आर्यों पर (विदेशी दस्यु व असुर) लड़ने को चढ़ाई करते थे, तब तब यहां के राजा-महाराजा लोग उन्हीं उत्तर आदि देशों में आर्यों के सहायक होते। और जो श्री रामचन्द्र जी से दक्षिण में युद्ध हुआ है, उसका नाम देवासुर संग्राम नहीं है, किन्तु उस को राम-रावण अथवा आर्य और राक्षसों का संग्राम कहते हैं। किसी संस्कृत ग्रन्थ में वा इतिहास में नहीं लिखा है कि आर्य लोग ईरान से आये और वहां के जंगलियों को लड़कर, विजय पा के, निकाल के, इस देश के राजा हुए। पुनः विदेशियों का (पक्षपात से पूर्ण) लेख माननीय कैसे हो सकता है? (अर्थात् नहीं हो सकता)। महर्षि दयानन्द ने अपने वचनों में सृष्टि की आदि में मनुष्य की उत्पत्ति के स्थान को तिब्बत बताया है। अन्य प्राचीन प्रमाणों से भी यही स्थान सिद्ध होता है। इसके लिए विख्यात विद्वान स्वामी विद्यानन्द सरस्वती जी की पुस्तक 'आर्यों का आदि देश और उनकी सभ्यता' पठनीय है। महर्षि दयानन्द जी ने अंग्रेजों की इस मिथ्या मान्यता का भी सप्रमाण प्रतिवाद कर दिया है कि आर्य इस

आर्यावर्त्त के मूल निवासी नहीं हैं। उनके अनुसार आर्य किसी अन्य देश में आकर यहां आर्यावर्त्त भारत में नहीं बसे अपितु सृष्टि की आदि में, जब पूरा भूलोक व पृथिवी खाली पड़ी थी, तिब्बत से सीधे यहां आकर बसे व इसको उन्होंने ही बसाया था। अंग्रेजों ने जो आर्यों के ईरान व अन्य किसी देश से आने की मान्यता प्रचलित थी, उसके पीछे उनका निजी स्वार्थ था। वह यह प्रचारित करना चाहते थे कि जिस प्रकार हम विदेशी हैं उसी प्रकार से वर्ण व आश्रम धर्म-व्यवस्था को मानने वाले आर्य भी हैं। महर्षि दयानन्द का अंग्रेजों की इस स्वार्थपूर्ण मान्यता का सप्रमाण खण्डन उनकी ऐतिहासिक तथ्यों पर सूक्ष्म तथ्यात्मक दृष्टि व दूरदर्शिता सहित देशहितैषी होने का प्रमाण है। हम आशा करते हैं कि लेख के पाठक महर्षि दयानन्द के दोनों ही निष्कर्षों से सहमत होंगे। आवश्यकता इस बात की है कि महर्षि दयानन्द की मान्यता का डिन्डिम घोष से प्रचार व प्रसार हो और भारत सरकार इस तथ्यात्मक मान्यता को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल कर न्याय करे।

मनोज पाण्डेय,

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर हरयाण, भारत

1 जीवन उद्भव और संहार

इस विश्व ब्रह्माण्ड के उद्भव से पहले केवल एक अदृश्य शक्ति परमेश्वर के रूप में विद्यमाम थी। उसने इच्छा की मैं अनन्त रूपों में हो जाऊ। उस अदृश्य परमेश्वर ने एक बृहद्त्तम उद्घोश रूप शब्द ओम का उच्चारण किया। जो परमेश्वर का निज नाम है। शब्द को भी ईश्वर कहते है, इस नाम के उच्चारण मात्र से अदृश्य जगत से दृश्य जगत में बहुत सुक्ष्म एक अणु का सर्जन हुआ जिसमें प्रथम ब्रह्म कण, दूसरा विष्णु कण, तीसरा महेश कण कहते है। यह एक परमाणु बन गये और यह ब्रह्म कण निरंतर विस्तार करने लगा। जिससे आकाश का जन्म हुआ, जिससे मन बना और उसी एक मन को अनन्त ब्रह्माण्डों का गर्भ कह सकते है। यह उस परमेंश्वर के लिये कच्चा मैटेरियल की भाती था। जिससे ही वह अनन्त किस्म की इस अद्भुत जगत की रचना की, जैसा की हमारें प्राचिनतम शास्त्रों में आता है कि अग्नी, वायु, जल और पृथ्वी यह पांच प्राकृतिक भौतिक दृश्य मय पदार्थ है। जिस हम अपनी नग्न आखों से देख सकते है। यही महेश कण है, यह एक ही पदार्थ से अलग-अलग रुपों में बिभक्त हुये है। जैसा कि हम सब जानते है कि जल एक ऐसा पदार्थ है जिसमें आग और हवा भी है। जिस प्रकार से वायु आक्सिजन जीवन के लिये अवश्यक तत्व है। जिसको जल के अन्दर रहने वाले जलिय जीव मछली आदी पानी में से छान लेते है। और अपने आप को पानी के अन्दर जीने लायक बनाते है। जैसा की हम सब जानते है कि हाइड्रोजन एक ज्वलनशिल पदार्थ है जो आक्सिजन के परमाणु के साथ अभिक्रिया करके जल के एक परमाणु को बनाता है। यही हाड्रोजन भविष्य के लिये बहुत बड़ा उर्जा को श्रोत है। जिससे भविष्य में सभी वाहन आदि आसानी से चल सकते है। जबकी जैविक इधन जैसे पेट्रोल डीजल आदी खत्म होने के कगार पर है। पानी के एक परमाणु में दो तत्व है आग और हवा तीसरा स्वयं जल है चौथा तत्व आकास है, इनके मध्य में ही विद्यमान है पांचवा तत्व यह पृथ्वी है, जो इन चारों के मेल से बनी है। सर्व प्रथम ज्वलनशिल गैसें थी जो आगे चल कर अग्नी का रूप धारण किया जिनसे बहुत सारें तारों का उदय हुआ। इन तारों से अनन्त ग्रहों का उद्भव हुआ और फिर इन ग्रहों पर जीवों का उद्भव हुआ क्रमशः समय के साथ जब ग्रह और तारें आकाश गंगा में स्थापित हो गये। तो उसके बाद इसमे उपस्थित कुछ ग्रहों पर जैसे शुक्र, वृहस्पती, मंगल, आदी ग्रहों पर जीवन का उद्भव हुआ। इनको व्यवस्थित रूप से उस परमेश्वर ने पैदा किया। सबसे पहले शुक्र ग्रह पर आज के अरबो खरबों साल पहले वायु मंडल निर्मित किया गया, उसके बाद उस ग्रह पर वनस्पती युग आया तरह-तरह के वृक्ष लतायें पेड़ पौधों को उत्पन्न किया गया, उसके उपरान्त देव युग, मन फिर मनु युग आया अर्थात मन का सर्जन हुआ जो आकाश का ही एक रूप है। यह विष्णु कण के रूप में है क्योकि मन ही है, जो दोंनों में एक साथ भाषता है। अर्थात मन विशुद्ध रूप से ब्रह्म के स्वरुप को साक्षात्कार करके उनसे एकात्म कर सकता है और यही मन प्रकृती के मुख्य देवता महेश से भी विशुद्ध रूप से जुण कर इस दृश्य मय जगत का सर्जन कर सकता है। जो मन पहले ग्रहों में तारों में रहा फिर वनस्पतियों में रहा फिर इसने एक कदम आगे बढ़ कर चलते फिरते प्राणियों और सुक्ष्म से बृहद जीवों के शरिर का रूप ग्रहण किया सबसे अन्त में मानव को शरीर का उद्भव हुआ। इस मानव को स्वयं का ज्ञान पर्मेश्वर के सामन था। प्रारंभ से इसका झुकाव प्रकृती की तरफ अधिक रहा जिसके कारण ही यह निरंतर अवनती ही करता रहा। जिसको हम यह कह सकते है कि यह मन ही बहुत अधिक शरीरों को धारण किया जिसमें बहुत सारें देवी देवता और अवतार आते है ऋषि महर्षि के शरीर में यह मन उपस्थित हुआ। अवनती के कारण ही यह एक ग्रह को नष्ट करता हुआ दूसरे ग्रह पर अपना निवस बनाता रहा। शुक्र ग्रह के वायुमंडल को और वहाँ क सभी जीवों का अन्त करके, यह बृहस्पती पर अपनी वस्तीया वसा लिया और अरबों सालों तक उस ग्रह के संसाधनो का दोहन किया और उसको भी अधमरा करके जब देखा कि इस पर जीवन का रहना संभव नहीं है। तो वह मंगल ग्रह पर अपना निवास स्थान बनाया। वहाँ पर भी अरबों सालों तक रहा जब उस ग्रह के जैविक संसाधन अंत हो गये, तो वह पृथ्वी पर अपना निवास बनाने के लिये आया। यह मन ही परमेश्वर के साथ एक हो कर ज्ञान वान बन कर अपने ज्ञान से ही सभी जीव जन्तुओं का पुनः सर्जन कर दिया यहाँ पृथ्वी पर। सर्व प्रथम ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीन पुरुष हुए इन तीनो के अधिकार में ही यह सम्पूर्ण दृश्य मय जगत हो गया। जैसा की मैने पहले बताया कि महेश जिनको हम

शीव के नाम से भी जानते है यह संहार के रूप में माने जाते है। विष्णु अर्थात जो मन के स्वामी है जिनके अधिकार में दृश्य और अदृश्य दोनों प्रकार के जगत में संतुलन बनाने का कार्य है। जो इस जगत के पालन करता है। तीसरे ब्रह्मा जिनका मुख्य कार्य है जगत का निरंतर सर्जन करना। ब्रह्मा ने ही सर्व प्रथम अपनी वुद्धि से ब्राह्मणी नाम की स्त्री को जन्म दिया इससे दो पुत्र उत्पन्न हुए. एक यक्ष दूसरा रक्ष अर्थात जैसा की नामों से प्रतित हो रहा है कि यक्ष नाम का जो पुत्र ब्रह्मा के थे वह सिर्फ़ पवित्र कार्यों को करते थे जिसमें यज्ञ सर्व श्रेष्ठ कर्म है जिससे ही इस विश्व ब्रह्माण्ड की रक्षा संभव है। दूसरे पुत्र रक्ष थे जिसका कार्य था यज्ञ रूपी श्रेष्ठ कर्मों की निरंतर रक्षा करना। जो आगे चल कर देवता और दैत्य के रूप में विख्यात हुये इस जगत में। जब इस जगत में बहुत समय तक देवता और दैत्यों ने राज्य किया और इस दृश्यम जगत के आकर्षण में आशक्ती के कारण दोनों अपने मुख्य कर्मों से विरक्त होने लगे। जिससे उन दोनों में द्वेश और राग ने अपना स्थाई निवास स्थान बना लिया। जिसके परिणाम स्वरुप काम और क्रोध ने भी अपनी जड़े गहरी जमा ली। इसका परिणाम यह हुआ की यज्ञ रूपी कर्म निरंतर कम होता गया और निकृष्ट कर्मों की मात्रा में इजाफा होने लगा जिसके कारण दोनो में संघर्ष होने लगा। यहाँ भारत भुमि पर उनको आर्य और अनार्य के नाम से जानते है। जैसे राम कृष्ण आदी के पुरखे आर्यों में आते है, रावण आदी के पुरखे राक्षस में आते है। इन्हीं को देवता और दैत्य कहते है, यह दोनो ही ऋषि महर्षियों की संताने थी जिनके पिता स्वयं ब्रह्मा है। इनकी ही वंसज आ ही इस जगत में चल रही है। एक श्रेष्ठ किस्म के मानव हो जो देवता के समान है जो दूसरों के दुःख दर्द पिड़ा को समझते है। जिनकी संख्या अत्यधिक कम है। दूसरे राक्षश दैत्य है जिनकी संख्या बहुत अधिक है। जैसा की हम सब जानते है कि जो श्रेष्ठ लोग पहले थे जिनमे से कुछ के बारें हम अच्छा तरह से जानते है। जैसे राम या कृष्ण जिनको भारत का बच्चा-बच्चा जानता है। उनको लोग भगवान और विष्णु का अवतार मानते है। इनके पास इतनी क्षमता थी की यह जिसे हम आज जड़ समझते है जैसे पानी जो सागर में विद्यमान है जिसने उनको रास्ता दिया था उसके उपर पुल बना कर वह रावण को मारने के लिये लंका गये थे। दूसरा कृष्ण ने गोबर्धन पर्वत को अपनी कानी उगंली से उठ लिया था। अगस्त ऋषि ने सागर को पी लिया था। राम के ही बंसज थे भगिरथ जीन्होंन गंगा को आकाश से जमिन पर लाये थे। इसके पिछे मैं यह बताना चाहते हूँ की पहले लोग इन पदार्थों के देवता शिव की आरधना करके उनसे अपना मन चाहा कार्य सिद्ध कर लेते थे। दुसरी बात जो मैं बताना चाहता हू वह है कि पहले जो शुक्र, वृहस्पती, मंगल पर श्रृष्टि कैसे खत्म होगई, उसका कारण यही है कि दैवता और दैत्यों का निरंतर युद्ध संग्राम होता रहा। जब देवताऔं की संख्या कम होने लगी दैत्यों का अधिकार ग्रहों पर हने लगा। हर तरफ त्राही त्रही मचने लगी हर कोई प्रताणित होने लगा। तब जैसा की कृष्ण गीता में कहते है यदा-यदा जब जब पृथ्वी पर दुष्टों की संख्या और अतयाचार बढ़ेगा तब-तब मैं यहाँ जन्म लेकर उस ग्रह का उद्धार करुगा और उन सब का सामराज्य सामापात करके धर्म और सत्य के राज् की स्तापना करुग। यह एक सिद्धान्त इसी पर चल कर परमेश्वर ने मानव शरीर में कुछ समय के लिये अवतरित हो कर संपूर्ण जगत को अधर्म से मुक्त किया जिसमे उस ग्रह के राक्षस बंसों को खत्म करने के लिये खतरनाक युद्ध हुए. जिसमें आज से भी आधुनिक और खतरनाक हथियारों का प्रयोग किया गया था उनके पास परमाणु बम हाइड्रोजन बम न्युट्रान, बम आदि की श्रेष्ठतम और उत्तम किस्म के खतरनाक अस्त्र शस्त्र थे। इसका नया प्रमाण पृथ्वी पर मिला है सिन्धु घाटी सभ्यता और बैदिक शभ्यता के अन्त का कारण परमाणु बम पृथ्वी पर गिराये गये थे। पहले के समय में अति उत्तम विमान और स्पैसक्राफ्ट थे जो प्रकाश की गती से यात्रा करके एक ग्रह से दूसरे ग्रह पर आसानी से पहुंच जाते थे। पहले के समय में एक राक्षस राजा शाल्व था जो लाखों साल जिन्दा वाला था, क्योकि उसने अपनी चिकित्सा की उत्तम विधियों के सर्जन से उसने मृत्यु पर अधिकार कर लिये था। जिसके पास बहुत बड़ी सेना और बहुत अच्छे स्पैस क्राफ्ट थे जिसने शुक्र ग्रह, वृहस्पती ग्रह और मंगल पर अपना अधिकार कर लिया था और देवताओं को वहाँ से भगा दिया था। देवताओं ने अपनी जान बचा कर यहाँ पृथ्वी पर अपना गुप्त स्थान रहने का बना लिया था। जिसकी खोज उसने करके यहाँ पृथ्वी पर भी हमला करना शुरु कर दिया था। जिसके सम्पर्क में रावण आदि राक्षस भी थे, जिनके राज्य और अत्याचार को राम ने एक बार समाप्त कर दिया था और रामराज्य स्थापित कर दिया था। लेकिन कृष्ण के समय आते-आते राक्षस फिर बढ़त को प्राप्त कर लिया था जिसमें दुर्योधन आदि प्रथम थे, इस पृथ्वी पर, जिसके लिये कृष्ण नें महाभारत जैसे भयंकर युद्ध को कराया। जिस

युद्ध में तीन हिस्सा पुरी आबादी के लोग सभी मार दिये गये थे। जब शाल्व को यह को यह ज्ञात हुआ की उसकी योजना कामयाब नहीं हो रही है। उसके सारे जो योद्धा है वह मारे जारहे है वहाँ पर सत्यता और धर्म का राज्य स्थापित हो गया है। उसने अपने तिनो ग्रहों से एक साथ कृष्ण जो उस समय द्वारिका में रहते थे। उसपर भंयकर आक्रमण कर दिया और पृथ्वी पर उसने बहुत आतंक मचा दिया था। जिससे कृष्ण बहुत परेशान हो गये थे। उन्होंने भगवान शीव साधना करके उनको प्रसन्न किया और-और उनसे ऐसे अस्त्र शस्त्र लिये जिनकी सहायता से शाल्व के रहने के स्थान शुक्र ग्रह, वृहस्पती ग्रह और मंगल ग्रह के जीवन को हमेशा के पूर्णः नष्ट कर दिया।

2 प्रभु कि महिमा से जिवन का उद्धार

सत्रे ह जाताविषिता नमोभिः कुंभे रेतः सिषिचतुः समानम्। ततो ह मान उदियाय मध्यात् ततो ज्ञातमृषिमाहुर्वसिष्ठम्॥"

यंस्माध्चो अपातक्षन यजुर्यस्मादपाक्षन समानि यस्य लोकामान्यथर्वागिसों मुखम। स्कम्भं तं भूहि कतमः स्विदेव सः॥

अर्थातः-उस स्कम्भ जगदाधार विराट परमेश्वर की महिमा को कौन जान सकता है। इससे ऋग्वेद का विस्तार हुआ, जिससे यजुर्वेद उत्पन्न हुआ, सामवेद जिसके लोम के समान है और अथर्ववेद जिसका मुख है यहाँ अथर्ववेद को मुख कह इसकी सर्वोच्चता का प्रतिपादन किया गया है। इसी कारण यज्ञ के चार प्रधान ऋत्वियो के नेता ब्रह्मा के लिये अथर्ववेदित होने की अनिवार्यता रखी गयी है। अथर्ववेद काण्ड १° सूक्त ७ मंत्र १४ स्वतः यह प्रमाणित करता है कि अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा ये चार ऋषि सर्व प्रथम सृष्टि में उत्पन्न हुये। इन्ही के हृदयो में क्रमशः ऋग, यजु, साम तथा अथर्ववेद का प्रकाश हुआ। यह कैसे हुआ इसके लिये एक मंत्र ऋग्वेद का कहता है कि इन सब की क्लोंनिग हुई अर्थात इनको विशेष रूप से लैब में तैयार किया गया। वह प्रयोगशाला मंगल ग्रह पर बनाई गई क्योंकि यहाँ आने से पहले मानव जाती मंगल पर रहती थी। इसके भी प्रमाण वेदों में मिलते है। इन प्रयोगशालाओं में विशेष पर्कार मित्रा और वरुणा नामक दिव्य उर्जावों का उपयोग करके मानव शरीर को युवा उत्पन्न किया गया। यह अमैथुन श्रृष्टी के नाम से जानते है। इनके द्वार ही बाद में मैथुनी श्रृष्टी का आरंभ किया गया। महर्षि दयानन्द ने भी ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में वेदोत्पति विषय पर लिखते हुये इसी की पुष्टि की है।

अग्निवायुरव्यंगिरोमनुष्य देहधारि जीवद्वारेण परमेश्वरेण श्रुतिर्वेदः प्रकाशीकृत इति बोध्यम"

यह निश्चय है कि परमेश्वर ने अग्नि वायु आदित्य तथा अंगिरा इन देहधारी जीवो के द्वारा वेद का अर्थ प्रकाश किया। इन चारो ने ही ब्रह्मा को वेद ज्ञान दिया इसी कारण ये ब्रह्मर्षि कहलाये। अंगिरा का अर्थ यही रूढ़ हुआ कि देवां ओर ऋषियो को वेद पढाने वाला आचार्य। ब्रह्मार्षि अंगिरा तथा इनके वंशज अंगिरस (अंगों का रस विर्य है) ऋषियो में सप्तऋषि के नामों से जिनको जानते है। सूर्य की सात किरणों को भी सप्तऋषि कहते है। इसी प्रकार यह आत्मा रूपी सूर्य है जिससे यह सात प्रकार की किरणे निकलती हे। आत्मा को अन्न भी कहते है इस अन्न से-से ही पहले रस बनाते है फिर रस से खुन बनता है खुन से मांस बनात है मासं से

मेद बनता है मेद से मज्जा बनता है मज्जा से हड्डी बनती है और हड्डी से विर्य बनता है। जिससे मानव शरीर का निर्माण होता है।

ऋग्वेद का कथन है कि मित्र तथा वरुण नामक वेदताओं का अमोघ तेज एक दिव्य यज्ञिय कलश में पुंजीभूत हुआ और उसी कलश के मध्य भाग से दिव्य तेजः सम्पन्न महर्षि अग्री, वायु, अंगिरा और अदित्य आदि ऋषियों का सर्वप्रथमे उद्भव हुआ। यह सब शरीर विज्ञान है इसके द्वारा ही शरीर का निर्वाण हुआ तही पर भी यह नहीं कहा है। कि अत्मा का निर्वाण या परमात्मा का निर्वाण कैसे और कहाँ हुआ? क्योकि आत्मा और परमात्मा ही निर्वाण करता है इस शरीर के, अब हम शरीर का साक्षात्कार करें, क्योंकि मृत्यु इसके अतिरिक्त कुछ नहीं है यह शरीर ही मृत्यु है। हम सब साक्षात मृत्यु पर सवार है फिर भी हमें आजीवन खयाल नहीं आता है इस मृत्यु का, हर समय हम यही सोचते है कि मृत्यु अभी नहीं है जीवन अभी है और इस जीवन का आनन्द ले ले, मृत्यु तो कभी भविष्य में आने वाली एक काल्पनिक घटना है। प्राचिन समय में हमारे पास ऐसा विज्ञान था जिससे हम इस शरीर को मरने से पहले इसको नया कर देते थे, क्योकि यह शरीर अरबो खरबों कोशीकाओं से निर्मित है जो हर समय अपना रूप आकार बदल रही है। कोशीकाओं के परीवर्तन मात्र से शरीर बदलता है। यह जब माँ के गर्भ में रहता है तो बहुत सूक्ष्म रहता है। यह दो तत्वों से मिल कर बनता है जिसे हम सब आज के वैज्ञानिक भाषा में अंडाणु और शुक्राणु के नाम से जानते है। इन दोनों का निसेचन माँ के गर्भ में होता है। (निसेचन भी दो प्रकार के होते है एक बाहर होता है एस माँ के गर्भ में होता है। जिसके लिये किसी माँ के गर्भ की आवश्यक्ता नहीं होती है। जैसा कि क्लोनिगं के समय सर्व प्रथम श्रृष्टी के प्रारम्भ में हुआ था।) जिससे युग्मनज कहते है यह दोनों का योग होता है जिससे एक भ्रुड़ का रूप बनता है। जो हमारी शरीर का प्रथम चरण है। यह भ्रुण बनने से पहले जिसे हम सब अंडाणु और शुक्राणु कहते है। यह एक स्त्री और पुरुष शरीर के लिंग से निकलने वाली उनका विर्य या तेज कहते है। इसे हमारे प्राचिन वैदिक भाषा में मित्र और वरुण कहते है। यह दो प्रकार की विद्युत उर्जा है। जो सूर्य की मुख्यतः दो किरणों का नाम है। जिस प्राकर से जो सूर्य से किरण निकलती है वह खतरनाक और ज्वलन शिल होती है। लेकिन यही किरण जब चन्द्रमा पर पड़ती है और वहाँ से हमारी पृथ्वी पर आती है। वह ठण्डी, शान्त, निर्मल, कोमल और शुष्क होती है। जिसे आधुनिक भाषा में गीली और सुखी विद्युत के रूप में जानते है। अर्थात एसी और डीसी. है। जिसको दो वंशो के नाम पर भी जानते है। सूर्य और चन्द्र वंश यह स्त्री और पुरुष शरीर के रूपक है यह दो प्रकार की उर्जाये है जो एक दूसरे के पुरक है। जो एक ही सूर्य रूप आत्मा से निकली है। यह आत्मा इनसे अलग है एक तीसरा अदृश्य तत्व है जो देनों में एक सामन गती करती है॥ यह दो प्रकार की उर्जा शक्तीयाँ है जो शरीर निर्माण के लिये परम आवश्यक तत्व मानी जाती है। हमारे प्राचिन काल के ऋषि आदी जो बहुत श्रेष्ठ वैज्ञानिक थे जिन्होंने शरीर की उन कोशिकाओं का अध्ययन करके यह जान लिया था कि वह कौन-सी कोशिका है जो मानव शरीर में बृद्धावस्था को लाती है। उस कोशिका को निकला कर उनके स्थान पर नई कोशिका को प्रत्यारोपित कर देते थे। जिससे आदमी जल्दी वृद्ध ही नहीं होता था जिसके कारण वह कई सौ सालो तक जिन्दा रहता था। यजुर्वेद में ऐसे कई मंत्र आते है जो यह बताते है कि मनुष्य कम से कम चार सौ साल तक तो अवश्य जिन्दा रहे। यह साधरण लोगो की उम्र है जो विशेष लोग है वह तो हजारों और लाखों साल तक जिने में सक्षम थे। जिसमें अधिकतर वैज्ञानिक किस्म के ऋषि महर्षी हुआ करते थे या वह राजा महाराजा जिनके आश्रय में यह संसार और साधरण जन रहते थे। हमारें पुराने साहित्य में यह बात आती है कि किस प्रकार से ऋषि महर्षी अपने योग बल से पर्वतों और दूसरें जण पदार्थों को आज्ञा देते थे और वह जड़ जैसे पर्वत आदि उनकी आज्ञा को सहर्ष स्विकार कर लेते थे। ऐसे ही एक ऋषि थे, पुलस्त्य ऋषि के पुत्र हुए विश्रवा, कालान्तर में जिनके वंश में कुबेर एवं रावण आदि ने जन्म लिया तथा राक्षस जाति को आगे बढ़ाया। पुलस्त्य ऋषि का विवाह कर्दम ऋषि की नौ कन्याओं में से एक से हुआ जिनका नाम हविर्भू था। यह कर्दप ऋषि भारत में नहीं रहते थें यह आज के आधुनिक देश जिसको आस्ट्रेलिया के नाम से जानते है वहाँ के रहने वाले थे। पुलस्त ऋषि वहाँ पर धर्म प्रचार करने गये थे जहाँ पर उनकी मुलाकात कर्दप ऋषि की कन्या हविर्भी से हुआ जिससे उन्होने शादी की जिनसे दो ऋषि पुत्र हुए-महर्षि अगस्त्य एवं विश्रवा। विश्रवा की दो पत्नियाँ थीं-एक थी राक्षस सुमाली एवं राक्षसी ताड़का की

पुत्री कैकसी, जिससे रावण, कुम्भकर्ण तथा विभीषण उत्पन्न हुए, तथा दूसरी थी इलाविडा-जिसके कुबेर उत्पन्न हुए. इलाविडा चक्रवर्ती सम्राट तृणबिन्दु की अलामबुशा नामक अप्सरा से उत्पन्न पुत्री थी। ये वैवस्वत मनु श्राद्धदेव के वंशावली की कड़ी थे।

यह मनु ही सर्वप्रथ इस पृथ्वी पर सप्त ऋषयों के साथ अवतरित हुए, अर्थात मंगल ग्रह से अपने स्पैसक्राफ्ट में चल कर यहाँ पृथ्वी के हिमालय के शिखर पर उतरे। और यहाँ पर अपनी मनव कलोनीयों को बसाया। जिसमें सबसे पहले उन्होने अपनी प्रयोग शाला बनाई और क्लोन की बिधी से युवा मानव के साथ सभी जीवों को तैयार किया और इसके साथ ही यहा पृथ्वी पर मनुष्य युग का प्रारंभ किया। ईसके पहले यहाँ पृथ्वी पर डायना सुर आदि विसाल जीव। रहते थे जब मानव ने यहाँ रहना प्रारंभ किया तो उसने सभी बड़े और खतरनाक जीवों को यहाँ पृथ्वी पर से समाप्त कर दिया। जैसा कि आज के वैज्ञानिक प्रयाश कर रहें है। मंगल आदि ग्रहों पर जा कर वहाँ अपनी कालोनि बसाने की योजना पर काम कर रहें है। अगले कुछ एक सालों में मानव मंगल ग्रह पर जा कर रहने लगेगा। क्योंकि यह पृथ्वी ज़्यादा समय तक मनव के रहने के योग्य नहीं रहगी इसका अनुमान वैज्ञानिको को हो चुका है। एक प्रस्न और उठता है कि मानव से पहले यहाँ पृथ्वी पर दूसरे खतरना जीव कहाँ से आयें। इसका उत्तर यह है कि इन विशाल जीवों को मनव से पहले यहाँ पर कृतिम रूप से तैयार करके दुसरे ग्र से प्रत्यारोपित किया गया-गया था कि वह इस पृथ्वी को मानव के रहने के योग्य बनाये। यहाँ वायु मंडल को शुद्ध करने के लिये।

वैज्ञानिक शोध कतई इस तरह की कहानी को सच नहीं मान सकते। सृष्टि उत्पत्ति और विकास में क्रमविकास और कार्य-कारण का सिद्धांत कार्य करता है। वेदों में सृष्टि रचना को वैज्ञानिक तरीके से समझाया गया है। वेदों में ब्रह्मांड उत्पत्ति का जो सिद्धांत है विज्ञान आज उसके नजदिक पहुंच गया है। अब लोगों को कहानी से ज़्यादा तथ्य पर विश्वास होता है। यहाँ वेद-गीता के उत्पत्ति के सिद्धांत को समझने का प्रयास करते हैं। ब्रह्म और ब्रह्मांड और आत्मा-तीनों ही आज भी मौजूद हैं। सर्वप्रथम ब्रह्म था आज भी ब्रह्म है और अनंत काल तक ब्रह्म ही रहेगा। यह ब्रह्म कौन है? ईश्वर है, परमेश्वर है या परमात्मा? यह तीनों नहीं है और तीनों ही है। यह ब्रह्म संपूर्ण विश्व के भीतर परिपूर्ण हैं तथा इस विश्व के बाहर भी है। ब्रह्म ने सृष्टि की रचना नहीं की। ब्रह्म की उपस्थिति से सृष्टि की रचना हो गई. यह सात दिन या सात करोड़ वर्ष का मामला नहीं है यह अनंत काल के अंधकार के बाद अरबों वर्ष के क्रमशः विकास का परिणाम है।

उत्पत्ति और विकासः

अब सृष्टि की उत्पत्ति और विकास कैसे हुआ यह जानते हैं। ब्रह्म की जगह हम समझने के लिए अत्मा को रख देते हैं। आप पांच तत्वों को तो जानते ही हैं-आकाश, वायु, अग्नि, जल और ग्रह (धरती या सूर्य) । सब सोचते हैं कि सबसे पहले ग्रहों की रचना हुई फिर उसमें जल, अग्नि और वायु की, लेकिन यह सच नहीं है।

ग्रह या कहें की जड़ जगत की रचना सबसे अंतिम रचना है। तब सबसे पहले क्या उत्पन्न हुआ? जैसे आप सबसे पहले हैं फिर आपका शरीर सबसे अंत में। आपके और शरीर के बीच जो है आप उसे जानें। अग्नि जल, प्राण और मन। प्राण तो वायु है और मन तो आकाश है। शरीर तो जड़ जगत का हिस्सा है। अर्थात धरती का। जो भी दिखाई दे रहा है वह सब जड़ जगत है।

नीचे गिरने का अर्थ है जड़ हो जाना और ऊपर उठने का अर्थ है ब्रह्माकाश हो जाना। अब इन पांच तत्वों से बड़कर भी कुछ है क्योंकि सृष्टि रचना में उन्हीं का सबसे बड़ा योगदान रहा है।

अवकाश और आकाश के पूर्व अंधकारः

आकाश एक अनुमान है। दिखाई देता है लेकिन पकड़ में नहीं आता। धरती के एक सूत ऊपर से, ऊपर जहाँ तक नजर जाती है उसे आकाश ही माना जाता है। लेकिन ऊपर अंतरिक्ष भी तो है।

आकाश अर्थात वायुमंडल का घेरा-स्काई. खाली स्थान अर्थात स्पेस। जब हम खाली स्थान की बात करते हैं तो वहाँ अणु का एक कण भी नहीं होना चाहिए, तभी तो उसे खाली स्थान कहेंगे। है ना? हमारे आकाश-अंतरिक्ष में तो हजारों अणु-परमाणु घुम रहे हैं।

खाली स्थान को अवकाश कहते हैं। अवकाश था तभी आकाश-अंतरिक्ष की उत्पित्ति हुई. अर्थात अवकाश से आकाश बना। अवकाश अर्थात अनंत अंधकार। अंधकार के विपरित प्रकाश होता है, लेकिन यहाँ जिस अंधकार की बात कही जा रही है उसे समझना थोड़ा कठिन ज़रूर है। यही अद्वैतवादी सिद्धांत है।

जब तक एक है तो दूसरा भी होगा लेकिन अद्वैत सिद्धांत कहता है कि वह परम एक, शुद्ध एक। सारे धर्म द्वैतवादी है लेकिन हिंदू धर्म अद्वैतवादी है। सचमुच सबकुछ दो जैसा दिखाई देता है लेकिन है नहीं। अंत में एक ही हाथ लगेगा दो जैसा व्यवहार करता हुआ।

नर और मादा सृष्टि की सबसे अंतिम रचना है। नकारात्मक और सकारात्म शक्तियाँ भी बाद की उत्पत्ति है। इसलिए कहना की ईश्वर के विपरित शैतान है यह ईश्वर के खिलाफ बात है। सबसे बड़ी ईशनिंदा यही है कि आपने शैतान को ईश्वर के विपरित माना या उसे ईश्वर के समकक्ष रखा। जो लोग द्वैतवादी है वह अधूरे हैं।

सृष्टि के आदिकाल में न सत् था न असत्, न वायु थी न आकाश, न मृत्यु थी न अमरता, न रात थी न दिन, उस समय केवल वही था जो वायुरहित स्थिति में भी अपनी शक्ति से श्वास ले रहा था। उसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं था। '-ऋग्वेद

ब्रह्म (आत्मा) से आकाश अर्थात जो कारण रूप द्रव्य (ब्रह्माणु) सर्वत्र फैल रहा था उसको इकट्ठा करने से अवकाश उत्पन्न होता है। वास्तव में आकाश की उत्पत्ति नहीं होती, क्योंकि बिना अवकाश (खाली स्थान) के प्रकृति और परमाणु कहाँ ठहर सके और बिना अवकाश के आकाश कहाँ हो। अवकाश अर्थात जहाँ कुछ भी नहीं है और आकाश जहाँ सब कुछ है।

आकाश के पश्चात वायु:

आत्मा से अवकाश, अवकाश से आकाश और आकाश से वायु की उत्पत्ति हुई. वायु आठ तरह की होती है। सूर्य से धरती तक जो सौर्य तूफान आता है वह किसकी शक्ति से यहाँ तक आता है? संपूर्ण ब्रह्मांड में वायु का साम्राज्य है, लेकिन हमारी धरती की वायु और अंतरिक्ष की वायु में फर्क है।

वायु को ब्रह्मांण का प्राण और आयु कहा जाता है। जैसे-हमारे शरीर में हमारे बाद मन की सत्ता है। फिर प्राण की और फिर जल, अग्नि और शरीर की। शरीर और हमारे बीच वायु का सेतु है।

वायु के पश्चात अग्नि:

वायु में ही अग्नि और जल तत्व छुपे हुए रूप में रहते हैं। वायु ठंडी होकर जल बन जाती है गर्म होकर अग्नि का रूप धारण कर लेती है। वायु का वायु से घर्षण होने से अग्नि की उत्पत्ति हुई. अग्नि की उत्पत्ति ब्रह्मांड की सबसे बड़ी घटना थी। वायु जब तेज गति से चलती है तो धरती जैसे ग्रहों को उड़ाने की ताकत रखती है लेकिन यहाँ जिस वायु की बात कही जा रही है वह किसी धरती ग्रह की नहीं अंतरिक्ष में वायु के विराट समुद्री गोले की बात कही जा रही है।

अग्नि से जल की उत्पत्ति: वायु जब बदल गई विराट अग्नि के गोले में तो उसी में जल तत्व की उत्पत्ति हुई. अं तरिक्ष में आज भी ऐसे समुद्र घुम रहे हैं जिनके पास अपनी कोई धरती नहीं है लेकिन जिनके भीतर धरती बनने की प्रक्रिया चल रही है।

जल से धरती की उत्पत्ति हुई: सचमुच ऐसा ही हुआ। जलता हुआ जल कहीं जमकर बर्फ बना तो कहीं भयानक अग्नि के कारण काला कार्बन होकर धरती बनता गया कहना चाहिए कि ज्वालामुखी बनकर ठंडा होते गया। अब आप देख भी सकते हैं कि धरती आज भी भीतर से जल रही है और हजारों किलोमिटर तक बर्फ भी जमी है। धरती पर 75 प्रतिशत जल ही तो है। कोई कैसे सोच सकता है कि जल भी जलता होगा या वायु भी जलती होगी?

जीवन की उत्पत्ति:

अब यहीं से जीवन की उत्पत्ति की शुरुआत की बात कर सकते हैं कि कैसे बने पेड़, पौधे, फिर जलचर जंतु, फिर उभयचर, फिर नभचर तथा अं त में थलचर जीव-जंतु। आत्मा का नीचे गिरना जड़ हो जाना है और आत्मा का ऊपर उठना ब्रह्म हो जाना है।

यह नीचे गिरने और ऊपर उठने की प्रक्रिया अनंत काल से जारी और आज भी चल रही है। जब आत्मा जड़ बन गई तो उसने फिर से उठने का प्रयास किया और फिर वह मोटे तौर पर जल में पौधों के रूप में अभिव्यक्त हुई. फिर जलचर के रूप में, फिर उभयचर और फिर थलचर के रूप में। थलचर में भी आत्मा ने मानव के रूप में खुद को अच्छे तरीके से अभिव्यक्त किया। यह क्रमश: हुआ। कैसे?

आकाश के पश्चात वायु, वायु के पश्चात अग्नि, अग्नि के पश्चात जल, जल के पश्चात पृथ्वी, पृथ्वी से औषधि, औषधियों से अन्न, अन्न से वीर्य, वीर्य से पुरुष अर्थात शरीर उत्पन्न होता है। -तैत्तिरीय उपनिषद

ब्रह्मांड का मूलक्रम-अनंत-महत्-अंधकार-आकाश-वायु-अग्नि-जल-पृथ्वी. अनंत जिसे आत्मा कहते हैं। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार यह प्रकृति के आठ तत्व हैं।

यह ब्रह्मांड अंडाकार है। यह ब्रह्मांड जल या बर्फ और उसके बादलों से घिरा हुआ है। इससे जल से भी दस गुना ज़्यादा यह अग्नि तत्व से घिरा हुआ है और इससे भी दस गुना ज़्यादा यह वायु से घिरा हुआ माना गया है।

वायु से दस गुना ज़्यादा यह आकाश से घिरा हुआ है और यह आकाश जहाँ तक प्रकाशित होता है, वहाँ से यह दस गुना ज़्यादा तामस अंधकार से घिरा हुआ है और यह तामस अंधकार भी अपने से दस गुना ज़्यादा महत् से घिरा हुआ है और महत् उस एक असीमित, अपरिमेय और अनंत से घिरा है।

उस अनंत से ही पूर्ण की उत्पत्ति होती है और उसी से उसका पालन होता है और अंतत: यह ब्रह्मांड उस अनंत में ही लीन हो जाता है। प्रकृति का ब्रह्म में लय (लीन) हो जाना ही प्रलय है। यह संपूर्ण ब्रह्मांड ही प्रकृति कही गई है। इसे ही शक्ति कहते हैं।

जीवन के दुःख का मुल कारण हमारा स्वयं का ज्ञान ही है। इसको अपने जीवन में मैने अनुभव कर लिया है। क्योंकि यह मेरा अपना स्वयं का अनुभव है। मैने अपने जीवन को जितना अधिक ज्ञान पुर्वक जीया उतना ही अधिक मेरें जीवन में दुःख, समस्या और कष्टों से भर गया। जहाँ तक मैने जाना है और अनुभव किया यह संसार स्वयं नहीं बना है। इसको बनाने वाला है जिस प्रकार से हम देखते है कि एक कम्प्युटर प्रोग्रामर होता है। वह काल्पनिक दुनिया का निर्माण कर के एक प्रोग्राम बनाता है। जिसमें सब कुछ सच लगता है और वह सब कुछ होता है जैसा कि हमारे दुनिया में होता उस काल्पनिक दुनिया में सारे नियम हमारे दुनिया के नियम ही काम

करते है। वह एक प्रकार का गेम होता है। जिसको हम कम्प्युटर पर खेलते है। उस समय हम यह खेल बिल्कुल वास्तविक समझते है। यद्यपि वह सब झुठ और कल्पना के अतिरीक्त कुछ नहीं है। ऐसा ही हमारी दुनिया के साथ है इसका बनाने वाला जिसे हम सब परमेश्वर कहते है। वास्तव में परमेश्वर जैसा कोई नहीं है।

हाँ यह अवश्य है कि एक प्रोग्रामर है जिसने हमारी दुनिया और हम सब को प्रोग्राम किया है और अपनी तरह से इस हमारी दुनिया को चला रहा है। जब उसे प्रतित होता है कि कोई ऐसा व्यक्ती है जो इस दुनिया में जन्म ले लिया है जो इस दुनिया के वास्तविक ज्ञान को जान चुका है। या सत्य को जाने के लिये उत्सुक है तो वह प्रोग्रामर जो हर समय हर व्यक्ती से अपने प्रोग्राम और नेटवर्क से जुड़ा रहता है। वह ऐसी-ऐसी समस्या और कष्टों को उसके सामने खड़ी करता है। जिससे या तो वह अपने मार्ग को छोड़ दे या वह अपनी मृत्यु को उपलब्ध हो जाये। जिस प्रकार से राजा हरिश्चन्द्र को कितना भयानक कष्टों को सहना पड़ा अपनी सत्याता के कारण जिससे देवताओं के राजा का सिहासन हिलने लाग था। यहाँ पर हमने जाना कि किस प्रकार से हम सब को बनाने वाला प्रोग्रामर यह किसी किमत पर नहीं चाहता है। कि सत्य का या स्वयं के सत्य का ज्ञान किसी को हो। जो उसकी आज्ञा का उलंघन करता है। उसको वह जल्दी से जल्दी इस दुनिया से उठा लेता है और हम अक्सर सुनते है कि जो इमानदार सत्य वादी ज्ञानी पुरुष होते है उनके हिस्से में ही बहुत अधिक परेशानिया और कष्ट क्यों आते है। जिसका वह सामना नहीं कर सकते है और अंत में वह मृत्यु को उपलब्ध होते है। ऐसे एक व्यक्ती नहीं पूरी दुनिया में ऐसे बहुत व्यक्ती आज तक हो चुके है। उदाहरण के लिये मर्ययादा पुरुषोत्म राम को देख ले, योगेश्वर कृष्ण को देख ले, व्यास ऋषि जिनको हाथियों ने कुचल दिया, पाणिनी को मगरमक्ष ने खा लिया, कड़ाद जो वैशेषिक दर्शनकार हुये। वह एक-एक कड़ के लिये आजिवन परेशान हो कर मर गये। जिसको हम पंतजली कहते है वह पत्ता और जल खा कर मर गये। इसामसिह को क्रास पर लटा दिया गया। सुकरात को जहर पिल दिया गया। गैलेलियों को की आंखों को अंधा करके मार डाला गया। सरमद का सर कलम कर दिया गया। मंसुर को एक-एक अंग काट कर मार दिया गया। ऐसा क्यों किया गया क्या यह सब एक इत्फाक है। या इसके पिछे एक योजना के तहत कार्य किया जा रहा है। सिखों के दस गुरुओं को कितना भंयकर मृत्यु दिया गया। महात्मा बुद्ध, महाविर इत्यादि कितने हुए जिनको यह दुनिया ने बुरी तरह यातना दे-दे कर मार दिया। महर्शि दयानंद, स्वामि विवेका नंद, रामकृष्ण परमहंस, लियो टालस्टाय, गोर्कि, इवान तुर्गनेव, पुरी दुनिया में ऐसे कितने लोग है। जिनको योजना बद्ध तरिके से मारा गया आज के आधुनिक ओशों को कौन नहीं जानता कितना भयंकर कष्ट दे कर मारा गया। उनके शरीर में थेलियम नाम का खतरनाक विश डाल दिया गया जिससे उनकी पुरी शरीर धिरे-धिरे गल गई. यह सब क्यों बेमौत मारे गये इनके सात और बी कितने गुमनाम लोग है जो रोज मर रहे है जिनका ज्ञान ही हम सब को नहीं हो पाता है। इन सब का कसुर केवल एक है कि वह सब ज्ञानी थे और ज्ञान कि बाते करते थे। जो इस नस्वर दुनिया के लिये और इसका जो बनाने वाला प्रोग्रामर है उसके लिये ठीक नहीं है। जिसके कारण ही वह ऐसे लोगों को चुन-चुन कर मारता है। क्योंकि वह नहीं चाहता है ना उसकी प्रकृति ही चाहती है कि कोई उसके सत्य का उजागर करें। इसलिये तो उपनिषद कहते है कि सत्य का मार्ग छुरे के धार पर चलने के समान है। जिसके कारण ही लोग सत्य के मार्ग पर नहीं चल पाते है। लेकिन कुच ऐसे लोग होते है जो सत्य के मार्ग के अनुयाई बन जाते है जिनका एक-एक कदम सत्य और ज्ञान से भरपुर होता है वह इसी के लिये जिते और मरते है। जिनका स्वभाव ही बन गया है सत्य के मार्ग पर चलना सत्या ही बोलना सत्य ही करना उनका जीवन साक्षात नरक के समान होता है वह आग के मार्ग पर चलते है वह हमेशा अपनी चिता पर ही बैठ कर विणा बजाते है। आचारः प्रथमो धर्मः अित्येतद् विदुषां वचः तस्माद् रक्षेत् सदाचारं प्राणेभ्योऽपि विशेषतः। अच्छा बर्ताव रखना यह सबसे जादा महात्त्वपूर्ण है ऐसा पंडीतोने कहा इसलिए अपने प्राणोका मोल देके भी अच्छा बर्ताव निरंतर निमग्न रहते है। श्रेष्ठ पुरुष होते है। आर्ता देवान् नमस्यन्ति, तपः कुर्वन्ति रोगिणः। निर्धनाः दानम् इच्छन्ति, वृद्धा नारी पतिव्रता॥

संकट में लोग भगवान की प्रार्थना करते है, रोगी व्यक्ति तप करने की चेष्टा करता है। निर्धन को दान करने की इच्छा होती है तथा वृद्ध स्त्री पतिव्रता होती है। लोग केवल परिस्थिति के कारण अच्छे गुण धारण करने का

नाटक करते है। अर्थात यह सब झुठे है वास्तव में यह सब सत्य से दूर होते है इसलिये ऐसा दिखावा करने वालो से यह दुनिया भरी पड़ी है और इसी की हर तरफ से शिक्षा दि जा रही है। जिससे झुठे मानव निरंतर जन्म ले रहे है और सच्चे मानव का संहार निरंतर हो रहा है। इस संसार में सुख पुर्वक जो जीना चाहते है तो असत्य आडम्बर झुठ के मार्ग से ही संभव है। सत्य का मार्ग और ज्ञान का मार्ग तो संसार का संहार करने वाला है। जो इसका बनाने वाला नहीं चाहता है। भविष्य में ऐसा संभव है कि हम अपना स्वयं का ब्रह्माण्ड बना पाये जहाँ सब कुछ सत्य और ज्ञान पूर्ण हो जहाँ असत्य और अज्ञान को ठहरने के लिए कोई स्थान ना हो। जिस प्रकार से फ़िल्मी अभिनेता और अभिनेत्री हमें दूर से देखने से अच्छे लगते है ऐसे ही यह दुनिया जितनी झुठी, अज्ञान और असत्य को धारण करती है उतनी ही आकर्षण लगती है। जिसके कारण ही सरल हृदय मंद बुद्धि पुरुष, बच्चे और औरते इसके संमोहन के शिकार होते है। जैसा कि श्लोक कहता है। दूरस्थाः पर्वताः रम्याः वेश्याः च मुखमण्डने। युध्यस्य तु कथा रम्या त्रीणि रम्याणि दूरतः॥

पहाड़ दूर से बहुत अच्छे दिखते है। मुख विभुषित करने के बाद वैश्या भी अच्छी दिखती है। युद्ध की कहानिया सुनने को बहुत अच्छी लगती है। ये तिनो चिजे पर्याप्त अंतर रखने से ही अच्छी लगती है।

सत्यं माता पिता ज्ञानं धर्मो भ्राता दया सखा। शान्तिः पत्नी क्षमा पुत्रः षडेते मम बान्धवाः॥ सत्य मेरी माता, ज्ञान मेरे पिता, धर्म मेरा बन्धु, दया मेरा सखा, शान्ति मेरी पत्नी तथा क्षमा मेरा पुत्र है। यह सब मेरे रिश्तेदार है। जो व्यक्ती इस मार्ग पर चलता है उसका अपने संसार में कोई नहीं रहता है वह अकेला ही रहता है उसके लिये उसका ज्ञान और सत्य ही सब कुछ है भले हि उसके लिये उसको अपनी शरीर रूपी संसार से संधिवीच्छेद करना पड़े वह सहर्ष स्विकार करता है। न मर्षयन्ति चात्मानं संभावयितुमात्मना। अदर्शयित्वा शूरास्तू कर्म कुर्वन्ति दुष्करम्॥ शूर जनों को अपने मुख से अपनी प्राशंसा करना सहन नहीं होता।

वे वाणी के द्वारा प्रादर्शन न करके दुष्कर कर्म ही करते है। चलन्तु गिरयः कामं युगान्तपवनाहताः। कृच्छ्रेरपि न चलत्येव धीराणां निश्चलं मनः॥ युगान्तकालीन वायु के झोंकों से पर्वत भले ही चलने लगें परन्तु धैर्यवान् पुरूषों के निश्चल) दय किसी भी संकट में नहीं डगमगाते।

यहाँ हम अपने समाज में यह प्रायः देखते है कि हर आदमी असमर्थ क्यों है? अभी हमारे एक लेख पर एक महोदया ने कहाँ कि आप अपनी वर्तनि को सुधारें जिससे शब्दों को समझने में आसानी होगी। इसमें दो बातें उभर कर आ रही है। पहली बात कि जिसने भी यह लिखा है कि वर्तनि को सुधारें, चलिये हम मान लेते है। कि वर्तनि में कुछ गल्तियाँ अवश्य होगी, इसमें शब्दों को समझने में कहाँ से समस्या आने लगी। जो कह रही है कि शब्दों को समझने में आसानि होगी। अर्थात उनके कहने का मतलब है कि उनको शब्दों को समझने में कठिनाई हो रही है। इसका मतलब यह भी निकलता है कि उनके पास शब्द ज्ञान नहीं है। हमारा उद्देश्य यहाँ पर यह नहीं है। कि हम शब्दों का ज्ञान दे और वह शब्द समझने में आसान हो, यद्यपि हमारा उद्देश्य है कि मुझे जो समझ में आता है जिसको मैने अनुभव किया है। उसको मैं बाटता हूं। यह तो उसी प्रकार से हो गया कि जैसे एक आदमी प्यासा है, और उसको पिने के लिये पानी दिया जाता है जो कुयें से निकाला गया है। और प्यासा आदमी कहता है मुझे तुम शुद्ध पानी रिफाइन किया हुआ दो। जिससे मुझे ज़्यादा सुख मिलेगा, क्योंकि यह पानी पंचने में दिक्कत दे रहा है? इसका मतलब यह हुआ कि आदमी का पाचन तंत्र कमजोर है। वह प्राकृतिक चिजों को पचाने का सामर्थ नहीं रखता है। उसे कृतिम चिजे पंचाने में ज़्यादा सुबिधा जनक प्रतित होती है। इसका मतलब यह भी हुआ कि यह आदमी नकली है। इससे यह ज्ञात होता है कि सरलता कि तरफ लोगों का झुकाव अत्यधिक हो चुका है। जिससे उनको थोड़ा भी कठिन विषय समझने में दिक्कत आने लगती है। इस तरह से आदमी अपनी असमर्थता को व्यक्त कर रहा है? जिसें मैं आसानी से समझ सकता हूँ। इस दुनिया में कोई भी कार्य आसान कहाँ है? हर कार्य बहुत कठिन और मुस्किल है, आप जिस कार्य को आसान समझते है। उसको एक बार करके देखें, तो आपकों यह बखुबी ज्ञान हो जायेगा कि जिस कार्य को हम आसान समझते थे। वह कार्य बहुत कठिन और दुसाध्य है। क्योंकि हर कार्य का जो चरमोंत्कर्ष है। वहाँ पर उस विषय

का एक विशेषज्ञ पहले से विद्यमान है, जिसके पास सारकारी प्रमाण पत्र भी होता है। जो किसी दूसरे के कार्य को ग़लत या उसमें त्रुटि निकालने के लिये तैयार है। इस तरह से हम किस भी कार्य को यह नहीं कह सकते है। कि वह पूर्ण रूपेण शुद्ध और ठीक है। जो सबके लिये आसान और फायदे मंद ही होगा। इसका हमारे पास कोई गारंटी नहीं है। कोई भी कार्य किसी के लिये फायदेमंद होता है और उसे अच्छा लगता है और वह करता है और वहीं कार्य किसी दूसरे को बुरा लगता है। जिससे उसको नुकसान समझ में आता है। जिस प्रकार से हम अपने समाज में देख सकते है। कि हमारी सरकारें हर तरफ से यह प्रयाश करती है। कि लोगों को ज़्यादा से ज़्यादा जागरुक किया जाये जो नशिली वस्तुयें है, जिससे लोगों का स्वास्थ्य खराब होता है, जिसके कारण लोग बीमार होते है और अपना बहुत मेहनत से कमाये हुए धन को अपने स्वास्थ्य के लिये खर्च करते है। जिसमें से अधिकतर लोग मृत्यु के शिकार होते है, जिसका कारण सिगरेट, बिड़ी, गुटका, तम्बाकु, उत्पाद के अतिरिक्त, गाजां, भांग अफिम, शराब, स्मैक, ब्राउनसुगर, का अत्यधिक उपयोग है। लोग यह जानते है कि यह नुकसान दायक है, फिर भी लोग खुब इसका उपयोग करते है। इसमें दो बातें है पहली बात कि लोग कमजोर हैं उनकी इन्द्रिया कमजोर है वह सब लाचार बेवश और असमर्थ है। दूसरी बात यह कि उनको कमजोर निरंतर बनाया जा रहा है। जिससे उनका भरपुर शोषड़ हो सके जिसको बेचने के लिये बहुत बड़े–बड़े अभिनेता और व्यापारी लगे है। उसका दिन रात प्रचार करके जो बेकार और जहर के समान वस्तु है। उसको भी अमृत बता कर बेचा जा रहा है। जिससे वह सब लोग बहुत चाह कर भी स्वयं को इस लत से मुक्त नहीं रख सकते है। दूसरा कारण है जो व्यक्ति इस व्यापार में लगे है। वह कभी भी नहीं चाहते है कि उनका यह व्यापार किसी भी सर्त पर कभी भी बन्द हो। क्योंकि इससे उन सब को बहुत अधिक फायदा होता है? जिसमे सरकार को भी फायदा होता है, जिससे सरकार भी यह नहीं चाहती कि यह सब बाज़ार में बिकना बन्द हो। इसी तरह और भी बहुत सि वस्तुये है जो समाज के लिये बहुत अधिक हानिकारक है। जो समाज का सर्वनाश कर रही है। हर तरफ से, जैसे आज हमारे समाज में हर वस्तु में मिलावट हो रही है। ना पानी शुद्ध मिल रहा है ना हि दुध ही शुद्ध मिल रहा है। जो पानी शुद्ध पानी के रूप में बाज़ार बेचा जा रहा है वह नुकसान दायक सिद्ध हो रहा है। दुध के नाम पर पाउडर और पानी बेचा जा रहा है। सब्जीयों में, अनाज में, दवा में सब में मिलावट हो रही है। हर क्षेत्र में आज स्मगलिंग हो रही है। दवा, के नाम पर भोजन के नाम पर, हथियार के नाम पर, नशा के नाम पर। मैं ऐसा नहीं समझता कि कोई ऐसा क्षेत्र अभी बचा है कि जिसमें अशुद्धता नहीं हो रही है, मिलावट नहीं हो रही है। हमारे समाज में किसी वस्तु को शुद्ध वस्तु को प्राप्त करना आज उथना ही मुस्किल है जितने मुस्किल कार्य है मिट्टि में सोना को निकालना। यह कार्य आसान नहीं है और आज के समय में आदमी कोई भी कार्य में सरलता चाहता है। आदमी का स्वाभाव बन गया है कि वह कठिनई से भागने का और सरलता कि तरफ हर आदमी का झुकाव बढ़ गया है। जिस प्रकार से पहाड़ी पर चढ़ना हमेशा कठिन होता है। उसी पहाड़ी से उतरने में बहुत सरलता होती है। पहाड़ी भी सहायता करना चाहती है। क्योकि वह पहाड़ी नहीं चाहती है कि कोई आसानी से उसके उपर पतह करें? जो हिमालय के शिखर पर चढ़ते है उनको बहुत कठिनाईयों का समना करना पड़ता है। लेकिन जो हिमालय के शिखर से निचे उतरते है उनको आसानी होती है। क्योंकि हिमालय उनकी सहायता करता है उनको निचे उतरने में? जिस प्रकार से पानी को हमेशा निचे यात्रा करने में प्रकृति का गुरुत्वाकर्षण करता है। उसी प्रकार से यह प्रकृति आग की सहायता करती उपर चढ़ने में। इस संसार में जो उपर किसी तरह से पहुंच चुके है। वह कभी भी नहीं चाहते है कि कोई उस स्थान पर दूबारा चढ़े जिससे उनके अहंकार को चोट पहंचती है। और वह तरह–तरह से हर प्रकार से कठिनाईया उपस्थित करते है उपरे चढ़ने वाले के लिये। जिस प्रकार से संसार में सरकारें और उद्योगपति, अभिनेता इत्यादि संसार में समाज का शोषड़ करते है। क्योंकि इसमें उनके रस आता है। जैसा कि वेदों मेंआता है समानता के अधिकार के बारे में क्या यहाँ समानता का अधिकार हम समाज में सब को उपलब्ध करा पाने में कभी सफल हो सकते है? पतन के और भी अनंत मार्ग है जो समाज में प्रचारित किये जा रहे है। कि इनसे कल्याण मानव का होता है। जिसकी जाल में यह भोला भाला मानव फंस कर अपने जीवन की दुर्गति करता रहता है। वहुत कम ही मानव है जो यहाँ पर समर्थ है यद्यपि वह भी इस समाज और मानव के व्यवहार से दुःखी है इसली लिये तो कहते है कि सर्वें विवेकिनः संसार दुःखः॥ संसार को दुःख पुर्ण बनाया गया है और यहाँ हर आदमी को परतन्त्रता में ही सुख

दिखाई देती है यह माया नहीं तो क्या है? उसे ऐसा दिखाया जाता है जिसके कारण ही आदमी कि समझ में निरंतर अवनति हो रही है और वह कहता है कि वह विद्वान है क्योंकि सके पास विश्वविद्यालय कि उपाधी है जो यह सिद्ध करती है।

3 मानव मन का उद्दार

आज का मानव पढ़ा लिखा अनपढ़ गवार जाहिल किस्म का मुर्ख आदमी हूं। इस लियें तो कोई मेरी बातों को नहीं सुनता है और मुझे यहाँ संसार में शान्ती के साथ जीना नहीं आता है, मुझे हमेसा संसार से शिकायत ही रहती है। यह विल्कुल सत्य है। इसे मैं हि जानता हूँ कि किस तरह मैंने अपने आलस्य और व्यर्थ पूर्ण कार्य को करने में और क्षणिक सांसरिक सुख कि चाह में मैंने अपने शाश्वत सुख और आनन्द को आग लगा दिया। अब जब मैंने स्वयं अपनी चिता तैयार कर के स्वयं ही उसमें आग लगा कर बैठ गया। मेरे पास अब इतना सामर्थ भी नहीं है। कि मैं स्वयं को अपनी चिता से अलग कर सकु। अब मुझसे यह जलने का असहनि पिड़ा दर्द सहा नहीं जा रहा है। मैं लाख चाह कर भी स्वयं को इससे मुक्त नहीं कर पा रहा हूं। मेरी मजबुरियों और कमजोरियों ने मुझको इस कदर जकड़ कर पकड़ लिया है, जैसे सूर्य के प्रकास को बादल रोक लेते है आकाश में ही और उस प्रकाश को पृथ्वी पर नहीं आने देते है। उसकी विरोधी शक्तियां जिसे हम बादल कहते है। यहाँ सम्पूर्ण जीवन आहें भरते हुए रोता है। जिस प्रकार से किसी नदी पर बांध बनाकर उसके पानी को रोक लिया जाता है। जिस प्रकार से किसी शेर को पिजड़े बन्द कर लिया जाता है, बिना उसकी इच्छा के विपरीत, वह लाख प्रयास करता है। मगर वह शेर पिजड़े से निकल नहीं पाता है। जीवन में जैसे कोई प्रकाश ही नहीं है। हर तरफ केवल अंधेरी घाटिया ही नजर आ रही है। अपनी इच्छा होती है कि स्वयं को ले कर किसी अंजाने कन्दरें में हमेंशा के लिये खो जाउ, जहाँ ना जीने कि चाह हो ना मरने का गम हो। वहाँ यह सब कुछ भी नहीं हो। लेकिन यह भी मेरे लिये संभव नहीं है। क्योंकि वह मेरा शत्रु मेरें अन्तर जगत में हर समय विद्यमान रहता है। और वह हमारी सभी गुप्त से गुप्त जानकारियों की खबर रखता है। उससे मेरा कोई भी राज छुपा नहीं है। जो आज हमारे चारों तरफ संसार विद्यमान है। क्योंकि यह संसार मुझे रास नहीं आया। जैसा कि किसी शायर ने कहाँ है कि यह दुनिया यह महफिल मेरें काम की नहीं। या फिर मैं स्वयं इस दुनिया और महफिल के किसी का काम का नहीं रहा। मैं विल्कुल बेकार हो चुका हूं। मेरा कोई उपयोग नहीं है इस संसार में, ना ही यह संसार ही मेरे किसी कार्य का सिद्ध हो रहा है। इस तरह से हमारा इस संसार से कोई सम्बधं ही नहीं बन रहा है। मुझे वह गित प्रिय लगता है जिसमें संसार के दर्द कि कराहने की आवाज आती है। जिसमें मुझे आत्मिक ध्वनी सुनाई देती है। बाकि सब गित तो मुझे फिके-फिके बिना स्वाद के लगता है। कोई रस ही नहीं आता, ना मुझे किसी कार्य से प्रसन्नता का ही अनुभव हो रहा है, ना ही मैं किसी से अप्रसन्न ही हो रहा हूं। मैं भरी भिड़ में भी स्वयं को अकेला पा रहा हूं। ऐसा मेरे साथ ही क्यों हो रहा है, क्या मैं पागल हो रहा हू? या मेरा दिमाग काम नहीं कर रहा है। मुझे अपना फायद क्यों नहीं दिख रहा है? इस संसार में मुझे ही क्यों रास

नहीं आ रहा? यह संसार, जबकि हमारे अतिरिक्त सभी यहाँ मजा लुट रहे है। मैने भी मजा लेने का प्रयाश किया। बदलें में मुझे स्वयं को मजा नहीं आया। मैने स्वयं के सर्वनाश की आधार शिला अवश्य रख दी जिसके उपर ही आज मेरे जीवन का महल खड़ा है। जो धिरे-धिरे धरा साई हो कर गिर रहा है। जिस प्रकार से किसी रेत का महल जिसको ना बनते देर लगती है ना ही बिगड़ते ही। यहाँ हमारे साथ भी कुछ ऐसा ही हो रहा है। मेरा दिल डुबता जा रहा है मेरे हृदय से वेवश आह निकल रहीं है। अपनी नाकामियों और अपनी असमर्थता को देख कर मुझे आश्चर्य हो रहा है। कि यह सब मैने क्या कर दिया, क्या यह सब मैने स्वयं किया है। मुझे स्वयं पर भरोशा नहीं हो रहा है। मुझे स्वयं से बहुत भय और आतंक महशुश हो रहा है। या फिर मेरे अतिरिक्त कोई मेरे अन्दर रहता है। जो मेरी इच्छा के विपरीत मेरे से कार्य कराता है। जिसका फायदा, सुख और आनन्द स्वयं लेता है। उसको मेरे साथ नहीं बाटता है। और दुनिया भर के क्लेश पिड़ा अपमान और सांसारिक मुर्खता पूर्ण कर्मों के परिणाम है वह हमारे सर पर दे मारता है। इस बात में दम है मैंने यह अनुभव किया है कि कोई एक दूसरा जो मुझसे ताकत वर और बहुत शक्तिशाली है। वह विल्कुल मेरे जैसा ही मेरा ही नकल है लेकिन उसके पास शरिर नहीं है। वह मेरी शरीर में निवास करता गुप्त रूप से, मुझे खुब याद है जब वह मेरे अन्दर मेरे हृदय में प्रकट हुआ था। ऐसा केवल एक या दो बार ही हूआ। वह कुछ ऐसी बाते मेरे से कर-कर रहा था। जैसे वह मेरे जीवन का स्वामी हो, मैं उसे परमात्मा समझ बैठा मेरा हृदय उस समय बैठा जा रहा था। एक समय के लिये तो मैं बहुत भयभित हो गया। कि यह मेरे अन्दर से कौन बोल रहा है? क्योंकि उसकी वाणी में शक्ति थी, उसने जो कहा मेरी ही तरह कहा, लेकिन वह मुझसे अलग था। क्योंकि मैं अपने आपको जबसे जानता हूँ ऐसा कभी नहीं हुआ कि मेरे अन्दर से मैं ही दो रूपों प्रस्न्न उत्तर किया हो। उसके बाद मैने कई बार उससे बात चित करने का प्रयास किया लेकिन मैं सफल नहीं हो सका। क्योंकि वह अपनी मर्जी से आता है। और अपनी मर्जी से जाता है और वह बहुत संक्षिप्त में बाते करता है। वह शब्द रूप है जो हमारे अंदर अचानक प्रकट हो जाता है। उसने जो कहा वह विल्कुल सत्य हमारे साथ सिद्ध हो रहा है। उसने मेरी असमर्थता को मेरे सामने प्रकट किया। मैने कहा कि समर्थ हूं, लेकिन मुझे यह बहुत समय के बाद ज्ञात हुआ। कि वह हमारे भविष्य कि घटना को देखने वाला है। जबकि मैं अपने अतित को भी अच्छि तरह से देख नहीं पा रहा हूँ। तो अपनी भविष्य कहाँ से देख पाउंगा। जिससे अपने भविष्य के लिये कुछ अच्छे कदम उठा सकु। वह हम पर बहुत मेहर बान है उसने हम पर कृपा कर मेरे जीवन की सिमा को उसने कुछ समय के लिये बढ़ा दिया है। जब वह मुझमें प्रकट हुआ तो उसने कहा कि तुम मेरे लिये बेकार हो मैं तुम्हे मार दुंगा। मैने कहा कि मैं काम का बनुगां। लेकिन यही तो मेरी कमजोरी है कि मैं उसके काम का नहीं बन पाया। यहा तो मैं स्वयं के भी काम का नहीं बन पाया। तो उस परमात्मा के काम का कैसे बन पाउंगा? उसने ठिक ही कहा है कि वह मुझे मार देगा और यह कार्य कर रहा रोज मुझे वह मार रहा है। जिसके मार कि चोट का कोई निसान भी नहीं पड़ रहा है। लेकिन मैं उसको और उसके द्वारा दिये जारहे हर कष्ट को अच्छी तरह से अनुभव कर रहा हूं। वह यह भी कह सकता है कि यह तुम्हारें कर्मों का फल है। जबकि मैं यह मानने को तैयार नहीं हूं। क्योंकि मैं जब से स्वयं को जानता हूँ प्रारंभ से ही मैं कर्मों में स्वतन्त्र नहीं हूं। यह कोई बहुत पहुचां हुआ हमारे जैसा ही आदमी है। जिसने किसी सुक्ष्म और गुप्त तकनिकी के द्वारा हमारें अन्तर जगत में प्रवेश कर लिया है। और-और वह हमारे जीवन का उपयोग करता है। वह परमात्मा नहीं है कोई और है। क्योंकि परमात्मा दयालु और न्याकारी ही है। जब कि जो आदमी मेरे अन्दर मेरे साक्षात्कार के समय में आया वह स्वार्थी है। और दया हीन है। जिससे हम किसी दया या न्याय कि कामना नहीं कर सकते है। वह हमारी बाहरी प्रकृति पर भी अधिकार कर लिया है। मुझे यह अनुभव होता है। केवल मैं ही भयभित नहीं होता मुझे मेरी प्रकृत जो आकाश, पृथ्वि, सुर्य, वायु, जल यह भी भय भित हो जाते है। और यहं हमेशा रात्री के समय भयभित करता है। इसको केवल मैने ही अनुभव नहीं किया मेरे साथ मेरे बहुत बड़ा परिवार जो हजारों कि संख्या वाला है गांव के और दूसरे लोगों ने भी अनुभव किया है। जैसे यह भयभित और आतंकित करने कि घटना किसी सुक्ष्म मसिन के द्वारा किया जा रहा है। वह हमारे मनो मस्तिस्क पर अधिकार कर लेता है।

एक ऐसी ताकत है जिसका उपयोग केवल अमिर देश या अमिर लोग ही कर रहें है। जिसका उपयोग करके किसी भी क्षेत्र में भुकंप, बाढ़, या ऐसी हवावों के साथ तरंगों को फैलाया जा सकता है। जिसके प्रभाव में आने के बाद उस क्षेत्र के किसी भी व्यक्ति या बहुत बड़े समुह पर अधिकार किया जा सकता है। इसका भरपुर उपयोग किया गया है। मुझे और मेरे परिवार, मेरे रिस्तेदारों को और मेरे समाज को भयभित करने के लिये। ऐसे अमिर आतंकवादी है। जो यह नहीं चाहते है कि लोग सत्य और ज्ञान को उपलब्ध करें। जिसने कर लिया हो उसके पूरे समुह को ही पुरी तरह से समाप्त हत्या करके, उसकी समपत्तियों को अपने अधिकार में कर लेने कि योजना बना लिया है। और इस पर कार्य भी कर रहे है। हमारे खानदान के, हमारे गांव के लोगों पर, हमारे परिवार के लोगों पर, हमारे सम्प्रदाय के लोगों पर इस तरह कि सुक्ष्म मसिनो का उपयोग करके, उन सब कि हत्या हो रही है। और काम इतनी सफाई से करते है, कि इसका कोई प्रमाण प्रशासन को नहीं मिलता है। यह केवल मेरे जीवन या मेरे परिवार या समाज कि बात नहीं है। यह सभी पर प्रयोग किया जायेगा, जो सत्य और इमानदारी के कार्य में लगे हुऐ है। उन सब कि किसी ना किसी प्रकार से समाज में हत्या हो रही है। मेरी भी हत्या हो चुकी है। मैं अपनी दैविय शक्तियों के प्रभाव से कई बार बच चुका हू। लेकिन–लेकिन वह जो हमारे शत्रु है। वह हमें किसी भी किमत पर समाप्त करने के लिये उतारु है। इनके जाल बहुत बड़े है। इनके अंडर में दुनिया कि सरकारें चलती है। यह स्वयं को परमात्मा समझते है। भहुत भयानक तरह से लोगों का शोषड़ और लुट पाट हत्या करते है।

यह उन दिनो कि बात है जब मैं अपने गांव में रहता था। और मैने एक क्रान्तिकारी कदम उठा लिया था। अपना व्यक्तिगत ज्ञान विज्ञान ब्रह्मज्ञान वैदिक विश्वविद्यालय बनाने के लिये कार्य कर रहा था। जिसके आधार शिला को रखने के लिये। मिर्जापुर छानबे क्षेत्र में स्वामी रामदेव जी हरिद्वार वाले को आमन्त्रित किया था। और स्वामी जी अपने नियमित समय पर आयें, और उस स्थान का मुआयना भी किया, उसको बनाने के लिये। उन्होंने एक बड़ी रकम को देने का वायदा भी किया था। जनता के समाने, जिससे जनता में एक प्रकार कि लहर व्याप्त हो गई। कि मेरे पास बहुत बड़ा धन आ चुका है। सुनने वालों में ज्यादातर लोगों को यह अच्छा नहीं लगा, जिसमें हमारें जो सबसे करिबी थे उन्हे वहुत गहरा दुःख हुआ। वह सब हमारे विपरित खड़े हो गये। क्योंकि वह सब नहीं चाहते थे कि मैं वहाँ पर किसी प्रकार निर्माण का कार्य कराउ। मेरे पक्ष में कोई नहीं था अक्सर लोग हमारे खिलाफ ही थे। मैं जि जान से लगा हुआ था कि मुझे विश्वविद्यालय बनाना है। मुझसे जो भी संभव था वह कार्य कर रहा था। लेकिन मेरे द्वारा कार्य जा रहा था, वह कार्य किसी मायने से बहुत तुक्छ था। क्योंकि आज के समय में किसी प्रकार का कार्य करने के लिये सबसे पहले धन चाहिये। धन का वादा तो सब के सामने स्वामी रामदेव ने कर दिया था। लेकिन समय आने पर वह मुकर गये। अर्थात धन नहीं दिया, जिसको बनाने के लिये मैने सबसे शत्रुता कर ली थी। मैं यह समझता था कि राम देव का पैसा मिल जायेगा इस तरह से मेरा कार्य संभव हो जायेगा। मेरा साथ कोई देने के लिये तैयार नहीं हुआ। उस समय मेरे पास धन कि बहुत कमी थी। यहाँ तक मेरा खाना पिना भी बड़ी मुस्किल से चल रहा था। मेरे खिलाफ सुरु से मेरे पिता ही रहे, क्योंकि वह किसी भी सर्त पर नहीं चाहते थे। कि मैं उनकी इच्छा के विपरीत कोई कार्य करु। जबकि मैं सारे कार्य उनके विपरीत ही करता था। वह हमें देखना नहीं चाहते थे। जबकि मैं वही पर रह कर बहुत बड़े कार्य को सिद्ध करने का प्रयाश कर रहा था। इस तरह से सबसे बड़ा शत्रु मेरा पिता ही मेरे खिलाफ खड़ा हो चुका था। वह एक भी रुपया देने के पक्ष में नहीं था। उसने सारी पुसतैनि सम्पत्ती पर एक तरफा अधिकार कर लिया है। यहा तक मुझे घर में भी रहने दिया, गांव वाले कुछ पड़ोसियों के साथ मिल कर मुझ पर जान लेवा हमला भी कर चुका है। वह मुझे समाज में पागल सिद्ध कर दिया है। और सब उसकी बाते मानने लगे हैं। मेरे हाथ और पैर में बेड़िया डालने कि तैयारी चलने लगी। इस बात से सारा समाज परिचित है, कोई भी मेरा एक रुपये से भी सहायता नहीं करना चाहता है। मेरे पास खाने पिने रहने कि बहुत भयानक दिक्कत आ चुकी थी। किसी प्रकार से मेरी माँ मेरे पिता के चोरी से मुझे खाने पिने के कुछ दे देती थी। जिसके लिये उसे अक्सर प्रताड़ित होना पड़ता था। हर तरफ से केवल मेरे शत्रु ही निकल रहे थे। उसी बिच मुझे एक खतरनाक विमारी ने पकड़ लिया जिसने मुझे अधमरा बनाकर रख दिया।

थोड़ा इससे पहले जैसा कि मैने अनुभव किया है। कि मेरा पिता बचपन से ही मुझसे शत्रुता करता था। उसकी ऐसी समझ है कि मैं उसका पुत्र नहीं हूं, किसी और का पुत्र हू जिसको मेरी माँ अपने साथ ले कर आई थी। जिस कारण से वह मुझे और मेरी माँ को जान से मारने चाहता था। जब से मैं जानने लायक हुआ मैं अपनी जान उससे बड़ी मुस्किल से बचा पाया हूं। मैं हमेशा से बहुत अधिक परेसान रहा, सबसे अधिक अपने पिता से ही। यहाँ तक मैं अपने स्वप्नों में भी अपने पिता कि यातना का बहुत अधिक शिकार रहा। जिससे बचने के लिये मैं घर को छोड़ कर भागने लगा था। जब भी वह हमारे साथ मार पिट करता मैं घर छोड़ कर भाग जाता था। कुछ समय बाहर में दुःखों और कष्टों को सहता बड़े छोटे महानगरों में रहा। इस तरह से मैं लगभग सम्पूर्ण भारत का बहुत दर्दनाक भ्रमण किया है। और अंत में मजबुर हो कर घर को वापस आ जाता था। क्योंकि बिना धन के कहीं पर रहना बहुत कठीन कार्य है। यहाँ तक बहुत मुस्किल या असंभव कार्य है। इसी तरह से चलता रहा बहुत समय के बाद मेरी शादी भी हो गई, पत्नी आगई और उसको एक पुत्र भी हो गया। लेकिन यह सब मेरे रास नहीं आया। मेरी पत्नी मेरे पुत्र कि मृत्यु के बाद मुझे छोड़ कर चली गई। इसके पिछे सबसे बड़ा कारण मेरा पिता ही था। वह मुझे हर तरह से मिटाना चाहता था और उसके लिए उसने भरपुर प्रयास किया और काफी हद तक सफल भी हुआ।

एक दिन रात्री के करीब नौ बज रहे थे, सर्दि का समय था और मुझे मारने के लिये मेरे पिताने बाहरी हत्यारों को बुला लिया था। जैसे ही मैं बाहर खाने के लिये बैठा हुआ था। अचानक मेरे अंदर से बहुत भयानक भय कि लहर उठने लगी। जैसा कि पहले एक बार मेरे साथ पहले भी हो चुका था। जब मैं दिल्ली मैं रहता था। उस समय दिल्ली में मैं एक बहुत बड़े व्यापारी परिवार से मेरी कुछ समय के लिये मित्रता थी। बाद में वह हमारे विचार क्रान्तिकारी होने के कारण वह सब मेरे साथ शत्रुता का व्यवहार करने लगे। यहाँ तक बात पहुच गई कि उन्होंने मुझे जान से मारने का भी योजना बना लिया। मेरा जिना मुस्किल कर दिया दिल्ली में, उनकी पहुंच काफी उपर तक थी। एक बार धोखे से बुला कर मुझे वह लोग अपने घर में मुझे पुलिस के हवाले मार पिट कर-कर दिया, और यह इल्जाम लगाया कि मैं उनके घर में चोरी के लिये आया था। मेरे साथ बहुत बड़ा अन्याय हो रहा था। उस समय जेल से छुड़ाने में मेरे वह मालिक काम आये जिनके यहाँ पर मैं कार्य करता था।

इसके बाद मेरा रहना दिल्ली में बहुत मुस्किल होगया और मैं बहुत परेशान रहने लगा था। मैं भी बदला लेना चाहता था। एक बार फिर उनके यहा पर मैं चला गया पिछला सब कुछ भुल कर कि सायद यह हमारी मददत करना चाहते है। लेकिन मैं ग़लत था। वह सब हमारी हत्या कि योजना पुरी तरह से बना चुके थे। मेरे पहुंचते ही वहाँ पर मेरे उपर चार पांच आदमियों ने जानलेवा हमला कर दिया। और मुझे तब तक मारते रहे जब तक मैं पुरी तरह से मरातुल्य नहीं हो गया। जब उनको विश्वास होगया कि मैं अब मर जाउंगा तो मुझे उन्होंने मेरे बहुत याचना करने पर छोड़ दिया। इस सर्त पर कि मैं पुलिस से संम्पर्क नहीं करुगां। वह 25 नवमंबर 2002 की बहुत भयानक रात थी। जब जिवन मैं अपनी मृत्य से लड़ रहा था। उस समय मुझसे एक कदम भी नहीं चला जा रहा था। बड़ी मुस्किल से मैं कनाट प्लेस के भिड़ भाड़ वाले सर्कल से गाड़ियों कि रौसनी के बिच में गिरते लड़खाते बाहर निकल पाया, नई दिल्ली रेल्वे स्टेशन के लिये। मैं रेल्वे स्टेशन के अन्दर ना जा कर सिधा पहाड़ गंज कि तरफ से उस पुल पर चढ़ गया। जो रेल्वेलाईनो को पार कर के अजमेरी गेट और पहाड़ गंज को जोड़ने वाले उस पुल पर पहुंच गया। उपर पुल पर पहुचंने पर मैं भयंकर दर्द से कराह रहा था। मेरे हाथ पैर के जोड़ खुल गये थे। दायाँ पैर और बायाँ हाथ बिल्कुल ढिला पड़ चुके थे। मैंने वहाँ पुल के उपर साईडर पर कुछ समय रुक कर आराम करना चाहा। जिस कारण से मैं वहीं पर निचे ही लेट गया। कुछ ही पल वहाँ लेटा हुआ था। कि मुझको बहुत अधिक ठंडी लगने लगी, जिसके कारण मैं वहाँ से एक बार फिर खड़ा हुआ और पैदल चलते हुए किसी तरह से बड़ी मुस्किल से चलते हुए. अजमेरी गेट कि तरफ नई दिल्ली रेल्वे स्टेसन के सामने, जहाँ पर एक साधु अखाड़ा है। उसके पास से होते हुए, आगे एक मोड़ था वहाँ पहुंचा, जहाँ एक रिक्से वाला कागज जला कर आग ताप रहा था। जहाँ पर मैं जा कर आग के पास अपनी सर्दी

को दूर करने के लिये बैठ गया। रिक्से वाला जो आग जला रहा था, उसके पास लकड़ी भी नहीं थी, कुछ कागज था। जो थोड़ी समय में जल कर राख हो गयी। वह रिक्सा वाला मेरी शक्ल देखर बुरी तरह से भयभित हो गया। और बोला यहाँ से चले जाओं नहीं तो पुलिस आ जायेगी और मुझे परेशान करेगी। मैंने कहा डरो मत मेरे पास बैग में कपड़े भरे है।यह सब मेरे है इसमें से एकाक ले लो, और मुझे थोड़ी देर आग के पास बैठ कर आराम करने दो। और मैंने अपना एक जिन्स का पैन्ट वैग से निकाल कर उस रीक्से वाले को दे दिया। और कुछ कापी किताब जो मेंरे बैग में थे। उनको निकाला और आग में जलाने के लिये आग में डाल दिया। जिससे आग फिर से धधकने लगी, जिससे मुझे थोड़ा सकुन मिला, लेकिन उस समय मुझे भयानक दर्द और मुर्छा आ रही थी। क्योंकि मैने कई दिन से खाना भी नहीं खाया था। और मुझे भी अन्दर से भय लग रहा था, कि कहीं पुलिस ना आ जायें और वह भी मुझे मारने पिटने लगे। जैसा कि उस रिक्से वाले ने कहा, कि थोड़ा पिछे साधुआश्रम के बगल में मड़ी और ट्रान्सपोर्ट है। वहाँ जा कर बैठ जा, वहाँ रात भर काम चलता है। कोई पुलिस वाला परेशान भी नहीं करेगा। मैंने वैसा ही किया और वहाँ से अर्धमुर्छा अवस्था में उस ट्रान्सपोर्ट नगर में पहुंच गया। जहाँ पर एक किनारा देख कर बैठ गया। जहां लग भग मैं मुर्छित हो चुका था। मुझे कुछ भी ज्ञान नहीं था कि मैं कहाँ हु और कैसी हालत में हू? लेकिन वह रिक्सा वाला बरा-बर मुझ पर नजर रख रहा था। जिसने मुझे मेरी अर्ध मुर्छा कि हालत में ही उठाया, और एक दो बार चाय भी पिलाया। उसके बाद रात्री के समय वहाँ के दुकान मालिको से मेरे बारे में कह कर, मुझ पर तरस खा कर मुझे खाना भी खिलाया। खाने के बाद मेरे शरीर में कुछ जान आई, और तब उन लोगों ने मुझसे कहा अब तुम यहाँ से जाओ इस समय रात्री के एक बज रहे है। अभी यहाँ पुलिस आ सकती है। जो तुम्हे परेशान कर सकती है। फिर मैं वहाँ से धिरे-धिरे खड़ा हुआ, और नई दिल्ली रेल्वे स्टेसन के अन्दर पहुंच गया। जहाँ एक तरफ किनारे में दाहिने हाथ पुल के निचे कुछ हाथ ठेले पड़े थे। जिन पर मैं पहुंच कर सोने का प्रयास करने लगा। लेकिन मुझे नीद नहीं आ रही थी। क्योंकि उस समय मुझे सर्दि बहुत अधिक लग रही थी। फिर मैंने अपने बैग को एक बैग खोला और उसमें से कई सारे सर्ट और पैंट निकाल कर, कठिनाई से किसी तरह सबके एक उपर एक पहन लिया। जिससे मेरे उपर सर्दि का प्रभाव काफ़ी कम हो गया। और मैं वहाँ पर कुछ समय के लिये सो गया। रात के चार बजे ही मेरी निद खुल गई। मुझे यहां भी पुलिस का डर सता रहा था, कि कभी भी पुलिस यहाँ आ सकती है, जो मेरे लिये समस्या खड़ी कर सकती है। क्योंकि इसके पहले मैं एक बार बहुत पहले इसी रेल्वे स्टेसन के प्लेट प्लेटफार्म पर बिना टिकट का पकड़ा गया था। कई एक साल पहले जब मुझको पुलिस ने पकड़ लिया था और मुझे और सैकड़ों कैदियों के साथ लाकप में बन्द कर दिया था। जहाँ पेसाब करने और निपटने का स्थान भी नहीं था। और बहुत मारा था उस समय मेरी उम्र कम थी। इस लिये स्टेशन से चलान नहीं किया था। मार पिट कर ही छोड़ दिया था। लेकिन अब समय काफ़ी बदल चुका था।

शुबह के करिब चार बजे मैं निकला नई दिल्ली रेल्वे स्टेसन से और आगे दिल्ली गेट की तरफ चले लगा, कुछ दूर जाने के बाद जहाँ पर दिल्ली स्टाक एक्सचेन्ज है। उस के सामन पहुचते पहुंचते मैं थक गया। क्योंकि शरीर में भयानक दर्द और पिड़ा हो रही थी। इसलिये ठंड में वही पर बैठ गया और एकाक घंटे तक आराम किया। उसके बाद वहाँ से निकला और दिल्ली गेट को पार कर के सड़क के दूसरे तरफ सिधा बाहरी रिंग रोड के लिये आगे चल पड़ा। तभी मेरी निगाप बाई तरफ पार्क के खुले दरवाजे पर पड़ी, जो उस समय खाली था। चारों तरफ बड़ी बड़ू घास थी, मैं उस पार्क में घुस गया और वहीं गिर पड़ा। और मुझे निद आगई, मै निद से शाम को करिब 5 बज कर 30 पर उठा, और सिधा रिंग रोड को पकड़ कर पैदल ही चल पड़ा। क्योकि मेरे पास जो पैसे वगैरह थे। सब निकाल लिया था हमारे सत्रुओं ने, मैं आगें बढ़ता रहा मुझे रात बिताने के लिये एक ऐसी जगह की तलाश थी। जहाँ पर मैं अपनी रात्री को बिना किसी विध्न के बिता सकु। मैं रास्ते में कई जगह प्रयास किया लेकिन सफलता नहीं मिली, हर जगह से मुझे आगे बढ़ जाने का ही संकेत मिला। मैं निरंतर आगें ही बढ़ता रहा पुरी तरह से मैं थक करके चुर हो रहा था। मेरे कदम जबाब दे रहे थे। फिर भी मैं जबरजस्ती आगे ही आगे बढ़ रहा था। इस तरह से मैं वजिरा बाद पुल के पास पहुंच गया। रात के उस करिब बारह बज चुके थे। वजिरा बाद पुल को रात में ना जा कर, मैं उससे थोड़ा पहले ही एक

रास्ता जो दिल्ली शहर में जाता था, मोती बाग का उस रास्ते से आगें निकल पड़ा। कुछ दूर मेरे चलने पर मुझे एक कुत्तों को रहने का एक झोपड़ा पार्क में बना दिखाई दिया। जिसमें मैं चुपके से धुस गया। जिसमें बहुत गंदगी थी और मुझे बहुत भय भी लग रहा था कहीं किसी की निगाह मुझ पर ना पड़ जायें। और लोग मुझको चोर समझ कर मेरी पिटाई करने लगे। मैं अन्दर से पुरी तरह से टुट चुका था मेरी बहुत मजबुरी थी। वहाँ रात्री बिताना बहुत ही कठिन था। किसी तरह से मैंने वहाँ एक या दो घंटे विताया। फिर वहाँ से भी रात्री करिब दो तीन बजे निकल पड़ा, और वजिरा बाद पुल पर चल पड़ा चलते-चलते थक चुका था। फिर वही एक बस स्टाप पर बैठ गया और सुबह होने का इतजार करने लगा। रात जो वितने का नाम नहीं ले रही थी। फिर मुझे रात्री की अजान सुनाई दि जो सुबह भोर में बोलते है। जिससे मैं समझ गया कि सुबह होने वाली है। और फिर मैं वहाँ बस स्टाप से आगे कि तरफ चल पड़ा रास्ते में मैं एक दो जगह आराम किया। सूर्य का प्रकाश हुआ तब तक मैं लोनी बार्डर पर पहुच गया था। जहाँ पर मुझे बहुत थकान और दर्द के साथ भुख भी लग रही थी। जिसके लियें मैने एक सड़क किनारे होटल में गया, और अपनी मजबुरी को बताया और कहा कि मैं कई दिन से भुखा हूं। मुझे खाना दे दो मैं आप के यहा काम कर लुगा। इस तरह से उस होटल के मालिक ने मुझे अपने होटल में बर्तन धोने के लिये रख लिया। और बदले में भोजन देने लगा। जहाँ पर केवल सराब पिने के लिये ही अधिक लोग आते थे। इस तरह से मैं वहाँ पर करिब चालिस दिन रहा। और एक दिन वहाँ से मैं फिर पैदल ही पुरानी दिल्ली रेल्वे स्टेशन आया, और विना टिकट के ही ट्रेन में सवार हो कर मिर्जापुर के लिये चल पड़ा।

ठीक इसी प्रकार कि घटना दूबारा मेरे साथ मेरे पिता के द्वारा घटनें वाली थी। इन दिल्ली वाले लोगों के साथ मिल कर दोहाराने का प्रयाश किया गया। जिसका आभास मुझे पहले ही होगया जैसै हवां में वह दूबारा दर्द मेरी मेरे मरने का मातम भर गया है। चारों तरफ बहुत बुरी तरह से कुत्ते रोने लगे, जैसे पुरी की प्रकृती ही मुझे मारने के लिये उवली हो गयी हो। मेरे हाथ पैर काम करना बंद करने लगे। जब अपने गांव के घर के बाहर बैठ कर खाना खा रहा था। क्योंकि यह दिल्लि वाले मेरे घर पर पहुंच कर मेरे पिता को अपने साथ मिला लिया और आपस में सौदा किया मेरी हत्या करने का। जिसके साथ रामदेव का भी साथ था। जिसने हमे पुरी तरह से पागल सिद्ध करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। लेकिन मुझ पर आने वाले भयंकर संकट का आभाष मुझे पहले ही हो गया। जिसके कारण मैं वहाँ से सिधा नदी किनारे भागा अपनी जान बचाने के लिये यह सब लोगो मेरा पिछा किया। जब मुझे लगा कि यह लोग मुझे मार ही देगे और समय रात्री के समय ही सर्दी में मैं गंगा नदी में कुद पड़ा और अंधेरे में खो गया। जिससे सारे मेरे हत्यारे पिछे लौट गये।

4 संस्कृत शुभाषित

1 अल्पानामपि वस्तूनां संहतिः कार्यसाधिका । तृणैर्गुणत्वमापन्नैर् बध्यन्ते मत्तदन्तिनः ।।

छोटी- छोटी वस्तुएँ एकत्र करने से बडे काम भी हो सकते हैं। जैसे घास से बनायी हुई डोरी से मत्त हाथी बांधा जा सकता है।

सुभाषित 2 शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे । साधवो न हि सर्वत्र चन्दनं न वने वने ।। – हितोपदेश

हर एक पर्वत पर माणिक नहीं होते, हर एक हाथी में गंडस्थल में मोती नहीं होते साधु सर्वत्र नहीं होते , हर एक वनमें चंदन नहीं होता । उसी प्रकार दुनिया में भली चीजें प्रचुर मात्रा में सभी जगह नहीं मिलती ।

एकवर्णं यथा दुग्धं भिन्नवर्णासु धेनुषु । तथैव धर्मवैचित्र्यं तत्त्वमेकं परं स्मृतम् ॥

जिस प्रकार विविध रंग रूप की गायें एक ही रंग का (सफेद) दूध देती है, उसी प्रकार विविध धर्मपंथ एक ही तत्त्व की सीख देते है।

सर्वं परवशं दु:खं सर्वम् आत्मवशं सुखम् । एतद् विद्यात् समासेन लक्षणं सुख दु:खयो: ॥

जो चीजें अपने अधिकार में नही है वह सब दु:ख है तथा जो चीज अपने अधिकार में है वह सब सुख है ।

संक्षेप में सुख और दु:ख के यह लक्षण है ।

अलसस्य कुतो विद्या अविद्यस्य कुतो धनम् । अधनस्य कुतो मित्रम् अमित्रस्य कुतो सुखम् ॥

आलसी मनुष्य को ज्ञान कैसे प्राप्त होगा ? यदि ज्ञान नहीं तो धन नही मिलेगा । यदि धन नही है तो अपना मित्र कौन बनेगा ? और मित्र नही तो सुख का अनुभव कैसे मिलेगा

आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम् । सर्व देव नमस्कार: केशवं प्रति गच्छति ॥

जिस प्रकार आकाश से गिरा जल विविध नदीयों के माध्यम से अंतिमत: सागर से जा मिलता है उसी प्रकार सभी देवताओं को किया हुवा नमन एक ही परमेश्वर को प्राप्त होता है ।

नीर क्षीर विवेके हंस आलस्यम् त्वम् एव तनुषे चेत् । विश्वस्मिन् अधुना अन्य: कुलव्रतं पालयिष्यति क: ॥

अरे हंस यदि तुम ही पानी तथा दूध भिन्न करना छोड दोगे तो दूसरा कौन तुम्हारा यह कुलव्रत का पालन कर सकता है ? यदि बुद्धि वान् तथा कुशल मनुष्य ही अपना कर्तव्य करना छोड दे तो दूसरा कौन वह काम कर सकता है ?

पापं प्रज्ञा नाशयति क्रियमाणं पुन: पुन: । नष्टप्रज्ञ: पापमेव नित्यमारभते नर: ॥

बार बार पाप करने से मनुष्य की विवेक बुद्धि नष्ट होती है और जिसकी विवेक बुद्धि नष्ट हो चुकी हो , ऐसी व्यक्ति हमेशा पापही करती है ।

पुण्यं प्रज्ञा वर्धयति क्रियमाणं पुन:पुन: । वृद्ध प्रज्ञ: पुण्यमेव नित्यम् आरभते नर: ॥

बार–बार पुण्य करने से मनुष्य की विवेक–बुद्धि बढती है और जिसकी विवेक–बुद्धि बढ़ती रहती हो , ऐसा व्यक्ति हमेशा पुण्य ही करती है ।

अनेक शास्त्रं बहु वेदितव्यम् अल्पश्च कालो बहवश्च विघ्नाः । यत् सारभूतं तदुपासितव्यं हंसो यथा क्षीरमिवाम्भुमध्यात् ।।

पढने के लिए बहुत शास्त्र हैं और ज्ञान अपरिमित है। अपने पास समय की कमी है और बाधाएं बहुत है। जैसे हंस पानी में से दूध निकाल लेता है उसी तरह उन शास्त्रों का सार समझ लेना चाहिए।

कलहान्तनि हम्र्याणि कुवाक्यानां च सौ) दम् कुराजान्तानि राष्ट्राणि कुकर्मांन्तम् यशो नृणाम्

झगडों से परिवार टूट जाते है। गलत शब्दप्रयोग करनेसे दोस्त टूटते है। बुरे शासकोंके कारण राष्ट्रका नाश होता है। बुरे काम करनेसे यश दूर भागता है।

दुर्लभं त्रयमेवैतत् देवानुग्रहहेतुकम् । मनुष्यत्वं मुमुक्षुत्वं महापुरूषसंश्रयः ॥

मनुष्य जन्म, मुक्ति की इच्छा तथा महापुरूषोंका सहवास यह तीन चीजें परमेश्वर की कृपा पर निर्भर रहते है ।

सुखार्थी त्यजते विद्यां विद्यार्थी त्यजते सुखम् । सुखार्थिनः कुतो विद्या कुतो विद्यार्थिनः सुखम् ॥

जो व्यक्ती सुख के पिछे भागता है उसे ज्ञान नही मिलेगा । तथा जिसे ज्ञान प्रप्त करना है वह व्यक्ती सुख का त्याग करता है ।

सुख के पिछे भागनेवाले को विद्या कैसे प्राप्त होगी ? तथा जिसको विद्या प्रप्त करनी है उसे सुख कैसे मिलेगा?

दिवसेनैव तत् कुर्याद् येन रात्रौ सुखं वसेत् । यावज्जीवं च तत्कुर्याद् येन प्रेत्य सुखं वसेत् ॥

दिनभर ऐसा काम करो जिससे रातमें चैनकी नींद आ सके ।

वैसेही जीवनभर ऐसा काम करो जिससे मृत्यूपश्चात सुख मिले ह्यअर्थात सद्गती प्राप्त हो)

उपार्जितानां वित्तानां त्याग एव हि रक्षणम् तडागोदरसंस्थानां परीवाह इवाम्भसाम्

कमाए हुए धन का त्याग करने से ही उसका रक्षण होता है। जैसे तालब का पानी बहते रहने से साफ रहता है।

खलः सर्षपमात्राणि पराच्छिद्राणि पश्यति । आत्मनो बिल्वमात्राणि पश्यन्नपि न पश्यति ॥

दुष्ट मनुष्य को दुसरे के भीतर के राइ ईतने भी दोष दिखाई देते है परन्तू अपने अंदर के बिल्वपत्र जैसे बडे दोष नही दिखाई पड़ते ।

दानं भोगो नाशः तिस्त्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य । यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति ॥

धन खर्च होने के तीन मार्ग है ।

दान,उपभोग तथा नाश ।

जो व्यक्ति दान नही करता तथा उसका उपभोगभी नही लेता उसका धन नाश पाता है ।

यादृशैः सन्निविशते यादृशांश्चोपसेवते । यादृगिच्छेच्च भवितुं तादृग्भवति पूरूषः ॥

मनुष्य , जिस प्रकारके लोगोंके साथ रहता है , जिस प्रकारके लोगोंकी सेवा करता है , जिनके जैसा बनने की इच्छा करता है , वैसा वह होता है ।

गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणो, बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः । पिको वसन्तस्य गुणं न वायसः, करी च सिंहस्य बलं न मूषकः ॥

गुणी पुरुष ही दुसरे के गुण पहचानता है, गुणहीन पुरुष नही। बलवान पुरुषही दुसरे का बल जानता है, बलहीन नही। वसन्त ऋतु आए तो उसे कोयल पहचानती है, कौआ नही। शेर के बल को हाथी पहचानता है, चुहा नही।

गुणवान् वा परजनः स्वजनो निर्गुणोपि वा निर्गुणः स्वजनः श्रेयान् यः परः पर एव च

गुणवान शत्रु से भी गुणहीन मित्र अच्छा। शत्रु तो आखिर शत्रु है।

पदाहतं सदुत्थाय मूर्धानमधिरोहति । स्वस्थादेवाबमानेपि देहिनस्वद्वरं रजः ॥

जो पैरों से कुचलने पर भी उपर उठता है ऐसा मिट्टी का कण अपमान किए जाने पर भी चुप बैठनेवाले व्यक्ति से श्रेष्ठ है ।

सा भार्या या प्रियं बूरते स पुत्रो यत्र निवृतिः । तन्मित्रं यत्र विश्वासः स देशो यत्र जीव्यते ॥

जो मिठी वाणी में बोले वही अच्छी पत्नी है, जिससे सुख तथा समाधान प्राप्त होता है वही वास्तवीक में पुत्र है, जिस पर हम बीना झीझके संपूर्ण विश्वास कर सकते है वही अपना सच्चा मित्र है तथा जहां पर हम काम करके अपना पेट भर सकते है वही अपना देश है ।

जरा रूपं हरति, धैर्यमाशा, मृत्युःप्राणान् , धर्मचर्यामसूया । क्रोधः श्रियं , शीलमनार्यसेवा , ह्रियं कामः , सर्वमेवाभिमानः ॥

वृद्धत्व से रूप का हरण होता है , आशा से तृष्णा से धैर्यका , मृत्यु से प्राण का हरण होता है। मत्सर से धर्माचरण का , क्रोध से सम्पत्ती का तथा दुष्टों की सेवा करनेसे शील का नाश होता है। कामवासना से लज्जा का तथा अभिमान से सभी अच्छी चीजों का अन्त होता है ।

विरला जानन्ति गुणान् विरलाः कुर्वन्ति निर्धने स्नेहम् । विरलाः परकार्यरताः परदुःखेनापि दुःखिता विरलाः ॥

दुसरोंके गुण पहचानने वाले थोड़े ही है । निर्धन से नाता रखने वाले भी थोड़े है । दूसरों के काम मे मग्न होने वाले थोडें है। तथा दूसरों का दुःख देखकर दुःखी होने वाले भी थोड़े है ।

आरोग्यं विद्वत्ता सज्जनमैत्री महाकुले जन्म । स्वाधीनता च पुंसां महदैश्वर्यं विनाप्यर्थेः ॥

आरोग्य, विद्वत्ता, सज्जनों से मैत्री, श्रेष्ठ कुल में जन्म, दूसरों के उपर निर्भर न होना यह सब धन नही होते हुए भी पुरूषों का ऐश्वर्य है ।

कालो वा कारणं राज्ञो राजा वा कालकारणम् । इति ते संशयो मा भूत् राजा कालस्य कारणं।.

काल राजा का कारण है कि राजा काल का इसमे थोड़ी भी दुविधा नही कि राजा ही काल का कारण है।

आयुषः क्षण एकोपि सर्वरत्नैर्न लभ्यते । नीयते तद् वृथा येन प्रामादः सुमहानहो ॥

सब रत्न देने पर भी जीवन का एक क्षण भी वापास नही मिलता । ऐसे जीवन के क्षण जो निर्थक ही खर्च कर रहे है वे कितनी बडी गलती कर रहे है।

योजनानां सहस्रं तु शनैर्गच्छेत् पिपीलिका । आगच्छन् वैनतेयोपि पदमेकं न गच्छति ॥

यदि चिटी चल पड़ी तो धीरे धीरे वह एक हजार योजनाएं भी चल सकती है । परन्तु यदि गरूड जगह से नही हीला तो वह एक पग भी आगे नही बढ सकता ।

कन्या वरयते रुपं माता वित्तं पिता श्रुतम्। बान्धवाः कुलमिच्छन्ति मिष्टान्नमितरेजनाः ।।

विवाह के समय कन्या सुन्दर पती चाहती है। उसकी माता जी सधन जमाइ चाहती है। उसके पिताजी ज्ञानी जमाइ चाहते है। तथा उसके बन्धु अच्छे परिवार से नाता जोडना चाहते है। परन्तु बाकी सभी लोग केवल अच्छा खाना चाहते है।

अर्था भवन्ति गच्छन्ति लभ्यते च पुनः पुन।ः पुनः कदापि नायाति गतं तु नवयौवनम्।।

घन मिलता है, नष्ट होता है। (नष्ट होने के बाद) फिरसे मिलता है। परन्तु जवानी एक बार निकल जाए तो कभी वापस नहीं आती।

आशा नाम मनुष्याणां काचिदाश्चर्यशृङखला । यया बद्धाः प्राधावन्ति मुक्तास्तिष्ठन्ति पङ्गुवत् ॥

आशा नामक एक विचित्र और आश्चर्यकारक शृंखला है ।

इससे जो बंधे हुए है वो इधर उधर भागते रहते है तथा इससे जो मुक्त है वो पंगु की तरह शांत चित्त से एक ही सूक्ति जगह पर खड़े रहते है ।

शास्त्राण्यधीत्यापि भवन्ति मूर्खा यस्तु क्रियावान् पुरूषः स विद्वान् । सुचिन्तितं चौषधमातुराणां न नाममात्रेण करोत्यरोगम् ॥

शास्त्रों का अध्ययन करने के बाद भी लोग मूर्ख रहते है । परन्तु जो कृतीशील है वही सही अर्थ से विद्वान है ।

किसी रोगी के प्रति केवल अच्छी भावना से निश्चित किया गया औषध रोगी को ठिक नही कर सकता । वह औषध नियमानुसार लेने पर ही वह रोगी ठिक हो सकता है ।

वृत्तं यत्नेन संरक्ष्येद् वित्तमेति च याति च । अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः ॥

सदाचार की मनुष्य को प्रयन्तपूर्व रक्षा करनी चाहिए , वित्त तो आता जाता रहता है ।

धन से क्षीण मनुष्य वस्तुतः क्षीण नही , बल्कि सद्वर्तनहीन मनुष्य हीन है ।

परस्य पीडया लब्धं धर्मस्योल्लंघनेन च आत्मावमानसंप्राप्तं न धनं तत् सुखाय वै।।

दूसरों को दु:ख देकर , धर्मका उल्लंघन कर के या खुद का अपमान सहकर मिले हुए धन से सुख नही प्राप्त होती है।

जानामि धर्मं न च मे प्रावृत्तिः । जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः ॥

दुर्योधन कहता है "ऐसा नही की धर्म तथा अधर्म क्या है, यह मैं नही जानता था ।

परन्तू ऐसा होने पर भी धर्म के मार्ग पर चलना यह मेरी प्रावृत्ती नही बन पायी और अधर्म के मार्ग से मैं निवृत्त भी नही हो सका ।

" अकृत्वा परसन्तापं अगत्वा खलसंसदं अनुत्सृज्य सतांवर्तमा यदल्पमपि तद्बहु

दूसरोंको दु:ख दिये बिना ; विकृती के साथ अपाना संबंध बनाए बिना ; अच्छों के साथ अपने सम्बंध तोडे बिना ; जो भी थोडा कुछ हम धर्म के मार्ग पर चलेंगे उतना पर्याप्त है ।

परोपदेशे पांडित्यं सर्वेषां सुकरं नृणाम् धर्मे स्वीयमनुष्ठानं कस्यचित् सुमहात्मनः

दूसरोंको उपदेश देकर अपना पांडित्य दिखाना बहौत सरल है। परन्तु केवल महान व्यक्ति ही उस तरह से (धर्मानुसार) अपना बर्ताव रख सकता है।

अमित्रो न विमोक्तव्यः कृपणं वणपि ब्रावन्। कृपा न तस्मिन् कर्तव्या हन्यादेवापकारिणाम्।।

शत्रु अगर क्षमायाचना करे, तो भी उसे क्षमा नही करनी चाहिये। वह अपने जीवित को हानि पहुचा सकता है यह सोच के उसको समाप्त करना चाहिये।

नेह चात्यन्तसंवासः कर्हिचित् केनचित् सह । राजन् स्वेनापि देहेन किमु जायात्मजादिभिः ॥

हे राजा धृतराष्ट्र इस जगत में कभी भी , किसी का किसी से चिरंतन संबंध नहीं होता ।

अपना खुद के देह से तक नहीं , तो पत्नी और पुत्र की बात तो दूर ॥

इंद्रियाणि पराण्याहुः इंद्रियेभ्यः परं मनः । मनसस्तु परा बुद्धिः यो बुद्धेः परतस्तु सः ॥

इंद्रियों के परे मन है मन के परे बुद्धि है और बुद्धि के भी परे आत्मा है ।

वहेदमित्रं स्कन्धेन यावत्कालविपर्ययः अथैवमागते काले भिन्द्याद् घटमिवाश्मनि

जब काल विपरीत हो, तब शत्रु को भी कन्धों पे उठाना चाहिये। अनुकूल काल आने पर उसे जैसे घट पत्थर पे फोड़े जाता है, वैसे नष्ट करना चाहिये।

उष्ट्राणां च विवाहेषु गीतं गायन्ति गर्दभाः परस्परं प्रशंसन्ति अहो रुपमहो ध्वनिः

उंटो के विवाह में गधे गाना गा रहे हैं। दोनो एक दूसरे की प्रशंसा कर रहे हैं वाह क्या रुप है (उंट का), वाह क्या आवाज है (गधे की)। वास्तव मे देखा जाए तो उंटों मे सौंदर्य के कोई लक्षण नही होते, न की गधों मे अच्छी आवाज के, परन्तु कुछ लोगों ने कभी उत्तम क्या है? यही देखा नही होता। ऐसे लोग इस तरह से जो प्रशंसा करने योग्य नही है, उसकी प्रशंसा करते हैं।

आपूर्यमाणमचलप्रातिष्ठं समुद्रमापः प्राविशन्ति यद्वत् । तद्वत् कामा यं प्राविशन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ॥

जो व्यक्ती समय समय पर मन में उत्पन्न हुइ आशाओं से अविचलित रहता है, जैसे अनेक नदीयां सागर में मिलने पर भी सागर का जल नही बढता, वह शांत ही रहता है, ऐसे ही व्यक्ती सुखी हो सकते है ।

मैत्री करूणा मुदितोपेक्षाणां। सुख दु:ख पुण्यापुण्य विषयाणां। भावनातश्चित्तप्रासादनम्। पातञ्जल योग 1।33

आनंदमयता, दूसरे का दु:ख देखकर मन में करूणा, दूसरे का पुण्य तथा अच्छे कर्म समाज सेवा आदि देखकर आनंद का भाव, तथा किसी ने पाप कर्म किया तो मन में उपेक्षा का भाव 'किया होगा छोडो' आदि प्रातिक्रियाएँ उत्पन्न होनी चाहिए।

न प्रहृष्यति सन्माने नापमाने च कुप्यति । न क्रुद्धः परूषं ब्रूयात् स वै साधूत्तमः स्मृतः ॥

जो सम्मान से गर्वित नहीं होते , अपमान से क्रोधित नहीं होते क्रोधित होकर भी जो कठोर नहीं बोलते, वे ही श्रेष्ठ साधु है ।

हर्षस्थान सहस्राणि भयस्थान शतानि च । दिवसे दिवसे मूढं आविशन्ति न पंडितम् ॥

मूर्ख मनुष्य के लिए प्राति दिन हर्ष के सौ कारण होते है तथा दु:ख के लिए सहस्र कारण। परन्तु पंडितों के मन का संतुलन ऐसे छोटे कारणों से नही बिगड़ता।

एका केवलमर्थसाधनविधौ सेना शतेभ्योधिका नन्दोन्मूलन दृष्टवीर्यमहिमा बुद्धिस्तु मा गान्मम ॥

जिन्हे छोडकर जाना था वे चले गए। जो छोडं कर जाना चाहते है वे भी चले जाए कोइ चिंता की बात नही। परन्तू इस तृप्ती को प्राप्त करने में जो सैंकडो सेनाओं से भी अधिक बलवान है। और नन्द साम्राज्य के निर्मूलन के कार्य में जिसके प्राताप को दुनीया ने देखा है वह केवल मेरी बुद्धि मुझे छोड़कर न जाए।

दीर्घा वै जाग्रतो रात्रिः दीर्घं श्रान्तस्य योजनम् । दीर्घो बालानां संसारः सद्धर्मम् अविजानताम् ॥

रातभर जागने वाले को रात बहुत लंबी मालूम होती है । जो चलकर थका है, , उसे एक योजन हजार मील अंतर भी दूर लगता है । सद्धर्म का जिन्हे ज्ञान नही है उन्हे जिन्दगी दीर्घ लगती है ।

देहीति वचनद्वारा देहस्था पञ्च देवताः । तत्क्षणादेव लीयन्ते धीह्रीश्रीकान्त्रिकीर्तयः ॥

'दे' इस शब्द के साथ, याचना करने से देह में स्थित पांच देवता बुद्धी, लज्जा, लक्ष्मी, कान्ति, और कीर्ति उसी क्षण देह छोड़कर जाती है ।

यद्यत् परवशं कर्मं तत् तद् यत्नेन वर्जयेत्। यद्यदात्मवशं तु स्यात् तत् तत् सेवेत यत्नत:।।

जिस काम मैं दुसरों का सहाय्य लेना पडे, ऐसे काम को टालो। (परन्तु) जिसमे दुसरों का सहाय्य न लेना पड़े, ऐसे काम शीघ्राता से पूरे करो।

सर्वं परवशं दु:खं सर्वमात्मवशं सुखम्। एतद्विद्यात् समासेन लक्षणं सुखदु:खयो:।।

दूसरों पे निर्भर रहना सर्वथा दुःख का कारण होता है। आत्मनिर्भर होना सर्वथा सुखका कारण होता है। सारांश, सुख–दु:ख के ये कारण ध्यान मे रखें।

यस्य भार्या गृहे नास्ति साध्वी च प्रियवादिनी । अरण्यं तेन गन्तव्यं यथाऽरण्यं तथा गृहम् ॥

जिस घर में गृहिणी साध्वी प्रावृत्ती की न हो तथा मृदु भाषी न हो ऐसे घर के गृहस्त ने घर छोड कर वन में जाना चाहिए क्यों की उसके घर में तथा वन में कोइ अंतर नही है ।

अकृत्यं नैव कर्तव्य प्राणत्यागेऽपि संस्थिते । न च कृत्यं परित्याज्यम् एष धर्मः सनातनः ॥

जो कार्य करने योग्य नही है अच्छा न होने के कारण वह प्राण देकर भी नही करना चाहिए ।

तथा जो काम करना है अपना कर्तव्य होने के कारण वह काम प्राण देना पड़े तो भी करना नही छोड़ना चाहिए ।

ध्यायतो विषयान् पुंसः संगस्तेषूपजायते । संगात् संजायते कामः कामात् क्रोधोऽभिजायते ॥

विषयों का ध्यान करने से उनके प्रति आसक्ति हो जाती है यह आसक्ति ही कामना को जन्म देती है और कामना ही क्रोध को जन्म देती है ।

नात्यन्त गुणवत् किंचित् न चाप्यत्यन्तनिर्गुणम्। उभयं सर्वकार्येषु दृष्यते साध्वसाधु वा।।

ऐसा कोई भी कार्य नही है जो सर्वथा अच्छा है। ऐसा कोई भी कार्य नही जो सर्वथा बुरा है। अच्छे और बुरे गुण हर एक कार्य मे होते ही है।

एकतः क्रतवः सर्वे सहस्त्रवरदक्षिणा । अन्यतो रोगभीतानां प्राणिनां प्राणरक्षणम् ॥

महाभारत एक ओर विधीपूर्वक सब को अच्छी दक्षिणा दे कर किया गया यज्ञ कर्म तथा दूसरी ओर दुःखी और रोग से पिडीत मनुष्य की सेवा करना यह दोनों भी कर्म उतने ही पुण्यप्रद है ।

मातृवत्परदारेषु परद्रव्येषु लोष्टवत् । आत्मवत्सर्वभूतेषु यः पश्यति स पश्यति ॥

जो व्यक्ति धार्मिक प्रावृत्ती का है वो परस्त्री को माता के समान पर द्रव्य को माटी समान तथा अन्य सभी प्राणि मात्रों को स्वयं के समान मानता है ।

यः स्वभावो हि यस्यास्ति स नित्यं दुरतिक्रमः। श्वा यदि क्रियते राजा तत् किं नाश्नात्युपानहम्।।

जिसक जो स्वभाव होता है, वह हमेशा वैसा ही रहता है। कुत्ते को अगर राजा भी बनाया जाए, तो वह अपनी जूतें चबाने की आदत नही भूलता।

नात्युच्चशिखरो मेरुर्नातिनीचं रसातलम्। व्यवसायद्वितीयानां नात्यपारो महोदधिः।।

जो मनुष्य उद्योग का सहाय्य लेता है (अपने स्वयं के प्रयत्नों पे निर्भर होता है), उसको पर्बत की चोटी उंची नही, पृथ्वी का तल नीचा नही, और महासागर अनुल्लंघ्य नही।

दूर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययाऽलङ्कृतोऽपि सन् । मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयङ्करः ॥

दूर्जन ,चाहे वह विद्या से विभूषित क्यू न हो? , उसे दूर रखना चाहिए । मणि से आभूषित साँप, क्या भयानक नहीं होता है।

सुखमापतितं सेव्यं दुःखमापतितं तथा । चक्रवत् परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च ॥

जीवन में आनेवाले सुख का आनंद ले, , तथा दु:ख का भी स्वीकार करें । सुख और दु:ख तो एक के बाद एक चक्रवत आते रहते है ॥

अज्ञेभ्यो ग्रन्थिन: श्रेष्ठा: ग्रन्थिभ्यो धारिणो वरा: । धारिभ्यो ज्ञानिन: श्रेष्ठा: ज्ञानिभ्यो व्यसायिन: ॥

निरक्षर लोगोंसे ग्रंथ पढ़ने वाले श्रेष्ठ । उनसे भी अधिक ग्रंथ समझने वाले श्रेष्ठ ।

ग्रंथ समझने वालों से भी अधिक आत्मज्ञानी श्रेष्ठ तथा उनसे भी अधिक ग्रंथ से प्राप्त ज्ञान को उपयोग में लाने वाले श्रेष्ठ है।

उभाभ्यामेव पक्षाभ्यां शथा खे पक्षिणां गति: । तथैव ज्ञानकर्मभ्यां जायते परमं पदम् ॥

जिस तरह दो पंखो के आधार से पक्षी आकाश में उंचा उड सकता है उसी तरह ज्ञान तथा कर्म से मनुष्य परब्रह्म को प्राप्त कर सकता है ।

मनसा चिन्तितंकर्मं वचसा न प्रकाशयेत् । अन्यलक्षितकार्यस्य यत: सिद्धिर्न जायते ॥

मनमे कि हुई कार्य की योजना दूसरों को न बताये । दूसरें को उसकी जानकारी होने से कार्य सफल नही होता ।

गतेर्भंग: स्वरो हीनो गात्रे स्वेदो महद्भयम् । मरणे यानि चि*नानि तानि चि*नानि याचके ।।

चलते समय संतुलन खोना, बोलते समय आवाज न निकलना, पसीना छूटना और बहुत भयभीत होना यह मरने वाले आदमी के लक्षण याचक के पास भी दिखते है ।

शुश्रूषा श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा । उहापोहोर्थ विज्ञानं तत्वज्ञानं च धीगुणा: ॥

श्रवण करने की इच्छा, प्रत्यक्ष में श्रवण करना, ग्रहण करना, स्मरण में रखना, तर्कवितर्क, सिद्धान्त निश्चय, अर्थज्ञान तथा तत्वज्ञान ये बुद्धी के आठ अंग है ।

द्वयक्षरस् तु भवेत् मृत्युर् , त्रयक्षरमं ब्राह्म शाश्वतम् । 'मम' इति च भवेत् मृत्युर, 'नमम' इति च शाश्वतम् ॥

महाभारत शांतिपर्व मृत्यु यह दो अक्षरों का शब्द है तथा ब्राह्म जो शाश्वत है वह तीन अक्षरों का है ।

'मम' यह भी मृत्यु के समान ही दो अक्षरों का शब्द है तथा 'नमम' यह शाश्वत ब्राह्म की तरह तीन अक्षरों का शब्द है ।

रविरपि न दहति तादृग् यादृक् संदहति वालुकानिकर:। अन्यस्माल्लब्धपदो नीच: प्रायेण दु:सहो भवति।।

सुर्यप्रकाश से भी तपे हुए रेत का दाह अधिक होती है। (उसी तरह) दूसरों के सहाय्य से बड़ा हुआ नीच मनुष्य ज्यादा उपद्रव देता है।

क्वचिद्भूमौ शय्या क्वचिदपि पर्यङ्कशयनं। क्वचिच्छाकाहारी क्वचिदपि च शाल्योदनरुचि: । क्वचित्कन्थाधारी क्वचिदपि च दिव्याम्बरधरो। मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दु:खं न च सुखम्

कभी धरती पे सोना कभी पलंग पे। कभी सब्जी खाना कभी रोटी–चावल। कभी फटे हुए कपडे पहनना कभी बहौत कीमती कपडे पहनना। जो व्यक्ति अपने कार्य मे सर्वथा मग्न हो, उन्हे ऐसी बाहरी सुख दु:खो से कोई मतलब नही होता।

रामो राजमणि: सदा विजयते रामं रमेशं भजे रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नम: रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोस्म्यहम् रामे चित्तलय: सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर ॥

राजशिरोमणि,,सदा विजयी होनेवाले रमापति राम की मै प्रार्थना करता हूँ । राक्षसों का नि:पात करनेवाले राम को नमस्कार ।

राम के अलावा कुछ अधिक महत्त्वपूर्ण नही , मै राम का दास हूँ ।मेरा चित्त राममें लीन है , हे राम , मेरा उद्धार करो ॥

बुधकौशिक ऋषी विरचित रामरक्षास्तोत्र मे यह श्लोक है । इस श्लोक की विशेषता ये है कि , राम शब्द की सभी आठ विभक्तियों का इसमें प्रयोग किया है ।

मनोजवं मारूततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् । वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥

राम रक्षा में से और एक श्लोक। मन और वायु के समान गतिमान , इन्द्रियों को जितने वाले जितेन्द्रिय , बुद्धिमानों में वरिष्ठ , वानरों के मुख्य तथा श्रीराम के दूत अर्थात् , हनुमान को मैं शरण जाता हूं ।

आचाराल्लभते ह्ययु: आचारादीप्सिता: प्राजा: । आचाराद्धनमक्षय्यम् आचारो हन्त्यलक्षणम् ॥

अच्छे व्यवहार से दीर्घ आयु, श्रेष्ठ सन्तती, चिर समृद्धी प्राप्त होती है तथा अपने दोषों का भी नाष होता है ।

शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् । यत्रैतास्तु न शोचन्ति ह्यप्रासीदन्ति) वर्धते तद्धि सर्वदा ॥

जिस परिवार में स्त्री, माता, पत्नी, बहन, पुत्री) दु:खी रहती है उस परिवार का नाश होता है तथा जिस परिवार में वो सुखी रहती है वह परिवार समृद्ध रहता है ।

अप्रकटीकृतशक्ति: शक्तोपि जनस्तिरस्क्रियां। लभते निवसन्नन्तर्दारुणि लङ्घ्यो विनर्न तु ज्वलित:।।

बलवान पुरुष का बल जब तक वह नही दिखाता है, उसके बल की उपेक्षा होती है। लकड़ि से कोई नही डरता, मगर वही लकड़ि जब जलने लगती है, तब लोग उससे डरते है।

विक्लवो वीर्यहीनो य: स दैवमनुवर्तते वीरा:। संभावितात्मानो न दैवं पर्युपासते।।

जिसे अपने आप पे भरोसा नही है ऐसा बलहीन पुरुष नसीब के भरोसे रहता है। बलशाली और स्वाभिमानी पुरुष नसीब का खयाल नहीं करता।

यथा वायुं समाश्रित्य वर्तन्ते सर्वजन्तव: । तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्तन्ते सर्व आश्रमा: ॥

जिस प्राकार इस जगत में सभी का जीवन वायू पर निर्भर है उसी प्राकार मनुष्य जीवन के सभी आश्रम गृहस्ताश्रम पर निर्भर है ।

नारीकेलसमाकारा श्यन्तेपि हि सज्न्ना: । अन्ये बदरिकाकाश बहिरेव मनोहर: ॥

सज्जन लोग नारियल के समान होते है। परन्तू दुर्जन लोग बेर के समान होते हैर केवल बाहर से मनोहर दिखते है पर अन्दर से तो यातनात्मक कठोर होते है ।

वृत्तं यत्नेन संरक्षेद् वित्तमायाति याति च। अक्षीणो वित्तत: क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हत:।।

मनुष्य ने अपने शील का संरक्षण प्रयत्न पुर्वक करना चाहिये (उसके धन का नही)। धन कमाया जा सकता है और गवाया भी जा सकता है। धनवान परन्तु शील हीन मनुष्य मृत के समान है।

तर्का प्रतिष्ठ: श्रुतयो विभिन्ना, नैको मुनिर्यस्य वच: प्रमाणम् ,धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां, महाजनो येन गत: स पन्था:

तर्क बहौत चंचल होता है। हर श्रुति अलग आज्ञा देती है। हर ऋषी का मत भिन्न होता है, और कोइ भी एक ऋषी दूसरे से ज्यादा योग्य नही कह सकते। (ऐसे मे) महान व्यक्ती जिस पन्थ पे चलते है, वही सही रास्ता है।

सुखं शेते सत्यवक्ता सुखं शेते मितव्ययी । हितभुक् मितभुक् चैव तथैव विजितेन्द्रिय: ॥

सत्य बोलने वाला , मर्यादित खर्चा करने वाला , हितकारक पदार्थ जरूरी प्रमाण मे खाने वाला , तथा जिसने इन्द्रियों पर विजय पाया है , वह चैन की नींद सोता है ।

परित्यजेदर्थकामौ यौ स्यातां धर्मवर्जितौ । धर्मं चाप्यसुखोदर्कं लोकनिकृष्टमेव च ॥

मनु जो संपत्ती तथा मन की अभिलाषा धर्म के विपरित है उसका त्याग करना चाहिए ।

इतना ही नही तो उस धर्म का भी त्याग करना अनुचित नही होगा जो धर्म भविष्य में संकट उत्पन्न कर सकता है तथा जो किसी समाज के प्राति प्रातिकुल सिद्ध हो सकता है ।

श्रद्धाभक्तिसमायुक्ता नान्यकार्येषु लालसा: । वाग्यता: शुचयश्चैव श्रोतार: पुण्यशालिन: ॥

योग्य श्रोता वही है जिन के पास श्रद्धा तथा भक्ति है, जिनका हेतू केवल ज्ञान प्राप्त करना है और कुछ भी नही, तथा जिनका अपने वाणी पर नियंत्रण है और जो मन से शुद्ध है ।

भेदे गणा: विनश्येयु: भिन्नास्तु सुजया: परै:। तस्मात् संघातयोगेन प्रयतेरन् गणा: ।।

सदा गणराज्यमे अगर एकता न हो तो वह नष्ट हो जाता है, क्योंकि एकता न होने पर शत्रु को उसे नष्ट करने मे आसानी होती है। इसिलिए गणराज्य हमेशा एक रहना चाहिये।

परवाच्येषु निपुण: सर्वो भवति सर्वदा। आत्मवाच्यं न जानीते जानन्नपि च मुह्यति।।

हर एक मनुष्य दूसरे के दोष दिखाने में प्रविण होता है। अपने खुदके दोष या तो उसे नजर नही आते, या फिर वह उस दोषों को अनदेखी करता है।

गौरवं प्राप्यते दानात् न तु वित्तस्य संचयात् । स्थिति: उच्चै: पयोदानां पयोधीनां अध: स्थिति: ॥

दानसे गौरव प्राप्त होता है ,वित्तके संचयसे नहीं । जल देनेवाले बादलों का स्थान उच्च है , बल्कि जल का समुच्चय करने वाले सागर का स्थान नीचे है ।

न भूतपूर्व न कदापि वार्ता हेम्न: कुरङ्ग: न कदापि दृष्ट: । तथापि तृष्णा रघुनन्दनस्य विनाशकाले विपरीतबुद्धि: ॥

न पहले कभी सुवर्णमृग के बारे में सुना ,न कभी देखा फिरभी रघुनन्दन राम को लोभ हुआ ।

सचमुच , विनाशकाले विपरीतबुद्धी ।

नारून्तुदः स्यादार्तोपि न परद्रोहकर्मधीः । ययास्योद्विजते वाचा नालोक्यां तामुदीरयेत् ॥

दूसरों से दुःख मिलने पर भी वह शांत रहे , विचार से या कृती से भी वह दूसरों को दुःख न दे , उस के मुख से ऐसी वाणी न निकले जिससे दूसरे दुःखी हो , सारांश में वह ऐसा कोइ काम न करे जिससे की वो स्वर्ग से वंचित हो ।

कर्पूरधूलिरचितालवालः कस्तूरिकापंकनिमग्ननालः,। गंगाजलैः सिक्तसमूलवालः स्वीयं गुणं मुञ्चति किं पलाण्डुः।।

प्याज के पौधे के लिए आप कपूर कि क्यारी बनाओ, कस्तूरि का उपयोग म्रिग की जगह करो, अथवा उसके जड़पे गंगाजल डालो वह अपनी दुर्गंध नही छोडेगा । मनुष्य का स्वभाव बदलना बहुत कठिन है ।

जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः। स हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च।।

जिस तरह बुन्द बुन्द पानी से घड़ा भर जाता है, उसी तरह विद्या, धर्म, और धन का संचय होता है। सारांश, छोटे मात्रा मे होने पर भी इन तिनोंपे दुर्लक्ष नही करना चाहिये।

सेवकः स्वामिनं द्वेष्टि कृपणं परुषाक्षरम् आत्मानं किं स न द्वेष्टि सेव्यासेव्यं न वेत्ति यः

अगर मालिक कंजुस हो, और कठोर बोलने वाला हो, तो सेवक उसका द्वेश करता है। किसकी सेवा करनी चाहिये किसकी नही ये जिसे नही समझता , वह अपने आप का द्वेश क्यों नही करता? खुदको जो कष्ट होते है उसके लिए बाह्य कारण ढुंडना यह मनुष्य स्वभाव है। अपने उपर आने वाले आपत्ति का कारण ज्दातर अपने आप मे ही ढुंढा जा सकता है।

ऐक्यं बलं समाजस्य तदभावे स दुर्बलः तस्मात ऐक्यं प्रशंसन्ति दृढं राष्ट्र हितैषिणः

एकता समाज का बल है , एकता हीन समाज दुर्बल है। इसलिए , राष्ट्रहित सोचने वाले एकता को बढ़ावा देते है ।

का त्वं बाले कान्चनमाला कस्याः पुत्री कनकलतायाः ॥ हस्ते किं ते तालीपत्रं का वा रेखा क ख ग घ ॥

बाला , तुम कौन हो ऋ कान्चनमाला किनकी पुत्री ? कनक लता कि हाथ में क्या है ? तालीपत्र क्या लिखा है ? क ख ग घ

अप्यब्धिपानान्महतः सुमेरून्मूलनादपि । अपि वहन्यशनात् साधो विषमश्चित्तनिग्रहः ॥

अपने स्वयं के मन का स्वामी होना यह संपूर्ण सागर के जल को पिना, मेरू पर्वत को उखाड़ना या फिर अग्नी को खाना ऐसे असंभव बातों से भी कठिन है ।

अधीत्य चतुरो वेदान् सर्वशास्त्राण्यनेकशः । ब्रम्ह्मतत्वं न जानाति दर्वी सूपरसं यथा ॥

सिर्फ वेद तथा शास्त्रों का बार बार अध्ययन करने से किसी को ब्राह्मतत्व का अर्थ नही होता ।

जैसे जिस चमच से खाद्य पदार्थ परोसा जाता है उसे उस खाद्य पदार्थ का गुण तथा सुगंध प्राप्त नही होता ।

यस्य चित्तं निर्विषयं दयं यस्य शीतलम् । तस्य मित्रं जगत्सर्वं तस्य मुक्तिः करस्थिता ।

जिस का मन इंद्रियों के वश में है जिस का हृदय शांत है, संपूर्ण विश्व जिस का मित्र है ऐसे मनुष्य को मुक्ति सहजता से प्राप्त होती है ।

अज्ञान तिमिरांधस्य ज्ञानांजन शलाकया चक्षुरुन्मिलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।

अज्ञान के अंधकार से अन्धे हुए मनुष्य की आंखे ज्ञानरुप अंजनसे खोलने वाले गुरुको मेरा प्रणाम।

क्षमा शस्त्रं करे यस्य दुर्जनः किं करिष्यति । अतृणे पतितो वन्हिः स्वयमेवोपशाम्यति ॥

क्षमारूपी शस्त्र जिसके हाथ में हो , उसे दुर्जन क्या कर सकता है? अग्नि , जब किसी जगह पर गिरता है जहाँ घास न हो , अपने आप बुझ जाता है ।

ग्रन्थानभ्यस्य मेघावी ज्ञान विज्ञानतत्परः । पलालमिव धान्यार्थी त्यजेत् सर्वमशेषतः ॥

बुद्धीमान मनुष्य जिसे ज्ञान प्राप्त करने की तीव्र इच्छा है वह ग्रन्थों में जो महत्वपूर्ण विषय है उसे पढ़कर उस ग्रन्थ का सार जान लेता है। तथा उस ग्रन्थ के अनावष्यक बातों को छोड देता है। उसी तरह जैसे किसान केवल धान्य उठाता है । सार सार गहि लेई भुषा देई उड़ाई।

असूयैकपदं मृत्युः अतिवादः श्रियो वधः । अशुश्रूषा त्वरा श्लाघा विद्यायाः शत्रवस्त्रयः ॥

विद्यार्थी के संबंध में द्वेश यह मृत्यु के समान है । अनावश्यक बाते करने से धन का नाश होता है । सेवा करने की मनोवृत्ती का आभाव, जल्दबाजी तथा स्वयं की प्रशंसा स्वयं करना यह तीन बाते विद्या ग्रहण करने के शत्रू है ।

नालसाः प्राप्नुवन्त्यर्थान न शठा न च मायिनः। न च लोकरवाद्भीता न च शश्वत्प्रतीक्षिणः।।

आलसी मनुष्य कभी भी धन नही कमा सकता (वह अपने जीवनमे सफल नही हो सकता)। दूसरों की बुराई चाहने वाला, तथा उनकी वंचना करने वाला, लोग क्या कहेंगे यह भय रखनेवाला, और अच्छे मौके के अपेक्षा मे कृतिहीन रहनेवाला भी धन नही कमा सकता।

दातव्यं भोक्तव्यं धनविषये संचयो न कर्तव्यः। पश्येह मधुकरीणां संचितार्थ हरन्त्यन्ये।।

दान किजिए या उपभोग लीजिए , धन का संचय न करें देखिए , मधुमक्खी का संचय कोई और ले जाता है ॥

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता , या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।

या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता , सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥

जो कुन्दपुष्प , चंद्रमा या „ जलबिन्दुओं के हार के समान धवल है , जिसने शुभ्रवस्त्र परिधान किए है , जिसके हाथ वीणा के दण्डसे सुशोभित है और श्वेतपद्म जिसका आसन है, जिसे ब्रह्मा , विष्णु , महेश आदि सदा वन्दन करते है , बुद्धी की जड़ता पूर्णतः नष्ट करनेवाली ऐसी भगवती सरस्वती मेरा रक्षण करें ।

कस्यचित् किमपि नो हरणीयं मर्मवाक्यमपि नोच्चरणीयम् श्रीपतेः पदयुगं स्मरणीयं लीलया भवजलं तरणीयम्

दूसरों कि कोई वस्तु कभी चुरानी नही चाहिए। दूसरे के मर्मस्थान पे आघात हो ऐसा कभी बोलना नही चाहिए। श्री विष्णु के चरण का स्मरण करना चाहिए। ऐसा करने से भवसागर पार करना सरल हो जाता है।

बुधाग्रे न गुणान् ब्रायात् साधु वेत्ति यतः स्वयम् मूर्खाग्रेपि च न ब्रुयाद्धुधप्रोक्तं न वेत्ति सः

अपने गुण बुद्धीमान मनुष्य को न बताए, वह उन्हें अपने आप जान लेगा। अपने गुण मुर्ख मनुष्य को भी न बताए। वह उन्हें समझ नही सकेगा।

के शवं पतितं दृष्ट्वा पाण्डवा हर्षनिर्भराः। रूदन्ति कौरवाः सर्वे हा हा के शव के शव रूकिये ।।

यदि आपने इस श्लोक का अर्थ समझने का प्रयास किया है ! संस्कृत मे शब्दों का सही अर्थ समझना अत्यंत आवश्यक है !! यहाँ , के और शव अलग अलग शब्द है । ˜क का अर्थ है पानी कई अर्थ में से एक इसलिए 'के' मतलब ˜पानी में। पाण्डव का एक अर्थ ˜मछली और कौरव का एक अर्थ ˜कौआ भी होता है। इसलिए , इस श्लोक का अर्थ है ,

पानी में गिरा शव देखकर मछलीयाँ हर्ष निर्भर हुई बल्कि सब कौए दुःख से चिल्लाने लगे अरे रे पानी में शव'।

गुरोरप्यवलिप्तस्य कार्याकार्यमजानतः । उत्पथं प्रातिपन्नस्य न्याय्यं भवति शासनम् ॥

आदरणिय तथा श्रेष्ठ व्यक्ति यदी व्यक्तीगत अभिमान के कारण धर्म और अधर्म में भेद करना भूल गए या फिर गलत मार्ग पर चले तो ऐसे व्यक्ति को शासन में करना न्याय ही है ।

यद्यद् राघव संयाति महाजनसपर्यया । दिनं तदेव सालोकं शेषास्त्वन्धदिनालयाः ॥

हे! रघु वंशके वंशज , श्रेष्ठ तथा सज्जनों की सेवा में व्यतीत हुवा दिन ही प्रकाशमान होता है ।

अन्य सभी दिन सूर्य प्राकाश रहते हुए भी अंधकार के समान प्रातीत होते है ।

यमो वैवस्वतो राजा यस्तवैष दि स्थितः । तेन चेदविवादस्ते मा गंगा मा कुरून् व्राज ॥

यदि विवस्वत के पुत्र भगवान यम आप के मन में बसते है तथा उनसे आपका मत भेद नही है तो आपको अपने पाप धोने परम पवित्र गंगा नदी के तट पर या कुरूओं के भूमी को जाने की कोइ आवश्यकता नही है ।

किम् कुलेन विशालेन विद्याहीनस्य देहिनः अकुलीनोऽपि विद्यावान् देवैरपि सुपूज्यते

अच्छे कुल मे जन्मी हुआ व्यक्ति अगर ज्ञानी न हो, तो (उसके अच्छे कुल का) क्या फायदा। ज्ञानी व्यक्ति अगर कुलीन न हो, तो भी, इश्वर भी उसकी पूजा करते है।

पत्रं नैव यदा करीरविटपे दोषो वसन्तस्य किम् । नोलूकोऽप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम् । धारा नैव पतन्ति चातकमुखे मेघस्य किं दूषणम् । यत् पूर्वं विधिना ललाटलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः ।।

करीर वृक्ष में मरू भूमी में आने वाला पर्णहीन वृक्ष को हम वसंत ऋतू में भी पत्ते नहीं आते है इसमें वसन्त का क्या दोष ।

उल्लू को दिन में नही दिखाई देता इसमें सूर्य का क्या दोष ? जल धाराए चातक के चोंच में नहीं गिरी तो वह बादल का दोष कैसे ? अर्थात् , विधी ने जो माथे पर लिखा है , उसे कौन बदल सकता है ।

यथा हि पथिकः कश्चित् छायामाश्रित्य तिष्ठति । विश्रम्य च पुनर्गच्छेत् तद्वद् भूतसमागमः ॥

जिस प्राकार यात्रा करनेवाला पथिक थोडे समय वृक्ष के नीचे विश्राम करने के बाद आगे निकल जाता है उसी समान अपने जीवन में अन्य मनुष्य थोड़े समय के लिए उस वृक्ष की तरह छांव देते है, और फिर उनका साथ छूट जाता है ।

न व्याधिर्न विषं नापत् तथा नाधिश्च भूतले। खेदाय स्वशरीरस्थं मौर्ख्यमेकम् यथा नृणाम्।।

इस जगत मे स्वयंकी मूर्खता ही सब दु:खों कि जड होति है। कोई व्याधि, विष, कोई आपत्ति तथा मानसिक व्याधि से उतना दु:ख नही होता।

न वध्यन्ते ह्यविश्वस्ता बलिभिर्दुर्बला अपि विश्वस्तास्त्वेव वध्यन्ते बलिनो दुर्बलैरपि

दुर्बल मनुष्य विश्वसनीय न होने पर भी बलवान मनुष्य उसे मारता नही है। बलवान पुरुष विश्वसनीय होने पर भी दुर्बल मनुष्य उसे मारता ही है।

वने रणे शत्रुजलाग्निमध्ये । रक्षन्ति पुण्यानि पुराकृतानि ॥

जब हम जंगल के मध्य में या फिर रणक्षेत्र के मध्य में या फिर जल में या फिर अग्नी में फस जाते है तब अपने भूतकाल के अच्छे कर्म ही हम को बचाते है ।

यदीच्छसि वशीकर्तुं जगदेकेन कर्मणा । परापवादससेभ्यो गां चरन्तीं निवारय ॥

यदी किसी एक काम से आपको जग को वश करना है तो परनिन्दा रूपी धान के खेत में चरने वाली जिव्हा रूपी गाय को वहाँ से हका दो अर्थात दूसरे की निन्दा कभी न करो। संस्कृत मे गौः शब्द के अनेक अर्थ है। ; सुभाषितकार ने गौः के दो अर्थ है इन्द्रिय जिव्हेन्द्रिय तथा गाय को लेकर शब्द का सुन्दर उपयोग किया है।

गुरूशुश्रूषया विद्या पुष्कलेन धनेन वा । अथवा विद्यया विद्या चतुर्थो न उपलभ्यते ॥

गुरू कि सेवा करने से या भरपूर धन देने से विद्या प्राप्त कर सकते है अथवा एक विद्या का दूसरी विद्या के साथ विनिमय कर सकते है ,इसके अतिरिक्त विद्या प्राप्त करने का चौथा कोई रास्ता उपलब्ध नहीं है ।

यथा खनन् खनित्रेण नरो वार्यधिगच्छति तथा गुरुगतं विद्यां शुश्रूषुरधिगच्छति

भूमि मे प्रहार से गड्डा करने वाले को जिस तरह पानी मिलता है, उसी तरह गुरु की सेवा करने वाले को विद्या प्राप्त होती है।

यदि सन्ति गुणाः पुंसां विकसन्त्येव ते स्वयम्। न हि कस्तूरिकामोदः शपथेन विभाव्यते।।

मनुष्य के गुण अपने आप फैलते है, बताने नही पड़ते है। जिस तरह से कस्तूरी को अपनी खुशबु सिद्ध नही करनी पड़ती।

यथा काष्ठं च काष्ठं च समेयातां महोदधौ । समेत्य च व्यपेयातां तद्वद् भूतसमागमः ॥

जैसे लकड़ी के दो टुकडे विशाल सागर में मिलते है तथा एक ही लहर से अलग हो जाते है उसी तरह दो व्यक्ति कुछ क्षणों के लिए सहवास में आते है फिर कालचक्र कि गती से अलग हो जाते है ।

यस्यास्ति वित्तं स नरःकुलीनः ,स पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः । स एव वक्ता स च दर्शनीयः ,सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते ॥

जिसके पास धन है वही कुलीन कहलाता है । वही पण्डित ,बहुश्रुत ,गुणों कि पहचान रखने वाला,वक्ता तथा दर्शनिय समझा जाता है।अर्थात ,सभी गुण धन का आश्रय लेते है।

यद्धात्रा निजभालपट्टलिखितं स्तोकं महद् वा धनम् तत् प्राप्नोति मरूस्थलेऽपि नितरां मेरौ ततो नाधिकम् तद्धीरो भव ,वित्तवत्सु कृपणां वृत्तिं वृथा मा कृथाः कूपे पश्य पयोनिधावपि घटो गृह्णाति तुल्यं पयः।।

विधाता ने ललाट पर जो थोड़ा या अधिक धन लिखा है,वो मरू भूमी में भी मिलेगा।मेरू पर्वत पर जाकर भी उससे ज्यादा नहीं मिलेगा। धीरज रखो,अमीरों के सामने दैन्य ना दिखाओ ,देखो यह गागर कुआँ या सागर में से उतना ही पानी ले सकती है। जितना उसमें क्षमता है।

नाम्भोधिरर्थितामेति सदाम्भोभिश्च पूर्यते । आत्मा तु पात्रतां नेयः पात्रमायान्ति संपदः ॥

विदुरनीति सागर कभी जल के लिए भिक्षा नही मांगता फिर भी वह सदैव जल से भरा रहता है । यदि हम अपने आप को योग्य बना दे तो सब साधन स्वयं ही अपने पास चली आएंगे ।

बहीव्मपि संहितां भाषमाणः न तत्करोति भवति नरः प्रामत्तः । गोप इव गा गणयन् परेषां न भाग्यवान् श्रामण्यस्य भवति ॥

यदि मनुष्य बहूत से धार्मिक श्लोक स्मरण में भी रखे पर उस प्राकार आचरण न करे तो उस का कोइ लाभ नही है । जैसे गाय चरानेवाला गौवों कि संख्या तो जानता है पर वह उस का मालिक नही रहता ।

वने रणेत्रुजलाग्निमध्ये महार्णवे पर्वतमस्तके वा । सुप्तं प्रमत्तं विषमस्थितं वा रक्षन्ति पुण्यानि पुरा कृतानि ॥

अरण्य में रणभूमी में ,शत्रु समुदाय में,जल,अग्नि,महासागर या पर्वत शिखरपर तथा सोते हुए,उन्मत्त स्थिती में या प्रतिकूल परिस्थिती में मनुष्य के पूर्वपुण्य उसकी रक्षा करतें हैं।

न कालो दण्डमुद्यम्य शिरः कृन्तति कस्यचित् । कालस्य बलमेतावत् विपरीतार्थदर्शनम् ॥

काल किसी का शस्त्र से शिरच्छेद नही करता पर वह बुद्धी भेद करता है जिससे मनुष्य को गलत रास्ता ही सही लगता है। और वह अपने विनाश की ओर बढ़ता है । बुद्धीभेद ही काल का बल है ।

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् । देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते ॥

हम सब एक साथ चले;एक साथ बोले, हमारे मन एक हो । प्राचीन समय में देवताओं का ऐसा आचरण रहा इसी कारण वे वंदनीय है ।

मध्विव मन्यते बालो यावत् पापं न पच्यते । यदा च पच्यते पापं दु:खं चाथ निगच्छति।। धम्मपद 5।6

जब तक पाप संपूर्ण रूप से फलित नही होता तब तक वह पाप कर्म मधुर लगता है ।

परन्तु पूर्णतः फलित होने के पश्च्यात मनुष्य को उसके कटु परिणाम सहन करने ही पडते है ।

तावज्जितेन्द्रियो न स्याद् विजितान्येन्द्रियः पुमान् । न जयेद् रसनं यावद् जितं सर्वं जिते रसे ॥ श्रीमद्भागवत 11।8।21

जब तक मनुष्य अपने विविध आहार के उपर स्वनियंत्रण नही रखता तब तक उसने सब इन्द्रियों के उपर विजय पायी है ऐसा नही बोल सकते । आहार के उपर स्वनियंत्रण यही सब से आवश्यक बात है ।

द्वावेव चिन्तया मुक्तौ परमानन्द आप्लुतौ । यो विमुग्धो जडो बालो यो गुणेभ्य: परं गत: ॥

इस जगत में केवल दो प्राकार के लोग परम आनन्द का अनुभव कर सकते है । एक है नन्हा सा बालक तथा दूसरा है परम योगी ।

न तथा तप्यते विद्धः पुमान् बाणैः सुमर्मगैः । यथा तुदन्ति मर्मस्था ह्मसतां पुरूषेषवः ॥ भागवत 11।23।3

मनुष्य के शरीर में लगे बाण उतनी वेदना नही देते जितनी वेदना कठोर शब्द देते है ।

न कश्चिदपि जानाति किं कस्य श्वो भविष्यति अत: श्व: करणीयानि कुर्यादद्यैव बुद्धिमान ॥

कल किसका क्या होगा कोई नहीं जानता ,इसलिए बुद्धिमान लोग कल का काम आज ही करते है ।

वयमिह परितुष्टा वल्कलैस्त्वं दुकूलैः सम इह परितोषो निर्विशेषो विशेषः ।

स तु भवति दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला मनसि च परितुष्टे कोऽर्थवान को दरिद्रः ॥

एक योगी राजा से कहता है, हम यहाँ है आश्रम में वल्कलवस्त्र से भी सन्तुष्ट, जब कि तुमने अपने रेशीम वस्त्र पहने हो महलों में रहते हो फिर भी संतुष्ठ हो। हम उतने ही सन्तुष्ट है, इसमें कोई भेद नही है । जिसकी पिपासा अधिक ,वही दरिद्री है । जब की मन में सन्तुष्टता है ,दरिद्री कौन और धनवान कौन ?

न ह्मम्मयानि तीर्थानि न देवा मृच्छिलामया: । ते पुनन्त्युरूकालेन दर्शनादेव साधव: ॥ भागवत 10।48।31

नदीयों का पवित्र जल या भगवान की मूर्ती के दर्शन मात्र से भक्त का मन शुद्ध नही होता, अपितु लंबे समय ध्यान लगाने के बाद ही अंत:करण शुद्ध होता है । परन्तू संतों के केवल दर्शन मात्र से ही हम पवित्र हो जाते है ।

ब्राम्हण: सम_क् शान्तो दीनानां समुपेक्षक: । स्त्रवते ब्रम्ह तस्यापि भिन्नभाण्डात् पयो यथा ॥ भागवत 4।14।41

समदृष्टी के अभाव के कारण यदि ब्राम्हण किसी पिड़ित व्यक्ति की सहायता नही करता है तो उसका ब्रम्हत्व समाप्त हो गया ऐसा समझना चाहिए ।

दैवमेवेह चेत् कतर्पुंस: किमिव चेष्टया । स्नानदानासनोच्चारान् दैवमेव करिष्यति ॥

अगर नसिब ही आपका कार्य करने वाला है तो आपको कुछ करने कि क्या आवष्यकता है? स्नान दान धर्म बैठना बोलना यह सभी आपका नसिब ही करेगा ।

कार्यमण्वपि काले तु कृतमेत्युपकारताम् । महदप्युपकारोऽपि रिक्ततामेत्यकालत: ॥

किसी का छोटा सा भी काम अगर सही समय पे करे तो वह उपकारक होता है । परंतु अगर गलत समय पे करे तो बहुत बड़ा काम भी किसी काम का नही होता है ।

यो यमर्थं प्रार्थयते यदर्थं घटतेऽपि च । अवश्यं तदवाप्नोति न चेच्छ्रान्तो निवर्तते ॥

कोई मनुष्य अगर कुछ चाहता है और उसके लिए अथक प्रयत्न करता है तो वह उसे प्राप्त करके ही रहता है ।

यदजर्तं प्राणहरैः परिश्रमैः मृतस्य तद् वै विभजन्ति रिक्थिनः । कृतं च यद् दुष्कृतमर्थलिप्सया तदेव दोषापहतस्य कौतुकम् ॥ गरूड़पुराण प्राणान्तिक परिश्रमों से प्राप्त किया हुआ मृत आदमी का जो धन होता है, उसके वारिस वह आपसमें बाँट लेते है । उस धन के लोभ से उसने जो पाप बटोरा है वह पापी मनुष्य के साथ ही जाता है उसे ही पाप के परिणाम भुगतने पड़ते है ,पाप का कोई विभाजन नहीं होता है।

त्यजेत् क्षुधार्ता जननी स्वपुत्रं , खादेत् क्षुधार्ता भुजगी स्वमण्डम् । बुभुक्षितः किं न करोति पापं , क्षीणा जना निष्करूणा भवन्ति ॥

भूख से व्याकूल माता अपने पुत्रका त्याग करेगी भूख से व्याकूल साँप अपने अण्डे खा लेगा भूखा क्या पाप नहीं कर सकता? भूख से क्षीण लोग निर्दय बन जाते हैं ।

अणुभ्यश्च महद्भ्यश्च शास्त्रेभ्यः कुशलो नरः । सर्वतः सारमादद्यात् पुष्पेभ्य इव षट्पदः ॥

भवरा जैसे छोटे बड़े सभी फूलो में से केवल मधु इक्कठा करता है उसी तरह चतुर मनुष्य को शास्त्रों में से केवल उनका सार लेना चाहिए ।

न अन्नोदकसमं दानं न तिथिद्र्वादशीसमा । न गायत्रयाः परो मन्त्रो न मातुः परदैवतम् ॥

अन्नदान जैसे दान नही है । द्वादशी जैसे पवित्र तिथी नही है । गायत्री मन्त्र सर्वश्रेष्ठ मन्त्र है तथा माता सब देवताओं से भी श्रेष्ठ है ।

यत्र नार्यः तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः । यत्र एताः तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्र अफलाः क्रियाः ॥

मनुस्मृति जहां स्त्रीयों को मान दिया जाता है तथा उनकी पूजा होती है वहां देवताओं का निवास रहता है ।

परन्तू जहां स्त्रीयों की निंदा होती है तथा उनका सम्मान नही किया जाता वहां कोइ भी कार्य सफल नही होता ।

वनेऽपि सिंहा मृगमांसभक्षिणो बुभुक्षिता नैव तृणं चरन्ति । एवं कुलीना व्यसनाभिभूता न नीचकर्माणि समाचरन्ति ॥

जंगल में मांस खाने वाले शेर भूख लगने पर भी जिस तरह घास नही खाते, उस तरह उच्च कुल मे जन्मे हुए व्यक्ति (सुसंस्कारित व्यक्ति) संकट काल मे भी नीच काम नही करते ।

खद्योतो द्योतते तावद् यवन्नोदयते शशी । उदिते तु सहस्रांशौ न खद्योतो न चन्द्रमाः ॥

जब तक चन्द्रमा उगता नही, जुगनु (भी) चमकता है । परन्तु जब सुरज उगता है तब जुगनु भी नही होता तथा चन्द्रमा भी नही, दोनो सुरज के सामने फीके पडते है।

स्वभावं न जहात्येव साधुरापद्गतोऽपि सन् । कर्पूरः पावकस्पृष्टः सौरभं लभतेतराम् ॥

अच्छी व्यक्ति आपत्काल में भी अपना स्वभाव नहीं छोडती है , कर्पूर अग्निके स्पर्श से अधिक खुशबू निर्माण करता है।

चित्तस्य शुद्धये कर्म न तु वस्तूपलब्धये । वस्तुसिद्धिर्विचारेण न किंचित्कर्मकोटिभिः ॥

विवेकचूडामणी अंत:करण के शुद्धी के लिए कर्म है पारमार्थिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए नही । पारमार्थिक ज्ञान तो चिंतन तथा विचार करने से ही प्राप्त होता है कोटि कर्म करने से नही ।

श्रमेण दु:खं यत्किन्चिकार्यकालेनुभूयते । कालेन स्मर्यमाणं तत् प्रामोद ॥ काम करते समय होनेवाले कष्ट के कारण थोडा दु:ख तो होता है । परन्तु भविष्य में उस काम का स्मरण हुवा तो निश्चित ही आनंद होता है ।

आस्ते भग आसीनस्य }ध्र्वम् तिष्ठति तिष्ठत: । शेते निषद्यमानस्य चरति चरतो भग: ॥

जो मनुष्य कुछ काम किए बिना बैठता है, उसका भाग्य भी बैठता है । जो खड़ा रहता है, उसका भाग्य भी खड़ा रहता है ।

जो सोता है उसका भाग्य भी सोता है और जो चलने लगता है, उसका भाग्य भी चलने लगता है ।

अर्थात कर्म से ही भाग्य बदलता है ।

विपदी धैर्यमथाभ्युदये क्षमा सदसि वाक्पटुता युधि विक्रम: । यशसि चाभिरूचिव्र्यसनं श्रुतौ प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम् ॥

आपात्काल मे धैर्य , अभ्युदय मे क्षमा , सदन मे वाक्पटुता , युद्ध के समय बहादुरी , यश में अभिरूचि , ज्ञान का व्यसन ये सब चीजे महापुरूषों मे नैसर्गिक रूप से पायी जाती हैं ।

यावत् भ्रियेत जठरं तावत् सत्वं हि देहीनाम् । अधिकं योभिमन्येत स स्तेनो दण्डमर्हति ॥

मनुस्मृती, महाभारत अपने स्वयं के पोषण के लिए जितना धन आवश्यक है उतने पर ही अपना अधिकार है । यदि इससे अधिक पर हमने अपना अधिकार जमाया तो यह सामाजिक अपराध है तथा हम दण्ड के पात्र है ।

अहं च त्वं च राजेन्द्र लोकनाथौ उभावपि । बहुव्रीहिरहं राजन् षष्ठीतत्पुरूषो भवान ॥

एक भिखारी राजा से कहता है, "हे राजन्, मैं और आप दोनों लोकनाथ है । हां बस फर्क इतना है कि मैं बहुव्रीही समास हूँ तो आप षष्ठी तत्पुरूष हो !"

यदा न कुरूते भावं सर्वभूतेष्वमंगलम् । समदृष्टेस्तदा पुंस: सर्वा: सुखमया दिश: ॥

जो मनुष्य किसी भी जीव के प्रती अमंगल भावना नही रखता,, जो मनुष्य सभी की ओर सम्यक् दृष्टी से देखता है, ऐसे मनुष्य को सब ओर सुख ही सुख है ।

शरदि न वर्षति गर्जति वर्षति वर्षासु नि:स्वनो मेघ: नीचो वदति न कुरुते न वदति सुजन: करोत्येव

शरद ऋतु मे बादल केवल गरजते है, बरसते नही वर्षा ऋतु में बरसते है, गरजते नही। नीच मनुश्य केवल बोलता है, कुछ करता नही, परन्तु सज्जन करता है, बोलता नही।

सर्वार्थसंभवो देहो जनित: पोषितो यत: । न तयोर्याति निर्वेशं पित्रोर्मत्र्य: शतायुषा ॥

एक सौ वर्ष की आयु प्राप्त हुआ मनुष्य देह भी अपने माता पिता के ऋणोंसे मुक्त नही होता ।

जो देह चार पुरूषार्थों की प्राप्ती का प्रामुख साधन है उसका निर्माण तथा पोषण जिन के कारण हुआ है, उनके ऋण से मुक्त होना असंभव है ।

अमृतं चैव मृत्युश्च द्वयं देहप्रातिष्ठितम् । मोहादापद्यते मृत्युः सत्येनापद्यतेऽमृतम् ॥

मृत्यु तथा अमरत्व दोनों एक ही देह में निवास करती है । मोह के पिछे भागने से मृत्यु आती है तथा सत्य के पिछे चलने से अमरत्व प्राप्त होता है ।

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते । स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नितिम् ॥

इस जीवन मृत्यु के अखंडीत चक्र में जिस की मृत्यु होती है क्या उसका पुनः जन्म नही होता? परन्तु उसी का जन्म, जन्म होता है जिससे उसके कुल का गौरव बढ़ता है ।

को न याति वशं लोके मुखे पिण्डेन पूरितः मृदंगो मुखलेपेन करोति मधुरध्वनिम्

मुख खाद्य से भरकर किस को अंकीत नहि किया जा सकता। आटा लगाने से मृदुंग भी मधुर ध्वनि निकालता है।

सर्वनाशे समुत्पन्ने ह्मर्धं त्यजति पण्डितः अर्धेन कुरुते कार्यं सर्वनाशो हि दुःसहः

जब सर्वनाश निकट आता है, तब बुद्धिमान मनुष्य अपने पास जो कुछ है उसका आधा गवाने की तैयारी रखता है। आधे से भी काम चलाया जा सकता है, परंतु सब कुछ गवाना बहुत दुःखदायक होता है।

गुणेषु क्रियतां यत्नः किमाटोपैः प्रयोजनम् विक्रीयन्ते न घण्टाभिः गावः क्षीरविवर्जिताः

स्वयं मे अच्छे गुणों की वृद्धी करनी चहिए। दिखावा करके लाभ नही होता। दुध न देनेवाली गाय उसके गले मे लटकी हुआी घंटी बजाने से बेची नही जा सकती।

साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः । तृणं न खादन्नपि जीवमानः तद्भागधेयं परमं पशूनाम् ॥

नीतिशतक जिस व्यक्ती को कला संगीत में रूची नही है वह तो केवल पूंछ तथा सिंग रहीत पशू है । यह तो पशूओंका सौभाग्य है की वह घास नही खाता है।

न प्राष्यति सम्माने नापमाने च कुप्यति । न क्रुद्धः परूषं ब्रूयात् स वै साधूत्तमः स्मृतः ॥

संत तो वही है जो मान देने पर हर्षित नही होता अपमान होने पर क्रोधीत नही होता तथा स्वयं क्रोधीत होने पर कठोर शब्द नही बोलता ।

असभ्दिः शपथेनोक्तं जले लिखितमक्षरम् । सभ्दिस्तु लीलया प्रोक्तं शिलालिखितमक्षरम् ॥

दुर्जनो कि ली हुइ शपथ भी पानी के उपर लिखे हुए अक्षरों जैसे क्षणभंगूर ही होती है । परन्तू संतो जैसे व्यक्तिने सहज रूप से बोला हुआ वाक्य भी शिला के उपर लिखा हुआ जैसे रहता है ।

आरोप्यते शिला शैले यत्नेन महता यथा । पात्यते तु क्षणेनाधस्तथात्मा गुणदोषयोः ॥

शिला को पर्वत के उपर ले जाना कठिन कार्य है परन्तु पर्वत के उपर से नीचे ढकेलना तो बहुत ही सुलभ है । ऐसे ही मनुष्य को सद्‌गुणो से युक्त करना कठिन है पर उसे दुर्गुणों से भरना तो सुलभ ही है ।

लुब्धमर्थेन गृ*णीयात् क्रुद्धमञ्जलिकर्मणा मूर्खं छन्दानुवृत्त्या च तत्वार्थेन च पण्डितम्

लालची मनुष्य को धन (का लालच) देकर वश किया जा सकता है। क्रोधित व्यक्ति के साथ नम्र भाव रखकर उसे वश किया जा सकता है। मूर्ख मनुष्य को उसके इछानुरुप बर्ताव कर वश कर सकते है। तथ ज्ञानि व्यक्ति को मुलभूत तत्व बताकर वश कर सकते है।

अधर्मेणैथते पूर्व ततो भद्राणि पश्यति । ततः सपत्नान् जयति समूलस्तु विनश्यति ॥

कुटिलता व अधर्म से मानव क्षणिक समृद्दि व संपन्नता पाता है । अच्छा दैव का अनुभव भी करता है । शत्रु को भी जीत लेता है । परन्तू अन्त मे उसका विनाश निश्चित है । वह जड़ समेत नष्ट होता है ।

विद्या मित्रं प्रावासेषु भार्या मित्रं गृहेषु च । व्याधितस्योषधं मित्रं धर्मो मित्रं मृतस्य च ॥

विद्या प्रावास के समय मित्र है । पत्नी अपने घर मे मित्र है ।

व्याधी ग्रस्त शरीर को औषधी मित्र है तथा मृत्यु के पश्च्यात धर्म अपना मित्र है ।

रूपयौवनसंपन्नाः विशालकुलसंभवाः । विद्याहीनाः न शोभन्ते निर्गन्धाः किंशुकाः इव ॥

नरपतिहितकर्ता द्वेष्यतां याति लोके जनपदहितकर्ता त्यज्यते। पार्थिवेन इति महति विरोधे विद्यमाने समाने नृपतिजनपदानां दुर्लभः कार्यकर्ता।

राजा का कल्याण करने वालो का लोग द्वेश करते है। लोगों का कल्याण करने वाले को राजा त्याग देता है। इस तरह दोनो ओर से बड़ा विरोध होते हुए भी राजा और प्रजा दोनो का कल्याण करने वाला मनुष्य दुर्लभ होता है।

दीपो नाशयते ध्वांतं धनारोग्ये प्रयच्छति। कल्याणाय भवति एव दीपज्योतिर्नमोऽस्तुते।।

दिया अंधकार का नाश करता है और आरोग्य तथा धन देता है। सबके कल्याण करने वाले दिये को मेरा प्रणाम हो।

तत् कर्म यत् न बन्धाय सा विद्या या विमुक्तये । आयासाय अपरं कर्म विद्या अन्या शिल्पनैपुणम् ॥

जिस कर्म से मनुष्य बन्धन में नही बन्ध जाता वही सच्चा कर्म है । जो मुक्ति का कारण बनती है वही सच्ची विद्या है ।

शेष कर्म तो कष्ट का ही कारण होती है तथा अन्य प्राकार की विद्या तो केवल नैपुण्य युक्त कारागिरी है ।

अक्षरद्वयम् अभ्यस्तं नास्ति नास्ति इति यत् पुरा । तद् इदं देहि देहि इति विपरीतम् उपस्थितम्।।

संपत्ती के परमोच्च शिखर पर यदि मनुष्य ने याचक को नही नही कहा तो निश्चितही भविष्य में ऐसे मनुष्य को दिजीए दिजीए ऐसे कहनेकी परिस्थिती नियती ले आएगी ।

अन्य क्षेत्रे कृतं पापं पुण्य क्षेत्रे विनश्यति । पुण्य क्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति ॥

अन्य क्षेत्र में किए पाप पुण्य क्षेत्र में धुल जाते है । पर पुण्य क्षेत्र में किए पाप तो वज्रलेप की तरह होते है।

असारे खलु संसारे सारं श्वशुरमन्दिरम् । हरो हिमालये शेते हरिः शेते महोदधौ ॥

इस सारहीन जगत में केवल श्वशुर का घर रहने योग्य है । इसी कारण शंकर भगवान हिमालय में रहते है तथा विष्णू भगवान समुद्र में रहते है ।

एकेन अपि सुपुत्रेण सिंही स्वपिति निर्भयम् । सह एव दशभिः पुत्रैः भारं वहति गर्दभी ॥

सिंहिन को यदि एक छावा भी है तो भी वह आराम करती है क्योंकी उसका छावा उसे भक्ष्य लाकर देता है । परन्तु गधी को दस बच्चे होने पर भी स्वयं भार का वहन करना पड़ता है ।

आचारः प्रथमो धर्मः अित्येतद् विदुषां वचः। तस्माद् रक्षेत् सदाचारं प्राणेभ्योऽपि विशेषतः।।

अच्छा बर्ताव रखना यह सबसे जादा महात्त्वपूर्ण है ऐसा पंडीतोने कहा इसलिए अपने प्राणोका मोल देके भी अच्छा बर्ताव रखना चाहिए।

न तथा शीतलसलिलं न चन्दनरसो न शीतला छाया । फलादयति पुरूषं यथा मधुरभाषिणी वाणी ॥

शीतल जल चंदन अथवा छाया किसी में भी इतनी शीतलता नही होती जितनी के मधुर वणी में होती है ।

न मर्षयन्ति चात्मानं संभावयितुमात्मना । अदर्शयित्वा शूरास्तू कर्म कुर्वन्ति दुष्करम् ॥

शूर जनों को अपने मुख से अपनी प्रशंसा करना सहन नहीं होता । वे वाणी के द्वारा प्रदर्शन न करके दुष्कर कर्म ही करते है ।

चलन्तु गिरयः कामं युगान्तपवनाहताः । कृच्छ्रेरपि न चलत्येव धीराणां निश्चलं मनः ॥

युगान्तकालीन वायु के झोंकों से पर्वत भले ही चलने लगें परन्तु धैर्यवान् पुरूषों के निश्चल हृदय किसी भी संकट में नहीं डगमगाते ।

मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम् । मनस्यन्यत् वचस्यन्यत् कर्मण्यन्यत् दुरात्मनाम्

महान व्यक्तियों के मनमे जो विचार होता है वही वे बोलते है और वही कृतिमेभी लाते है। उसके विपारित नीच लोगोंके मनमे एक होता है वै बोलते दुसरा है और करते तिसरा है।

जीवने यावदादानं स्यात्,,, प्रदानं ततोऽधिकम् । इतयेषा प्रार्थनाऽस्माकं भगवन्परिपूर्यताम्

हमारे जीवन में हमारी याचनाओं से अधीक हमारा दान हो यह एक प्रार्थना हे भगवन् तुम पूरी कर दो।

सत्यं माता पिता ज्ञानं धर्मो भ्राता दया सखा । शान्तिः पत्नी क्षमा पुत्रः षडेते मम बान्धवाः ॥

सत्य मेरी माता, ज्ञान मेरे पिता, धर्म मेरा बन्धु, दया मेरा सखा, शान्ति मेरी पत्नी तथा क्षमा मेरा पुत्र है । यह सब मेरे रिश्तेदार है ।

दूरस्थाः पर्वताः रम्याः वेश्याः च मुखमण्डने । युध्यस्य तु कथा रम्या त्रीणि रम्याणि दूरतः ॥

पहाड़ दूर से बहुत अच्छे दिखते है । मुख विभुषित करने के बाद वैश्या भी अच्छी दिखती है । युद्ध की कहानिया सुनने को बहौत अच्छी लगती है । ये तिनो चिजे पर्याप्त अंतर रखने से ही अच्छी लगती है ।

उपाध्यात् दश आचार्यः आचार्याणां शतं पिता । सहस्रं तु पितृन् माता गौरवेण अतिरिच्यते ॥

आचार्य उपाध्याय से दस गुना श्रेष्ठ होते है । पिता सौ आचार्या के समान होते है । माता पिता से हजार गुना श्रेष्ठ होते है ।

आर्ता देवान् नमस्यन्ति, तपः कुर्वन्ति रोगिणः । निर्धनाः दानम् इच्छन्ति, वृद्धा नारी पतिव्रता ॥

संकट में लोग भगवान की प्रार्थना करते है, रोगी व्यक्ति तप करने की चेष्टा करता है । निर्धन को दान करने की इच्छा होती है तथा वृद्ध स्त्री पतिव्रता होती है । लोग केवल परिस्थिती के कारण अच्छे गुण धारण करने का नाटक करते है ।

शोको नाशयते धैर्य, शोको नाशयते श्रृतम् । शोको नाशयते सर्वं, नास्ति शोकसमो रिपुः ॥

शोक धैर्य को नष्ट करता है, शोक ज्ञान को नष्ट करता है, शोक सर्वस्व का नाश करता है । इस लिए शोक जैसा कोइ शत्रू नही है ।

भीष्मद्रोणतटा जयद्रथजला गान्धारनीलोत्पला । शल्यग्राहवती कृपेण महता कर्णेन वेलाकुला ॥

अश्वत्थामविकर्णघोरमकरा दुर्योधनावर्तिनी ।सोत्तीर्णा खलु पाण्डवैः रणनदी कैवर्तकः केशवः ॥

भीष्म और द्रोण जिसके दो तट है जयद्रथ जिसका जल है शकुनि ही जिसमें नीलकमल है शल्य जलचर ग्राह है कर्ण तथा कृपाचार्य ने जिसकी मर्यादा को आकुल कर डाला है अश्वत्थामा और विकर्ण जिस के घोर मगर है ऐसी भयंकर और दुर्योधन रूपी भंवर से युक्त रणनदी को केवल श्रीकृष्ण रूपी नाविक की सहायता से पाण्डव पार कर गये ।

श्रियः प्रसूते विपदः रुणद्धि, यशांसि दुग्धे मलिनं प्रमार्ष्टि । संस्कार सौधेन परं पुनीते, शुद्धा हि बुद्धिः किलकामधेनुः ॥

शुद्ध बुद्धि निश्चय ही कामधेनु जैसी है क्योंकि वह धन-धान्य पैदा करती है; आने वाली आफतों से बचाती है; यश और कीर्ति रूपी दूध से मलिनता को धो डालती है; और दूसरों को अपने पवित्र संस्कारों से पवित्र करती है। इस तरह विद्या सभी गुणों से परिपूर्ण है।

5 सिंहकेतु पांचाल देश का एक राजा था

सिंहकेतु पांचाल देश का एक राजा था जो की बहुत बड़ा शिवभक्त था। शिव आराधना और शिकार उसके दो चीजें प्यारी थीं, वह शिकार खेलने रोज जंगल जाता था। एक दिन घने जंगल में सिंहकेतु को एक ध्वस्त मंदिर दिखा। राजा शिकार की धुन में आगे बढ़ गया पर सेवक भील ने ध्यान से देखा तो वह शिव मंदिर था जिसके भीतर लता, पत्रों में एक शिवलिंग था।

भील का नाम चंड था, सिंहकेतु के सानिध्य और उसके राज्य में रहने से वह भी धार्मिक प्रवृत्ति का हो गया था। चबूतरे पर स्थापित शिवलिंग जो कि अपनी जलहरी से लगभग अलग ही हो गया था वह उसे उखाड़ लाया। चंड ने राजा से कहा- महाराज यह निर्जन में पड़ा था, आप आज्ञा दें तो इसे मैं रख लूं, पर कृपा कर पूजन विधि भी बता दें ताकि मैं रोज इसकी पूजा कर पुण्य कमा सकूं।

राजा ने कहा कि चंड भील इसे रोज नहला कर इसकी फूल-बेल पत्तियों से सजाना, अक्षत, फल मीठा चढ़ाना. जय भोले शंकर बोल कर पूजा करना और उसके बाद इसे धूप-दीप दिखाना।

राजा ने कुछ मजाक में कहा कि इस शिवलिंग को चिता भस्म जरूर चढ़ाना और वो भस्म ताजी चिता राख की ही हो, फिर भोग लगाकर बाजा बजाकर खूब नाच-गाना किया करना।

शिकार से राजा तो लौट गया पर भील जो उसी जंगल में रहता था, उसने अपने घर जाकर अपनी बुद्धि के मुताबिक एक साफ सुथरे स्थान पर शिवलिंग की स्थापना की और रोज ही पूजा करने का अटूट नियम बनाया।

भीलनी के लिए यह नयी बात थी, उसने कभी पूजा-पाठ न देखी थी। भील के रोज पूजा करने से ऐसे संस्कार जगे की कुछ दिन बाद वह खुद तो पूजा न करती पर भील की सहायता करने लगी। कुछ दिन और बीते तो भीलनी पूजा में पर्याप्त रुचि लेने लगी, एक दिन भील पूजा पर बैठा तो देखा कि सारी पूजन सामग्री तो मौजूद है पर लगता है वह चिता भस्म लाना तो भूल ही गया।

वह भागता हुआ जंगल के बाहर स्थित श्मशान गया. आश्चर्य आज तो कोई चिता जल ही नहीं रही थी, पिछली रात जली चिता का भी कोई नामो निशान न था जबकि उसे लगता था कि रात को मैं यहां से भस्म ले गया हूं।

भील भागता हुआ उलटे पांव घर पहुंचा. भस्म की डिबिया उलटायी पलटाई पर चिता भस्म तनिक भी न थी. चिंता और निराशा में उसने अपनी भीलनी को पुकारा जिसने सारी तैयारी की थी।

पत्नी ने कहा- आज बिना भस्म के ही पूजा कर लें, शेष तो सब तैयार है। पर भील ने कहा नहीं राजा ने कहा था कि चिता भस्म बहुत ज़रूरी है, वह मिली नहीं. क्या करूं ! भील चिंतित हो बैठ गया।

भील ने भीलनी से कहा- प्रिये यदि मैं आज पूजा न कर पाया तो मैं जिंदा न रहूंगा, मेरा मन बड़ा दुःखी है और चिन्तित है। भीलनी ने भील को इस तरह चिंतित देख एक उपाय सुझाया।

भीलनी बोली, यह घर पुराना हो चुका है, मैं इसमें आग लगाकर इसमें घुस जाती हूं, आपकी पूजा के लिए मेरे जल जाने के बाद बहुत सारी भस्म बन जायेगी, मेरी भस्म का पूजा में इस्तेमाल कर लें।

भील न माना बहुत विवाद हुआ। भीलनी ने कहा मैं अपने पतिदेव और देवों के देव महादेव के काम आने के इस अवसर को न छोड़ूंगी। भीलनी की ज़िद पर भील मान गया।

भीलनी ने स्नान किया, घर में आग लगायी, घर की तीन बार परिक्रमा की। भगवान का ध्यान किया और भोलेनाथ का नाम लेकर जलते घर में घुस गयी। ज्यादा समय न बीता कि शिव भक्ति में लीन वह भीलनी जलकर भस्म हो गई।

भील ने भस्म उठाई, भली भांति भगवान भूतनाथ का पूजन किया, शिवभक्ति में घर सहित घरवाली खो देने का कोई दुःख तो भील के मन में तो था नहीं सो पूजा के बाद बड़े उत्साह से उसने भीलनी को प्रसाद लेने के लिये आवाज दी।

क्षण के भीतर ही उसकी पत्नी समीप बने घर से आती दिखी, जब वह पास आयी तो भील को उसको और अपने घर के जलने का ख्याल आया, उसने पूछा यह कैसे हुआ ? तुम कैसे आयीं ? यह घर कैसे वापस बन गया ?

भीलनी ने सारी कथा कह सुनायी.की जब धधकती आग में घुसी तो लगा जल में घुसती जा रही हूं और मुझे नींद आ रही है। जगने पर देखा कि मैं घर में ही हूं और आप प्रसाद के लिए आवाज लगा रहे हैं।

वे यह सब बातें कर ही रहे थे कि अचानक आकाश से एक विमान वहां उतरा, उसमें भगवान के चार गण थे। उन्होंने अपने हाथों से उठा कर उन्हें विमान में बैठा लिया.

गणों का हाथ लगते ही दोनों के शरीर दिव्य हो गए. दोनों ने शिव-महिमा का गुणगान किया और फिर वे अत्यंत श्रद्धायुक्त भगवान की आराधना का फल भोगने शिव लोक चले गये।

जब से इस धरा धाम पर मानव की उत्पत्ति हुई तब से ही उसका सामना दुखों एवं परेशानियों से होना प्रारम्भ हो गया है । प्रत्येक मनुष्य के जीवन में सुख - दुख , लगे रहते हैं , महापुरुषों का कथन है कि मनुष्य को दुख में घबराना नहीं चाहिए वरन् साहस से काम लेते हुए बुरे समय के व्यतीत हो जाने की प्रतीक्षा करनी चाहिए ।

इस संसार में विजयी वही हुआ है जिसने अपने धैर्य एवं धर्म को पकड़े रखा । अयोध्या के यशस्वी महाराज हरिश्चन्द्र ने अपने जीवन में दुसह कष्ट उठाये परंतु अपने सत्य, धर्म एवं धैर्य को नहीं छोड़ा* जिसके फलस्वरूप साक्षात नारायण को प्रकट होना पड़ा । समय परिवर्तनशील होता है । प्रत्येक मनुष्य का समय सदैव एक जैसा नहीं रहता । महाभारत के विजेता परम यशस्वी पांडववीर अर्जुन के पराक्रम को कौन नहीं जानता ! परंतु जब उनका भी समय घूमा तो कोल भिल्लों ने गोपिकाओं को लूट लिया और अर्जुन कुछ नहीं कर पाये । मनुष्य अपने मस्तिष्क मों नित्य अगले दिन के नयी - नयी योजनाओं का ताना-बाना बुनता रहता है ! परंतु यह आवश्यक नहीं है कि उसकी सारी योजनाएं पूरी ही हो जायें । असुरराज बलि ने स्वर्गाधिपति बनने के लिए यज्ञों का सहारा लिया । १००वीं यज्ञ में पहुँचकर नारायण ने उसके सपनों को व्यर्थ कर दिया । किसी ने लिखा भी है कि---- "अपना सोंचा होत नहिं , हरि सोंचा तत्काल । बलि चाहत वैकुण्ठ को , भेज दिया पाताल ।।

अर्थात मनुष्य को योजनायें तो बनानी चाहिए परंतु उसके क्रियान्वयन के लिए उचित समय की प्रतीक्षा अवश्य करनी चाहिए । असमय किये गये कार्य मनुष्य को निराश ही करते हैं। और परिणामस्वरूप मनुष्य हतोत्साहित हो जाता है, आज के अधिकतर मनुष्यों में उतावलापन देखा जा सकता है । दुख में भर भरा कर टूट जाना आज कुछ ज्यादा ही देखने को मिल रहा है । दुख के दिनों में धैर्य एवं साहस का अभाव सा दिखने लगा है । जबकि किसी ने अपनी लाईनों में लिखा है - "देखकर काली निशा को , भंवर तू मत हो निराश ! बंद कलियां भी खुलेंगी , रात ढल जाने के बाद !! अर्थात दुख रूपी काली रात में निराश न होकर उस काली रात्रि के बीत जाने की प्रतीक्षा कर लेनी चाहिए ! क्योंकि यह सृष्टि का नियम है कि प्रत्येक काली रात्रि के बाद एक सुखद प्रभात अवश्य होता है । आज का मनुष्य अति महत्वाकांक्षी हो गया है । कोई भी कार्य करने पर उसके प्रतिफल के लिए प्रतीक्षा करना बहुत भारी लगने लगता है । परंतु परिणाम तो निर्धारित समय पर ही मिलेगा । उसके लिए व्यर्थ परेशान होना मनुष्य की नादानी ही है । समय पर अपने कर्म को यथोचित रूप से करते रहना और परिणाम के लिए उचित समय की प्रतीक्षा करना ही मनुष्यों के लिए उचित है । कुछ लोग दुखों के पहाड़ से इतना ज्यादा दबे से प्रतीत करते हैं कि आत्महत्या तक करने का प्रयास करने लगते हैं । विचार कीजिये कि जिस जीवन को हम सृजित नहीं कर सकते उसे समाप्त करने का क्या अधिकार है । फिर आपके दुख में आपका परिवार भी तो दुःखी होता है और मनुष्य आत्महत्या करके स्वयं तो गया परंतु घरवालों का दुख चौगुना बढ़ जाता है । यहाँ पर मनुष्य को कर्म करते हुए दुख के समय को व्यतीत होने की प्रतीक्षा करनी चाहिए ! दुःख और सुख सदैव चलायमान हैं यह कभी एक ही जगह नहीं रहते ।

दुःख में जिसने भी अपने धैर्य , धर्म एवं साहस को पकड़े रखकर सत्यमार्ग को नहीं छोड़ा उसकी कीर्ति पताका आज भी फहरा रही है ।

6 महाभारत के कुछ सुक्ष्म आख्यान

धर्मराज युधिष्ठिर के शासनकाल में हस्तिनापुर की प्रजा सुखी तथा समृद्ध थी। कहीं भी किसी प्रकार का शोक व भय आदि नहीं था। कुछ समय बाद श्रीकृष्ण से मिलने के लिये अर्जुन द्वारिकापुरी गये। जब उन्हें गए कई महीने व्यतीत हो गये, तब धर्मराज युधिष्ठिर को विशेष चिन्ता हुई।

वे भीम से बोले- "हे भीमसेन! द्वारका का समाचार लेकर भाई अर्जुन अभी तक नहीं लौटे और इधर काल की गति देखो। सम्पूर्ण भूतों में उत्पात होने लगे हैं। नित्य अपशकुन होते हैं। आकाश में उल्कापात होने लगे हैं और पृथ्वी में भूकम्प आने लगे हैं। सूर्य का प्रकाश मध्यम-सा हो गया है और चन्द्रमा के इर्द-गिर्द बारम्बार मण्डल बैठते हैं।

आकाश के नक्षत्र एवं तारे परस्पर टकरा कर गिर रहे हैं। पृथ्वी पर बारम्बार बिजली गिरती है। बड़े-बड़े बवण्डर उठकर अन्धकारमय भयंकर आंधी उत्पन्न करते हैं। सियारिन सूर्योदय के सम्मुख मुँह करके चिल्ला रही हैं। कुत्ते बिलाव बारम्बार रोते हैं। गधे, उल्लू, कौवे और कबूतर रात को कठोर शब्द करते हैं। गौएँ निरंतर आँसू बहाती हैं। घृत में अग्नि प्रज्जवलित करने की शक्ति नहीं रह गई है। सर्वत्र श्रीहीनता प्रतीत होती है। इन सब बातों को देखकर मेरा हृदय धड़क रहा है। न जाने ये अपशकुन किस विपत्ति की सूचना दे रहे हैं। क्या भगवान श्रीकृष्णचन्द्र इस लोक को छोड़कर चले गये या अन्य कोई दुःखदाई घटना होने वाली है?"

उसी क्षण आतुर अवस्था में अर्जुन द्वारका से वापस आये। उनके नेत्रों से अश्रु बह रहे थे, शरीर कान्तिहीन था और गर्दन झुकी हुई थी। वे आते ही धर्मराज युधिष्ठिर के चरणों में गिर पड़े।

तब युधिष्ठिर ने घबरा कर पूछा- "हे अर्जुन! द्वारकापुरी में हमारे सम्बंधी और बन्धु-बान्धव सव्ही लोग तो प्रसन्न हैं न? हमारे नाना शूरसेन तथा छोटे मामा वसुदेव तो कुशल से हैं न? हमारी मामी देवकी अपनी सातों बहनों तथा पुत्र-पौत्रादि सहित प्रसन्न तो हैं न? राजा उग्रसेन और उनके छोटे भाई देवक तो कुशल से हैं न? प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, साम्ब, ऋषभ आदि तो प्रसन्न हैं न? हमारे स्वामी भगवान श्रीकृष्णचन्द्र, उद्धव आदि अपने सेवकों सहित कुशल से तो हैं न? वे अपनी सुधर्मा सभा में नित्य आते हैं न? सत्यभामा, रुक्मिणी, जाम्वन्ती आदि उनकी सोलह सहस्त्र एक सौ आठ पटरानियाँ तो नित्य उनकी सेवा में लीन रहती हैं न? हे भाई अर्जुन! तुम्हारी कान्ति क्षीण क्यों हो रही है और तुम श्रीहीन क्यों हो रहे हो?"

धर्मराज युधिष्ठिर के प्रश्नों की बौछार से अर्जुन और भी व्याकुल एवं शोकाकुल हो गये। उनका रंग फीका पड़ गया, नेत्रों से अविरल अश्रुधारा बहने लगी, हिचकियाँ बँध गईं, रुँधे कण्ठ से उन्होंने कहा- "हे भ्राता! हमारे प्रियतम भगवान श्रीकृष्णचन्द्र ने हमें ठग लिया, वे हमें त्याग कर इस लोक से चले गये।

जिनकी कृपा से मेरे परम पराक्रम के सामने देवता भी सिर नहीं उठाते थे, मेरे उस परम पराक्रम को भी वे अपने साथ ले गये। प्राणहीन मुर्दे जैसी गति हो गई मेरी। मैं द्वारका से भगवान श्रीकृष्णचन्द्र की पत्नियों को हस्तिनापुर ला रहा था, किन्तु मार्ग में थोड़े से भीलों ने मुझे एक निर्बल की भाँति परास्त कर दिया। मैं उन अबलाओं की रक्षा नहीं कर सका। मेरी वे ही भुजाएँ हैं, वही रथ है, वही घोड़े हैं, वही गाण्डीव धनुष है और वही

बाण हैं, जिनसे मैंने बड़े-बड़े महारथियों के सिर बात की बात में उड़ा दिये थे। जिस अर्जुन ने कभी अपने जीवन में शत्रुओं से मुँहकी नहीं खाई थी, वही अर्जुन आज कायरों की भाँति भीलों से पराजित हो गया।

उनकी सम्पूर्ण पत्नियों तथा धन आदि को भील लोग लूट ले गये और मैं निहत्थे की भाँति खड़ा देखता रह गया। उन भगवान श्रीकृष्णचन्द्र के बिना मेरी सम्पूर्ण शक्ति क्षीण हो गई है। आपने जो द्वारका में जिन यादवों की कुशल पूछी है, वे समस्त यादव ब्राह्मणों के शाप से दुर्बुद्धि अवस्था को प्राप्त हो गये थे और वे अति मदिरा पान करके परस्पर एक-दूसरे को मारते-मारते मृत्यु को प्राप्त हो गये। यह सब उन्हीं भगवान श्रीकृष्णचन्द्र की लीला है।"

अर्जुन के मुख से श्रीकृष्ण के स्वधाम गमन और सम्पूर्ण यदुवंशियों के नाश का समाचार सुनकर युधिष्ठिर ने तुरन्त अपना कर्तव्य निश्चित कर लिया और अर्जुन से बोले- "हे अर्जुन! भगवान श्रीकृष्णचन्द्र ने अपने इस लौकिक शरीर से इस पृथ्वी का भार उतार कर उसे इस प्रकार त्याग दिया, जिस प्रकार कोई काँटे से काँटा निकालने के पश्चात् उन कोनों काँटों को त्याग देता है। अब घोर कलियुग भी आने वाला है। अतः अब शीघ्र ही हम लोगों को स्वर्गारोहण करना चाहिये।"

जब माता कुन्ती ने भगवान श्रीकृष्णचन्द्र के स्वधाम गमन का समाचार सुना तो उन्होंने श्रीकृष्णचन्द्र में अपना ध्यान लगाकर शरीर त्याग दिया। धर्मराज युधिष्ठिर ने अपने महापराक्रमी पौत्र परीक्षित को सम्पूर्ण जम्बूद्वीप का राज्य देकर हस्तिनापुर में उसका राज्याभिषेक किया और शूरसेन देश का राजा बनाकर मथुरापुरी में अनिरुद्ध के पुत्र बज्र का राजतिलक किया। तत्पश्चात् परमज्ञानी युधिष्ठिर ने प्रजापति यज्ञ किया और श्रीकृष्ण में लीन होकर सन्यास ले लिया। उन्होंने मान, अपमान, अहंकार तथा मोह को त्याग दिया और मन तथा वाणी को वश में कर लिया। सम्पूर्ण विश्व उन्हें ब्रह्म रूप दृष्टिगोचर होने लगा।

उन्होंने अपने केश खोल दिये, राजसी वस्त्राभूषण त्याग कर चीर वस्त्र धारण करके और अन्न-जल का परित्याग करके मौनव्रत धारण कर लिया। इतना करने के बाद बिना किसी की ओर दृष्टि किये घर से बाहर उत्तर दिशा की ओर चल दिये। भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव और द्रौपदी ने भी उनका अनुकरण किया।

भगवान श्रीकृष्णचन्द्र के प्रेम में मग्न होकर वे सब उत्तराखंड की ओर चल पड़े। उधर विदुर ने भी प्रभास क्षेत्र में भगवन्मय होकर शरीर त्याग दिया और अपने यमलोक को प्रस्थान कर गये। सभी पाण्डव मार्ग में श्रीहरि के अष्टोत्तरशत नामों का जप करते हुए यात्रा कर रहे थे। उस महापथ में क्रमशः द्रौपदी, सहदेव, नकुल, अर्जुन और भीमसेन एक-एक करके गिर पड़े। अब मात्र युधिष्ठिर ही जीवित बचे थे। कहते हैं कि देवराज इन्द्र के द्वारा लाये हुए रथ पर आरूढ़ होकर वह स्वर्ग चले गए।

द्रौपदी को जब समाचार मिला कि उसके पाँचों पुत्रों की हत्या अश्वत्थामा ने कर दी है, तब उसने आमरण अनशन कर लिया और कहा कि वह अनशन तभी तोड़ेगी, जब अश्वत्थामा के मस्तक पर सदैव बनी रहने वाली मणि उसे प्राप्त होगी।

अर्जुन अश्वत्थामा को पकड़ने के लिए निकल पड़े। अश्वत्थामा तथा अर्जुन के मध्य भीषण युद्ध छिड़ गया। अश्वत्थामा ने अर्जुन पर ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया, इस पर अर्जुन ने भी ब्रह्मास्त्र छोड़ा। नारद तथा व्यास के कहने से अर्जुन ने अपने ब्रह्मास्त्र का उपसंहार कर दिया, किन्तु अश्वत्थामा ने पांडवों को जड़-मूल से नष्ट करने के लिए अभिमन्यु की गर्भवती पत्नी उत्तरा पर ब्रह्मास्त्र का वार किया।

कृष्ण ने कहा- "उत्तरा को परीक्षित नामक बालक के जन्म का वर प्राप्त है। उसका पुत्र अवश्य ही जन्म लेगा। नीच अश्वत्थामा यदि तेरे शस्त्र-प्रयोग के कारण वह बालक मृत हुआ तो भी मैं उसे जीवनदान दूँगा। वह भूमि का सम्राट होगा और तू इतने वधों का पाप ढोता हुआ तीन हज़ार वर्ष तक निर्जन स्थानों में भटकेगा। तेरे शरीर से सदैव रक्त की दुर्गंध नि:सृत होती रहेगी। तू अनेक रोगों से पीड़ित रहेगा।"

व्यास ने भी श्रीकृष्ण के वचनों का अनुमोदन किया। अर्जुन अश्वत्थामा को रस्सी में बांधकर द्रौपदी के पास ले आये। द्रौपदी ने दयार्द्र होकर उसे छोड़ने को कहा किंतु श्रीकृष्ण की प्रेरणा से अर्जुन ने उसके सिर से मणि निकालकर द्रौपदी को दी।

उत्तरा के गर्भ में बालक ब्रह्मास्त्र के तेज से दग्ध होने लगा। तब श्रीकृष्ण ने सूक्ष्म रूप से उत्तरा के गर्भ में प्रवेश किया। उनका वह ज्योतिर्मय सूक्ष्म शरीर अँगूठे के आकार का था। वे चारों भुजाओं में शंख, चक्र, गदा, पद्म धारण किये हुते थे। कानों में कुण्डल तथा आँखें रक्तवर्ण थीं। हाथ में जलती हुई गदा लेकर उस गर्भ स्थित बालक के चारों ओर घुमाते थे।

जिस प्रकार सूर्यदेव अन्धकार को हटा देते हैं, उसी प्रकार वह गदा अश्वत्थामा के छोड़े हुए ब्रह्मास्त्र की अग्नि को शांत करती थी। गर्भस्थित वह बालक उस ज्योतिर्मय शक्ति को अपने चारों ओर घूमते हुये देखता था। वह सोचने लगता कि यह कौन है और कहाँ से आया है? कुछ समय पश्चात् पाण्डव यज्ञ की दीक्षा के निमित्त राजा मरुत का धन लेने के लिये उत्तर दिशा में गये हुए थे। उसी बीच उनकी अनुपस्थिति में तथा श्रीकृष्ण की उपस्थिति में दस मास पश्चात् उस बालक का जन्म हुआ। परन्तु बालक गर्भ से बाहर नकलते ही मृतवत् हो गया। बालक को मरा हुआ देखकर रनिवास में रुदन आरम्भ हो गया। शोक का समुद्र उमड़ पड़ा। कुरु वंश को पिण्डदान करने वाला केवल एक मात्र यही बालक उत्पन्न हुआ था, सो वह भी न रहा।

कुन्ती, द्रौपदी, सुभद्रा आदि सभी महान् शोक सागर में डूबकर आँसू बहाने लगीं। उत्तरा के गर्भ से मृत बालक के जन्म का समाचार सुनकर श्रीकृष्ण तुरन्त ही सात्यकि को साथ लेकर अन्तःपुर पहुँचे। वहाँ रनिवास में करुण क्रन्दन को सुनकर उनका हृदय भर अया। इतना करुण क्रन्दन युद्ध में मरे हुए पुत्रों के लिये भी सुभद्रा और द्रौपदी ने नहीं किया था, जितना कि उस नवजात शिशु की मृत्यु पर कर रही थीं।

भगवान श्रीकृष्ण को देखते ही वे उनके चरणों पर गिर पड़ीं और दहाड़ मार-मार कर विलाप करते हुए बोलीं- "हे जनार्दन! तुमने यह प्रतिज्ञा की थी कि यह बालक इस ब्रह्मास्त्र से मृत्यु को प्राप्त न होगा तथा साठ वर्ष तक जीवित रहकर धर्म का राज्य करेगा। किन्तु यह बालक तो मृतावस्था में पड़ा हुआ है। यह तुम्हारे पौत्र अभिमन्यु का बालक है। हे हरिसूदन! इस बालक को अपनी अमृत भरी दृष्टि से जीवन दान दो।"

श्रीकृष्ण सबको सान्त्वना देकर तत्काल प्रसूतिगृह में गये और वहाँ के प्रबन्ध का अवलोकन किया। चारों ओर जल के घट रखे थे, अग्नि भी जल रही थी, घी की आहुति दी जा रही थी, श्वेत पुष्प एवं सरसों बिखरे थे और चमकते हुए अस्त्र भी रखे हुए थे। इस विधि से यज्ञ, राक्षस एवं अन्य व्याधियों से प्रसूतिगृह को सुरक्षित रखा गया था। उत्तरा पुत्रशोक के कारण मूर्छित हो गई थी।

उसी समय द्रौपदी आदि रानियाँ वहाँ आकर कहने लगीं- "हे कल्याणी! तुम्हारे सामने जगत् के जीवनदाता साक्षात भगवान श्रीकृष्णचन्द्र, तुम्हारे श्वसुर खड़े हैं। चेतन हो जाओ।" श्रीकृष्ण ने कहा- "पुत्री! शोक न करो। तुम्हारा यह पुत्र अभी जीवित होता है। मैंने जीवन में कभी झूठ नहीं बोला है। सबके सामने मैंने प्रतिज्ञा की है वह अवश्य पूर्ण होगी। मैंने तुम्हारे इस बालक की रक्षा गर्भ में की है तो भला अब कैसे मरने दूँगा।"

इतना कहकर श्रीकृष्ण ने उस बालक पर अपनी अमृतमयी द्दष्टि डाली और बोले- "यदि मैंने कभी झूठ नहीं बोला है, सदा ब्रह्मचर्य व्रत का नियम से पालन किया है, युद्ध में कभी पीठ नहीं दिखाई है, मैंने कभी भूल से भी अधर्म नहीं किया है तो अभिमन्यु का यह मृत बालक जीवित हो जाये।"

उनके इतना कहते ही वह बालक हाथ पैर हिलाते हुए रुदन करने लगा। भगवान श्रीकृष्ण ने अपने सत्य और धर्म के बल से ब्रह्मास्त्र को पीछे लौटाकर ब्रह्मलोक में भेज दिया। उनके इस अद्‌भुत कर्म से बालक को जीवित देखकर अन्तःपुर की सारी स्त्रियाँ आश्चर्यचकित रह गईं और उनकी वन्दना करने लगीं। भगवान श्रीकृष्ण ने उस बालक का नाम 'परीक्षित' रखा, क्योंकि वह कुरुकुल के परिक्षीण (नाश) होने पर उत्पन्न हुआ था।

जब युधिष्ठिर लौटकर आये और पुत्र जन्म का समाचार सुना तो वे अति प्रसन्न हुए और उन्होंने असंख्य गाय, गाँव, हाथी, घोड़े, अन्न आदि ब्राह्मणों को दान दिये। उत्तम ज्योतिषियों को बुलाकर बालक के भविष्य के विषय में प्रश्न पूछे। ज्योतिषियों ने बताया कि वह बालक अति प्रतापी, यशस्वी तथा इच्क्ष्वाकु समान प्रजापालक, दानी, धर्मी, पराक्रमी और भगवान श्रीकृष्णचन्द्र का भक्त होगा।

एक ऋषि के शाप से तक्षक द्वारा मृत्यु से पहले संसार के माया मोह को त्यागकर गंगा के तट पर श्रीशुकदेव जी से आत्मज्ञान प्राप्त करेगा। धर्मराज युधिष्ठिर ज्योतिषियों के द्वारा बताये गये भविष्यफल को सुनकर प्रसन्न हुए और उन्हें यथोचित दक्षिणा देकर विदा किया। वह बालक शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा के समान दिन प्रतिदिन बढ़ने लगा। धर्मराज युधिष्ठिर ने राजा मरुत का गड़ा हुआ धन लाकर अश्वमेघ यज्ञ किया। श्रीकृष्ण की देख रेख-में यज्ञ निर्विघ्न सम्पन्न हो गया। सभी कार्य पूर्ण हो जाने पर श्रीकृष्ण भी द्वारका लौट गए।

पाण्डवों को मत्स्य नरेश विराट की राजधानी में निवास करते हुए दस माह व्यतीत हो गये। सहसा एक दिन राजा विराट का साला कीचक अपनी बहन सुदेष्णा से भेंट करने आया। जब उसकी दृष्टि सैरन्ध्री (द्रौपदी) पर पड़ी तो वह काम-पीड़ित हो उठा तथा सैरन्ध्री से एकान्त में मिलने के अवसर की ताक में रहने लगा।

द्रौपदी भी कीचक की कामुक दृष्टि को भाँप गई। उसने महाराज विराट एवं महारानी सुदेष्णा से कहा भी कि कीचक मुझ पर कुदृष्टि रखता है। मेरे पाँच गन्धर्व पति हैं। एक न एक दिन वे कीचक का वध अवश्य कर देंगे, किन्तु उन दोनों ने द्रौपदी की बात की कोई परवाह न की।

लाचार होकर एक दिन द्रौपदी ने भीमसेन को कीचक की कुदृष्टि तथा कुविचार के विषय में बता दिया। द्रौपदी के वचन सुनकर भीमसेन बोले- "हे द्रौपदी! तुम उस दुष्ट कीचक को अर्द्धरात्रि में नृत्यशाला में मिलने का संदेश दे दो। नृत्यशाला में तुम्हारे स्थान पर मैं जाकर उसका वध कर दूँगा।"

सैरन्ध्री ने बल्लव (भीमसेन) की योजना के अनुसार कीचक को रात्रि में नृत्यशाला में मिलने का संकेत दे दिया। द्रौपदी के इस संकेत से प्रसन्न कीचक जब रात्रि को नृत्यशाला में पहुँचा तो वहाँ पर भीमसेन द्रौपदी की एक साड़ी से अपना शरीर और मुँह ढँक कर वहाँ लेटे हुए थे।

उन्हें सैरन्ध्री समझकर कमोत्तेजित कीचक बोला- "हे प्रियतमे! मेरा सर्वस्व तुम पर न्यौछावर है। अब तुम उठो और मेरे साथ रमण करो।" कीचक के वचन सुनते ही भीमसेन उछल कर उठ खड़े हुए और बोले- "रे पापी! तू सैरन्ध्री नहीं अपनी मृत्यु के समक्ष खड़ा है। ले अब परस्त्री पर कुदृष्टि डालने का फल चख।" इतना कहकर भीमसेन ने कीचक को लात और घूँसों से मारना आरम्भ कर दिया। जिस प्रकार प्रचण्ड आँधी वृक्षों को

झकझोर डालती है, उसी प्रकार भीमसेन कीचक को धक्के मार-मार कर सारी नृत्यशाला में घुमाने लगे। अनेक बार उसे घुमा-घुमा कर पृथ्वी पर पटकने के बाद अपनी भुजाओं से उसकी गरदन को मरोड़कर उसे पशु की मौत मार डाला।

इस प्रकार कीचक का वध कर देने के बाद भीमसेन ने उसके सभी अंगों को तोड़-मरोड़ कर उसे माँस का एक लोंदा बना दिया और द्रौपदी से बोले- "पांचाली! आकर देखो, मैंने इस काम के कीड़े की क्या दुर्गति कर दी है।" उसकी उस दुर्गति को देखकर द्रौपदी को अत्यन्त सन्तोष प्राप्त हुआ।

फिर बल्लव और सैरन्ध्री चुपचाप अपने-अपने स्थानों में जाकर सो गये। प्रातःकाल जब कीचक के वध का समाचार सबको मिला तो महारानी सुदेष्णा, राजा विराट तथा कीचक के अन्य भाई आदि विलाप करने लगे। जब कीचक के शव को अन्त्येष्टि के लिए ले जाया जाने लगा तो द्रौपदी ने राजा विराट से कहा- "इसे मुझ पर कुदृष्टि रखने का फल मिल गया, अवश्य ही मेरे गन्धर्व पतियों ने इसकी यह दुर्दशा की है।" द्रौपदी के वचन सुनकर कीचक के भाइयों ने क्रोधित होकर कहा- "हमारे अत्यन्त बलवान भाई की मृत्यु इसी सैरन्ध्री के कारण हुई है। अतः इसे भी कीचक की चिता के साथ जला देना चाहिए।" इतना कहकर उन्होंने द्रौपदी को जबरदस्ती कीचक की अर्थी के साथ बाँध लिया और श्मशान की ओर ले जाने लगे।

कंक, बल्लव, वृहन्नला, तन्तिपाल तथा ग्रान्थिक के रूप में वहाँ उपस्थित पाण्डवों से द्रौपदी की यह दुर्दशा देखी नहीं जा रही थी, किन्तु अज्ञातवास के कारण वे स्वयं को प्रकट भी नहीं कर सकते थे। इसलिए भीमसेन चुपके से परकोटे को लाँघकर श्मशान की ओर दौड़ पड़े और रास्ते में कीचड़ तथा मिट्टी का सारे अंगों पर लेप कर लिया। फिर एक विशाल वृक्ष को उखाड़कर कीचक के भाइयों पर टूट पड़े और उनमें से कितनों को ही भीमसेन ने मार डाला, जो शेष बचे वे अपना प्राण बचाकर भाग निकले। इसके बाद भीमसेन ने द्रौपदी को सान्त्वना देकर महल में भेज दिया और स्वयं नहा-धोकर दूसरे रास्ते से अपने स्थान में लौट आये। कीचक तथा उसके भाइयों का वध होते देखकर राजा विराट सहित सभी लोग द्रौपदी से भयभीत रहने लगे।

7 कहानि कर्मविर की

कर्मविर नामी राजपूत राजपूताना की सेना में एक अफसर था। एक दिन उसके माता का पुत्र आया कि मैं बूढ़ी होती रहीं हूं, मरने से पहले एक बार तुम्हें देखने की अभिलाषा है, यहां आकर मुझे विदा कर आशीवार्द लो और क्रिया-कर्म करके आनंदपूर्वक नौकरी पर लौट जाना। तुम्हारे वास्ते मैंने एक कन्या खोज रखी है, वह बड़ी बुद्धिमती और धनवान है। यदि तुम्हें भाये तो उससे विवाह करके सुखपूर्वक घर ही पर रहना।

उसने सोचा—ठीक है, माता दिनोंदिन दुर्बल होती जा रही है, सम्भव है कि फिर मैं उसके दर्शन न कर सकूं। इस कारण चलना ही ठीक है। कन्या यदि सुंदर हुई तो विवाह करने में क्या हानि है? वह सेनापति से छुट्टी लेकर, साथियों से विदा हो, चलने को परस्तुत हो गया।

उस समय राजपूतों और मरहठों में युद्ध हो रहा था। रास्ते में सदैव भय रहता था। यदि कोई राजपूत अपना किला छोड़कर कुछ दूर बाहर निकल जाता था, तो मरहठे उसे पकड़कर कैद कर लेते थे। इस कारण यह प्रबन्ध किया गया था कि सप्ताह में दो बार सिपाहियों की एक कम्पनी मुसाफिरों को एक किले से दूसरे किले तक पहुंचा आया करती थी।

गरमी की रात थी। दिन निकलते ही किले के नीचे असबाब की गाड़ियां लादकर तैयार हो गईं। सिपाही बाहर आ गए और सबने सड़क की राह ली। कर्मविर घोड़े पर सवार हो, आगे चल रहा था। सोलह मील का सफर था, गाड़ियां धीरेधीरे चलती थीं। कभी सिपाही ठहर जाते थे, कभी गाड़ी का पहिया निकल जाता था तो कभी कोई घोड़ा अड़ जाता था।

दोपहर हो चुकी थी। रास्ता आधा भी नहीं कटा था। गरम रेत उड़ रही थी। धूप आग का काम कर रही थी। छाया कहीं नहीं थी। साफ मैदान था। सड़क पर न कोई वृक्ष, न झाड़ी। कर्मविर आगे था और कभी-कभी इस कारण ठहर जाता था कि गाड़ियां आकर मिल जायें। मन में विचारने लगा कि आगे क्यों न चलूं? घोड़ा तेज है, यदि मरहठे धावा करेंगे, तो घोड़ा दौड़ा कर निकल जाऊंगा। यह सोच ही रहा था कि परमविर बन्दूक हाथ में लिये उसके पास आया और बोला—आओ, आगे चलें। इस समय बड़ी गरमी है। भूख के मारे व्याकुल हो रहा हूं। सभी कपड़े पसीने में भीग रहे हैं। परमविर भारी-भरकम आदमी था। उसका मुंह लाल था।

कर्मविर—तुम्हारी बन्दूक भरी हुई है?

परमविर—हां, भरी हुई है।

कर्मविर—अच्छा चलो, पर बिछुड़ न जाना।

यह दोनों चल दिए, बातें करते जाते थे, पर ध्यान दाएं-बाएं था। साफ मैदान होने के कारण दृष्टि चारों ओर जा सकती थी। आगे चलकर सड़क दो पहाड़ियों के बीच से होकर निकलती थी।

कर्मविर—उस पहाड़ी पर चढ़ कर चारों ओर देख लेना उचित होगा। ऐसा न हो कि अचानक महरठे कहीं से आकर हमें पकड़ लें।

परमविर—अजी, चले भी चलो।

कर्मविर—नहीं, आप यहां ठहरिए, मैं जाकर देख आता हूं।

कर्मविर ने घोड़ा पहाड़ी की ओर फेर दिया। घोड़ा शिकारी था, उसे पक्षी की भांति ले उड़ा। वह अभी पहाड़ी की चोटी पर नहीं पहुंचा था कि सौ कदम आगे तीस मरहठे दिखाई पड़े। कर्मविर लौट पड़ा, परन्तु मरहठों ने उसे देख लिया और बन्दूकें संभालकर घोड़े दौड़ा, उस पर लपके। कर्मविर बेतहाशा नीचे उतरा और

परमविर को पुकारकर कहने लगा—बन्दूकें तैयार रखो और घोड़े से बोला—प्यारे, अब समय है। देखना, ठोकर न खाना नहीं तो झगड़ा समाप्त हो जायगा, एक बार बन्दूक ले लेने दे....फिर मैं किसी के बांधने का नहीं। उधर परमविर मरहठों को देखकर घोड़े को चाबुक मार, ऐसा भागा कि गरदे में घोड़े की पूंछ ही पूंछ दिखाई दी, और कुछ नहीं।

कर्मविर ने देखा कि बचने की आशा नहीं है, खाली तलवार से क्या बनेगा, वह किले की ओर भाग निकला; परन्तु छह मरहठे उस पर टूट पड़े। कर्मविर का घोड़ा तेज था, पर उनके घोड़े उससे भी तेज थे। तिस पर यह बात हुई कि वे सामने से आ रहे थे। कर्मविर चाहता था कि घोड़े की बाग मोड़कर उसे दूसरे रास्ते पर डाल दे, परन्तु घोड़ा इतना तेज जा रहा था कि रुक नहीं सका। सीधा मरहठों से जा टकराया। सजे घोड़े पर सवार बन्दूक उठाए लाल दाढ़ी वाला एक मरहठा दांत निकालता हुआ उसकी ओर लपका। कर्मविर ने कहा कि मैं इन दुष्टों को भली-भांति जानता हूं। यदि वे मुझे जीता पकड़ लेंगे तो किसी कन्दरा में फेंककर कोड़े मारा करेंगे, इसलिए या तो आगे निकलो, नहीं तो तलवार से एक दो को ढेर कर दो। मरना अच्छा है, कैद होना ठीक नहीं। कर्मविर और मरहठों में दस हाथ का ही अन्तर रह गया था कि पीछे से गोली चली। कर्मविर का घोड़ा घायल होकर गिरा और वह भी उसके साथ ही धरती पर आ गीरा।

कर्मविर उठना चाहता था कि दो मरहठे आकर उसकी मुस्किल करने लगे। कर्मविर ने धक्का देकर उन्हें दूर गिरा दिया, परन्तु दूसरों ने आकर बन्दूक के कुन्दों से उसे मारना शुरू किया और वह घायल होकर फिर पृथ्वी पर गिर पड़ा। मरहठों ने उसको कस कर पकड़ लिया, कपड़े फाड़ दिए, रुपया-पैसा सब छीन लिया। कर्मविर ने देखा कि घोड़ा जहां गिरा था, वहीं पड़ा है। एक मरहठे ने पास जाकर जीन उतारनी चाही। घोड़े के सिर में एक छेद हो गया था। उसमें से काला रक्त बह रहा था। दो हाथ इध-रउधर की धरती कीचड़ हो गई थी। घोड़ा चित्त पड़ा हवा में पैर पटक रहा था। मरहठे ने गले पर तलवार फेंक दी, घोड़ा मर गया। उसने जीन उतार ली।

लाल दाढ़ी वाला मरहठा घोड़े पर सवार हो गया। दूसरों ने कर्मविर को उसके पीछे बिठाकर उसे उसकी कमर से बांध दिया और जंगल का रास्ता लिया।

कर्मविर का बुरा हाल था। मस्तक फटा था, लहू बहकर आंखों पर जम गया था। कष्ट के मारे कंधा फटा जाता था। वह हिल नहीं सकता था। उसका सिर बारबार मरहठे की पीठ से टकराता था। मरहठे पहाड़ियों पर ऊपर-नीचे होते हुए एक नदी पर पहुंचे, उसे पार करके एक घाटी मिली। कर्मविर यह जानना चाहता था कि वे किधर जा रहे हैं। परन्तु उसके नेत्र बंद थे, वह कुछ न कुछ देख सका।

शाम होने लगी, मरहठे दूसरी नदी पार करके एक पथरीली पहाड़ी पर चढ़ गए। यहां धुआं और कुत्तों का भूंकना सुनायी दिया, मानो कोई बस्ती है। थोड़ी देर चलकर गांव आ गया। मरहठों ने गांव छोड़ दिया, कर्मविर को एक ओर धरती पर बिठा दिया। बालक आकर उस पर पत्थर फेंकने लगे। परन्तु एक मरहठे ने उन्हें वहां से भगा दिया। लाल दाढ़ी वाले ने एक सेवक को बुलाया, वह दुबला-पतला आदमी फटा हुआ कुरता पहने था। मरहठे ने उससे कुछ कहा, वह जाकर बेड़ी उठा लाया। मरहठों ने कर्मविर की मुस्कें खोलकर उसके पांव में बेड़ी डाल दी और उसे कोठरी में कैद करके ताला लगा दिया।

उस रात कर्मविर जरा भी नहीं सोया। गरमी की ऋतु में रातें छोटी होती हैं, शीघ्र प्रातः काल हो गया। दीवार में एक झरोखा था, उसी से अन्दर उजाला आ रहा था। झरोखे के द्वारा कर्मविर ने देखा कि पहाड़ी के नीचे एक सड़क उतरी है, दायीं ओर एक मरहठे का झोंपड़ा है। उसके सामने दो पेड़ हैं। द्वार पर एक काला कुत्ता बैठा हुआ है। पास एक बकरी और उसके बच्चे पूंछ हिलाते फिर रहे हैं। एक स्त्री चमकीले रंग की साड़ी पहने पानी की गागर सिर पर धरे हुए एक बालक की उंगली पकड़े झोंपड़े की ओर आ रही है। वह अन्दर गयी कि लाल दाढ़ी वाला मरहठा रेशमी कपड़े पहने, चांदी के मुट्ठे की तलवार लटकाए हुए बाहर आया और सेवक से कुछ बात करके चल दिया। फिर दो बालक घोड़ों को पानी पिलाकर लौटते हुए दिखाई पड़े। इतने में कुछ बालक कोठरी के निकट आकर झरोखे में टहनियां डालने लगे। प्यास के मारे कर्मविर का कंठ सूखा जाता था। उसने उन्हें पुकारा, परन्तु वे भाग गए।

इतने में किसी ने कोठरी का ताला खोला। लाल दाढ़ी वाला मरहठा भीतर आया। उसके साथ एक नाटा पुरुष था। उसका सांवला रंग, निर्मल काले नेत्र, गोल कपोल, कतरी हुई महीन दाढ़ी थी। वह प्रसन्न मुख हंसोड़ था। यह पुरुष लाल दाढ़ी वाले मरहठे से बहुत बिढ़िया वस्त्र पहने हुए था, सुनहरी गोट लगी हुई नीले रंग की रेशमी अचकन थी। चांदी के म्यान वाली तलवार, कलाबत्तू का जूता था। लाल दाढ़ी वाला मरहठा कुछ बड़-बड़ाता कर्मविर को कनखियों से देखता द्वार पर खड़ा रहा। सांवला पुरुष आकर कर्मविर के पास बैठ गया और आंखें मटकाकर जल्दी-जल्दी अपनी मातृभाषा में कहने लगा—बड़ा अच्छा राजपूत है।

कर्मविर ने एक अक्षर भी न समझा—हां, पानी मांगा। सांवला पुरुष हंसा, तब धर्म ने होंठ और हाथों के संकेत से जताया कि मुझे प्यास लगी है। सांवले पुरुष ने पुकारा— सुशीला!

एक छोटीसी कन्या दौड़ती हुई भीतर आयी। तेरह वर्ष की अवस्था, सावंला रंग, दुबली पतली, नेत्र काले और रसीले, सुन्दर बदन, नीली साड़ी, गले में स्वर्णहार पहने हुए। सांवले पुरुष की पुत्री मालूम पड़ती थी। पिता की आज्ञा पाकर वह पानी का एक लोटा ले आई और कर्मविर को भौंचक्की होकर देखने लगी कि वह कोई वनचर है।

फिर खाली लोटा लेकर सुशीला ने ऐसी छलांग मारी कि सांवला पुरुष हंस पड़ा। तब पिता के कहने से कुछ रोटी ले आई। इसके पीछे वे सब बाहर चले गए और कोठरी का ताला बंद कर दिया।

कुछ देर पीछे एक सेवक आकर मराठी में कुछ कहने लगा। धर्म ने समझा कि कहीं चलने को कहता है। वह उसके पीछे हो लिया, बेड़ी के कारण लंगड़ा कर चलता था। बाहर आकर धर्म ने देखा कि दस घरों का एक गांव है। एक घर के सामने तीन लड़के तीन घोड़े पकड़े खड़े हैं। सांवला पुरुष बाहर आया और धर्म को भीतर आने को कहा। धर्म भीतर चला गया, देखो कि मकान स्वच्छ है, गोबरी फिरी हुई है, सामने की दीवार को आगे गद्दा बिछा हुआ है। तकिये लगे हुए हैं। दायी-बायीं दीवारों पर परदे गिरे हुए हैं। उन पर चांदी के काम की बन्दूकें, पिस्तौलें और तलवारें लटकी हुई हैं। गद्दे पर पांच मरहठे बैठे हैं। एक सांवला पुरुष दूसरा लाल दाढ़ी वाला और तीन अतिथि—सब भोजन कर रहे हैं।

कर्मविर धरती पर बैठ गया। भोजन से निशिंचत होकर एक मरहठा बोला—देखो राजपूत, तुम्हें दयाराम ने पकड़ा है, (सांवले पुरुष की ओर उंगली करके) और सम्पतराव के हाथ बेच डाला है, अतएव अब सम्पतराव तुम्हारा स्वामी है।

कर्मविर कुछ न बोला। सम्पतराव हंसने लगा।

मरहठा—वह यह कहता है कि तुम घर से रुपये मंगवा लो, दण्ड दे देने पर तुमको छोड़ दिया जाएगा।

कर्मविर—कितने रुपये?

मरहठा—तीन हजार।

कर्मविर—मैं तीन हजार नहीं दे सकता।

मरहठा—कितना दे सकते हो?

कर्मविर—पांच सौ।

यह सुनकर मरहठे सिट पिटाए। सम्पतराव दयाराम से तकरार करने लगा और इतनी जल्दी-जल्दी बोलने लगा कि उसके मुंह से झाग निकल आया। दयाराम ने आंखें नीची कर लीं थोड़ी देर में मरहठे शांत हुए और फिर मोल-तोल करने लगे। एक मरहठे ने कहा—पांच सौ रुपये से काम नहीं चल सकता। दयाराम को सम्पतराव का रुपया देना है। पांच सौ रुपये में तो सम्पतराव ने तुम्हें मोल ही लिया है, तीन हजार से कम नहीं हो सकता। यदि रुपया न मंगाओगे तो तुम्हें कोड़े मारे जायेंगे।

धर्म ने सोचा कि जितना डरोगे, यह दुष्ट उतना ही डरायेंगे। वह खड़ा होकर बोला—इस भले मानुस से कह दो कि यदि मुझे कोड़ों का भय दिखायेगा तो मैं घर वालों को कुछ नहीं लिखूंगा। मैं तुम चाण्डालों से नहीं डरता।

सम्पतराव—अच्छा, एक हजार मंगाओ।

कर्मविर—पांच सौ से एक कौड़ी ज्यादा नहीं। यदि तुम मुझे मार ड़ालोगे तो इस पांच सौ से भी हाथ धो बैठोगे।

यह सुनकर मरहठे आपस में सलाह करने लगे। इतने में एक सेवक एक मनुष्य को लिये हुए भीतर आया। यह मनुष्य मोटा था, नंगे पैर, बेड़ी पड़ी हुई। कर्मविर उसे देखकर चकित हो गया। वे पुरुष परमविर था। सेवक ने परमविर को धर्म के पास बैठा दिया। वे एक-दूसरे से अपनी बिथा करने लगे। कर्मविर ने अपना वृत्तांत कह सुनाया। परमविर बोला—मेरा घोड़ा अड़ गया, बन्दूक रंजक चाट गई और सम्पतराव ने मुझे पकड़ लिया।

सम्पतराव—(फिर) अब तुम दोनों एक ही स्वामी के वश में हो। जो पहले रुपया दे देगा, वही छोड़ दिया जाएगा। (कर्मविर की ओर देखकर) देखा, तुम कैसे क्रोधी हो और तुम्हारा साथी कैसा सुशील है। उसने पांच हजार रुपये भेजने को घर लिख दिया है, इस कारण उसका पाल-नपोषण भली-भांति किया जाएगा।

कर्मविर—मेरा साथी जो चाहे सो करे, वह धनवान है, और मैं तो पांच सौ रुपये से अधिक नहीं दे सकता, चाहे मारो, चाहे छोड़ो।

मरहठे चुप हो गए। सम्पतराव झट से कलमदान उठा लाया। कागज, कमल, दवात निकाल कर धर्म की पीठ ठोंक, उसे लिखने को कहा। वह पांच सौ रुपये लेने पर राजी हो गया था।

कर्मविर—जरा ठहरो। देखो, हमारा पालन-पोषण भलीभांति करना, हमें एक साथ रखना, जिससे हमारा समय अच्छी तरह कट जाए। बेड़ियां भी निकाल दो।

सम्पतराव—जैसा चाहे वैसा भोजन करो। बेड़ियां नहीं निकाल सकता। शायद तुम भाग जाओ। हां, रात को निकाल दिया करुंगा।

कर्मविर ने पत्र लिख दिया। परन्तु पता सब झूठ लिखा, क्योंकि मन में निश्चय कर चुका था कि कभी न कभी भाग जाऊंगा।

तब मरहठों ने परमविर और कर्मविर को एक कोठरी में पहुंचाकर एक लोटा पानी, कुछ बाजरे की रोटियां देकर ऊपर से ताला बंद कर दिया।

कर्मविर और परमविर को इस प्रकार रहते रहते एक महीना गुजर गया। सम्पतराव उनको देखकर सदैव हंसता रहता था, पर खाने को बाजरे की अध पकी रोटी के सिवाय और कुछ न देता था। परमविर उदास रहता और कुछ न करता। दिन भर कोठरी में पड़ा सोया रहता और दिन गिनता रहता था कि रुपया कब आए कि छूट कर अपने घर पहुंचूं। धर्म तो जानता था कि रुपया कहां से आना है। जो कुछ घर भेजता था, माता उसी पर निवार्ह करती थी। वह बेचारी पांच सौ रुपये कैसे भेज सकती है। ईश्वर की दया होगी तो मैं भाग जाऊंगा। वह घात में लगा हुआ था। कभी सीटी बजाता हुआ गांव का चक्कर लगाता, कभी बैठकर मिट्टी के खिलौने और टोकरियां बनाता। वह हाथों का चतुर था।

एक दिन उसने एक गुड़िया बनाकर छत पर रख दी। गांव की स्त्रियां जब पानी भरने आयीं, तो सुशीला ने उनको बुला कर गुड़िया दिखलायी। वे सब हंसने लगीं। कर्मविर ने गुड़िया सबके आगे कर दी, परन्तु किसी ने नहीं ली। वह उसे बाहर रखकर कोठरी में चला गया कि देखें क्या होता है। सुशीला गुड़िया उठाकर भाग गई।

अगले दिन धर्म ने देखा कि सुशीला द्वार पर बैठी गुड़िया के साथ खेल रही है। एक बुढ़ि आयी। उसने गुड़िया छीनकर तोड़ डाली, सुशीला भाग गयी। कर्मविर ने और गुड़िया बनाकर सुशीला को दे दी। फल यह हुआ कि वह एक दिन छोटा सा लोटा लायी, भूमि पर रखा और धर्म को दिखाकर भाग गई। धर्म ने देखा तो उसमें दूध था। अब सुशीला नित्य अच्छे-अच्छे भोजन लाकर धर्म को देने लगी।

एक दिन आंधी आयी। एक घंटा मूसलाधार में बरसा, नदियां-नाले भर गए। बांध पर सात फुट पानी चढ़ आया। जहां-तहां झरने झरने लगे, धार ऐसी प्रबल थी कि पत्थर लुढक जाते थे। गांव की गलियों में नदियां बहने लगीं। आंधी थम जाने पर कर्मविर ने सम्पतराव से चाकू मांगकर एक पहिया बना, उसके दोनों ओर दो गुड़िया बांधकर पहिए को पानी में छोड़ दिया, वह पानी के बल से चलने लगा। सारा गांव इकट्ठा हो गया और गुड़ियों को नाचते देखकर तालियां बजाने लगा। सम्पतराव के पास एक पुरानी बिगड़ी हुई घड़ी पड़ी थी। कर्मविर ने उसे ठीक कर दिया। उसके पीछे और लोग अपने घंटे, पिस्तौल, घड़ियां लालाकर धर्म से ठीक कराने लगे। इस कारण सम्पतराव ने प्रसन्न होकर कर्मविर को एक चिमटी, एक बरमी और एक रेती दे दी।

एक दिन एक मरहठा रोगी हो गया। सब लोग कर्मविर के पास आकर दवा-दारू मांगने लगे। धर्म कुछ वैद्य तो था ही नहीं, पर उसने पानी में रेता मिलाकर कुछ मन्त्र सा पढ़ कर कहा कि जाओ, यह पानी रोगी को पिला दो। पानी पिलाने पर रोगी चंगा हो गया। धर्म के भाग्य अच्छे थे। अब बहुत से मरहठे उसके मित्र बन गए। हां, कुछ लोग अब भी उस पर संदेह करते थे।

दयाराम कर्मविर से चिढ़ता था। जब उसे देखता, मुंह फेर लेता। पहाड़ी के नीचे एक और बूढ़ा रहता था। मंदिर में आने के समय कर्मविर उसे देखा करता था। यह बूढ़ा नाटा था। जिसकि दाढ़ी-मूंछ बर्फ की भांति श्वेत, मुंह लाला, उसमें झुर्रियां पड़ी हुईं, नाक नुकीली, नेत्र निर्दयी, दो दाढ़ों के सिवाय सब दांत टूटे हुए। वहीं लकड़ी टेकता, चारों ओर भेड़िए की तरह झांकता हुआ मंदिर में जाने के समय जब कभी कर्मविर को देख पाता था तो जलकर राख हो जाता और मुंह फेर लेता था।

एक दिन कर्मविर बूढ़े का घर देखने के लिए पहाड़ी के नीचे उतरा। कुछ दूर जाने पर एक बगीचा मिला। चारों ओर पत्थर की दीवार बनी हुई थी। बीच में मेवे के वृक्ष लगे हुए थे। वृक्षों में एक झोंपड़ा था। कर्मविर आगे बढ़कर देखना चाहता था कि उसकी बड़ी लड़की। बूढ़ा चौंका। कमर से पिस्तौल निकालकर उसने कर्मविर पर गोली चलाई, पर वह दीवार की ओट में हो गया। बूढ़े को आकर सम्पतराव से कहते सुना कि कर्मविर बड़ा दुष्ट है। सम्पतराव ने धर्म को बुलाकर पूछा—तुम बूढ़े के घर क्यों गये थे?

कर्मविर बोला—मैंने उसका कुछ नहीं बिगाड़ा। मैं केवल यह देखने लगा था कि वह बूढ़ा कहां रहता है। सम्पत ने बूढ़े को शांत करने का बहुत यत्न किया, पर वह बड़-बड़ाता ही रहा। कर्मविर केवल इतना ही समझ सका कि बूढ़ा यह कह रहा है कि राजपूतों का गांव में रहना अच्छा नहीं, उन्हें मार देना चाहिए। बूढ़ा चल दिया, तो कर्मविर ने सम्पतराव से पूछा कि बूढ़ा कौन है?

सम्पतराव—यह बड़ा आदमी है, इसने बहुत राजपूत मारे हैं। पहले यह बड़ा धनाढ्य था। इसके तीन स्त्रियां और आठ पुत्र थे। सब एक ही गांव में रहा करते थे। एक दिन राजपूतों ने धावा करके गांव जला दिया। इसके सात पुत्र तो मर गए, आठवां कैद हो गया। यह बूढ़ा राजपूतों के पास जाकर और उनके संग रहकर अपने पुत्र की खोज लगाने लगा। अन्त में उसे पाकर अपने हाथ से उसका वध करके भाग आया। फिर विरक्त होकर तीर्थ-यात्रा को चला गया। अब यह पहाड़ी के नीचे रहता है। यह बूढ़ा कहता था कि तुम्हें मार डालना उचित है; परंतु मैं तुमको मार नहीं सकता, फिर रुपया कहां से मिलेगा? इसके सिवाय मैं तुम्हें यहां से जाने भी न दूंगा।

इस तरह धर्म यहां एक महीना रहा। दिन को वह इधर-उधर फिरा करता या कोई चीज़ बनाता, लेकिन रात को वह दीवार में छेद किया करता। दीवार पत्थर की थी, खोदना सहज नहीं था। लेकिन वह पत्थरों को रेती से काटता था। यहां तक कि अन्त में उसने अपने निकलने भर को एक छेद बना लिया। बस, अब उसे यह चिन्ता हुई कि रास्ता मालूम हो जाय।

एक दिन सम्पतराव शहर गया हुआ था। कर्मविर भोजन करके तीसरे पहर रास्ता देखने की इच्छा से सामने वाली पहाड़ी की ओर चल दिया। सम्पतराव बाहर जाते समय अपने पुत्र से सदैव कह जाया करता था कि कर्मविर को आंखों से परे न होने देना। इस कारण बालक उसके पीछे दौड़ा और चिल्लाकर कहने लगा— मत जाओ, मेरे पिता की आज्ञा नहीं है यदि तुम नहीं लौटोगे, तो मैं गांव वालों को बुला लूंगा।

कर्मविर बालक को फुसलाने लगा—मैं दूर नहीं जाता, केवल उस पहाड़ी पर जाने की इच्छा है। रोगियों के वास्ते मुझे एक बूटी की जरूरत है, तुम भी साथ चलो। बेड़ी के होते कैसे भागूंगा? असम्भव है। आओ, कल मैं तुमको तीर-कमान बना दूंगा।

बालक मान गया। पहाड़ी की चोटी कुछ दूर न थी। बेड़ी के कारण चलना कठिन था, परन्तु ज्यों - त्यों करके कर्मविर चोटी पर पहुंच कर चारों ओर देखने लगा। दक्षिण दिशा में एक घाटी दिखायी दी। उसमें घोड़े चल रहे थे। घाटी के नीचे एक गांव था। उससे परे एक ऊंची पहाड़ी थी, फिर एक और पहाड़ी थी। इन पहाड़ियों के बीचों-बीच जंगल था, उससे परे पहाड़ थे, एक से एक ऊंचे। पूर्व और पश्चिम दिशा में भी ऐसी ही पहाड़ियां थीं। कन्दराओं में से जहां-तहां गांवों का धुआं उठ रहा था। वास्तव में यह मरहठों का देश था। उत्तर की ओर देखा, तो पैरों तले एक नदी बह रही है और वहीं गांव है, जिसमें वह रहा करता था। गांव के चारों ओर बगीचे लगे हुए थे और स्त्रियां नदी पर बैठी वस्त्र धो रही थीं, और ऐसी जान पड़ती थीं मानो गुड़िया बैठी हैं। गांव से परे एक पहाड़ी थी, परन्तु दक्षिण दिशा वाली पहाड़ी से नीची। उससे परे दो पहाड़ियां और थीं, उन पर घना जंगल था। इनके बीच में मैदान था। मैदान के पार बहुत दूर पर कुछ धुआंसा दिखाई दिया। अब कर्मविर को याद आया कि किले में रहते हुए सूर्य कहां से उदय होता और कहां अस्त हुआ करता था। उसे निश्चय हो गया कि धुएं का बादल हमारा किला है और उसी मैदान में से जाना होगा।

अंधेरा हो गया। मंदिर का घंटा बजने लगा। पशु घर लौट आये। कर्मविर भी अपनी कोठरी में आ गया। रात अंधेरी थी। उसने उसी रात भागने का विचार किया पर दुर्भाग्य से सन्ध्या समय मरहठे घर लौट आये। आज उसके साथ एक मुर्दा था। मालूम होता था कि कोई मरहठा युद्ध में मारा गया है।

मरहठे उस शव को स्नान कराकर श्वेत वस्त्र लपेट, अर्थि बना 'राम नाम सत्त' कहते हुए गांव से बाहर जाकर शमशान भूमि में दाह करके घर लौट आये। तीन दिन उपवास करने के बाद चौथे दिन बाहर चले गए। सम्पतराव घर ही में रहा। रात अंधेरी थी, शुक्ल पक्ष अभी लगा ही था।

कर्मविर ने सोचा कि रात को भागना ठीक है। परमविर से कहा—भाई चरन सुरंग तैयार है। चलो, भाग चलें।

परमविर—(भयभीत होकर) रास्ता तो जानते ही नहीं, भागेंगे कैसे?

कर्मविर—रास्ता मैं जानता हूं।

परमविर—माना कि तुम रास्ता जानते हो, परन्तु एक रात में किले तक नहीं पहुंच सकते।

कर्मविर—यदि किले तक नहीं पहुंच सकेंगे तो रास्ते में कहीं जंगल में छिपकर दिन काट लेंगे। देखो, मैंने भोजन का प्रबन्ध भी कर लिया है। यहां पड़े-पड़े सड़ने में क्या लाभ है? यदि घर में रुपया न आया तो क्या बनेगा? राजपूतों ने एक मरहठा मार डाला है। इस कारण यह सब बहुत बिगड़े हुए हैं। भागना ही उचित है।

परमविर—अच्छा, चलो।

गांव में जब सन्नाटा हो गया, तो कर्मविर सुरंग से बाहर निकल आया। पर परमविर के पैर से एक पत्थर गिर पड़ा। धमाका हुआ तो सम्पतराव का कुत्ता भूंका, लेकिन कर्मविर ने उसे पहले ही हिला लिया था, उसका शब्द सुनकर वह चुप हो गया।

रात अंधेरी थी। तारे निकले हुए थे। चारों ओर सन्नाटा था। घाटियां धुन्ध से ढकी हुई थीं। चलते-चलते रास्ते में किसी छत पर से एक बूढ़े के राम नाम जपने की आवाज सुनाई दी। दोनों दुबक गए। थोड़ी देर में फिर सन्नाटा छा गया, तब वे आगे ब़े।

धुन्ध बहुत छा गई। कर्मविर तारों की ओर देखकर राह चलने लगा। ठंड के कारण चलना सहज न था, कर्मविर कूदता-फांदता चला जाता था, परमविर पीछे रहने लगा।

परमविर—भाई धर्म, जरा ठहरो, जूतों ने मेरे पैरों में छाले डाल दिए।

कर्मविर—जूते निकालकर फेंक दो, नंगे पैर चलो।

परमविर ने जूते निकाल कर फेंक दिए, पत्थरों ने उसके पांव घायल कर दिए। वह ठहर-ठहर कर चलने लगा।

कर्मविर—देखों चरन, पांव तो फिर चंगे हो जायेंगे, पर यदि मरहठों ने आ पकड़ा तो फिर समझ लो कि जान गई।

परमविर चुप होकर पीछे चलने लगा। थोड़ी दूर जाने पर कर्मविर बोला—हाय, हाय, हम रास्ता भूल गए, हमें तो बायीं ओर की पहाड़ी पर च़ना चाहिए था।

परमविर—ठहरो, दम जरा लेने दो। मेरे पैर घायल हो गए हैं। देखो, रक्त बह रहा है।

कर्मविर—कुछ चिन्ता नहीं, ये सब ठीक हो जायेंगे, तुम चले चलो।

वे लौट कर बायीं ओर की पहाड़ी पर चढ़ गए। आगे जंगल मिला। झाड़ियों ने उनके सब वस्त्र फाड़ डाले। इतने में कुछ आहट हुई, वे डर गए। समीप जाने पर मालूम हुआ कि बारहसिंगा भागा जा रहा है।

प्रातः काल होने लगा। किला यहां से अभी सात मील पर था। मैदान में पहुंच कर परमविर बैठ गया और बोला—मेरे पांव थक गए, मैं अब नहीं चल सकता।

कर्मविर—(क्रोध से) अच्छा तो राम-राम, मैं अकेला ही चलता हूं।

परमविर उठकर साथ हो लिया। तीन मील चलने पर अचानक सामने से घोड़े की टाप सुनाई दी। वे भागकर जंगल में घुस गए।

कर्मविर ने देखा कि घोड़े पर चढ़ा हुआ एक मरहठा जा रहा है। जब वह निकल गया तो धर्म बोला कि भगवान ने बड़ी दया की कि उसने हमें नहीं देखा। चरन भाई, अब चलो।

परमविर—मैं नहीं चल सकता, मुझमें ताकत नहीं।

परमविर मोटा आदमी था, ठंड के मारे उसके पैर अकड़ गए। कर्मविर उसे उठाने लगा, तो परमविर ने चीख मारी।

कर्मविर—हैंहैं! यह क्या, मरहठा तो अभी पास ही जा रहा है, कहीं सुन न ले अच्छा, यदि तुम नहीं चल सकते हो, तो मेरी पीठ पर बैठ जाओ।

कर्मविर ने परमविर को पीठ पर बिठला कर किले की राह ली।

कर्मविर—भाई परमविर, सीधी तरह बैठे रहो, गला क्यों घोंटते हो?

अब उधर की बात सुनिए। मरहठे ने परमविर का शब्द सुन लिया। उसने गोली चलायी, परन्तु खाली गई। मरहठा दूसरे साथियों को लेने के लिए घोड़ा दौड़ाकर चल दिया।

कर्मविर—चरन, मालूम होता है कि उस दुष्ट ने तुम्हारी आवाज सुन ली। वह अपने साथियों को बुलाने गया है। यदि उसके आने से पहले-पहले हम दूर नहीं निकल जायेंगे, तो समझो कि जान गई। (मन में) यह बोझा मैंने क्यों उठाया, यदि मैं अकेला होता तो अब तक कभी का निकल गया होता।

परमविर—तुम अकेले चले जाओ, मेरे कारण प्राण क्यों खोते हो?

कर्मविर—कदापि नहीं, साथी को छोड़ कर चल देना धर्म के विरुद्ध है।

कर्मविर फिर परमविर को कन्धे पर लादकर चलने लगा। आधा मील चलने पर एक झरना मिला। कर्मविर बहुत थक गया था। परमविर को कन्धे से उतार कर विश्राम करने लगा। पानी पीना ही चाहता था कि पीछे से घोड़ों की टापें सुनाई दीं। दोनों भागकर झाड़ियों में छिप गए।

मरहठे ठीक वहीं आकर ठहरे, जहां दोनों छिपे हुए थे। उन्होंने सूंघ लेने को कुत्ता छोड़ा। फिर क्या था, दोनों पकड़े गए। मरहठों ने दोनों को घोड़ो पर लाद लिया। राह में सम्पतराव मिल गया, अपने कैदियों को पहचाना। तुरन्त उन्हें अपने साथ वाले घोड़ों पर बैठाया और दिन निकलते निकलते वे सब ग्राम में पहुंच गए।

उसी समय बूढ़ा भी वहां आ गया। सब मरहठे विचार करने लगे कि क्या किया जाए। बूढ़े ने कहा कि कुछ मत करो, इन दोनों का तुरन्त वध कर दो।

सम्पतराव—मैंने तो उन पर रुपया लगाया है, मार कैसे डालूं?

बूढ़ा—राजपूतों को पालना पाप है। वे तुम्हें सिवाय दुःख के और कुछ न देंगे, मारकर झगड़ा समाप्त करो।

मरहठे इधर-उधर चले गए। सम्पतराव कर्मविर के पास आया और बोला—देखो कर्मविर, पन्द्रह दिन के अन्दर यदि रुपया न आया, और तुमने फिर भागने का साहस किया, तो मैं तुम्हें अवश्य मार डालूंगा, इसमें सन्देह नहीं। अब शीघ्र घर वालों को पत्र लिख डालो कि तुरन्त रुपया भेज दें।

दोनों ने पत्र लिख दिए। फिर वे पहले की भांति कैद कर दिए गए, परन्तु कोठरी में नहीं, अब की बार छः हाथ चौड़े गड्ढे में बंद किए गए।

अब उन्हें अत्यन्त कष्ट दिया जाने लगा। न बाहर जा पाते थे, न बेड़ियां निकाली जाती थीं। कुत्तों के समान अधपकी रोटी, एक लोटे में पानी पहुंचा दिया जाता था, और कुछ नहीं। गड्ढा में सीला था, उसमें अंधेरा और अति दुरंध थी। परमविर का सारा शरीर सूख गया, कर्मविर मन मलीन, तन छीन रहने लगा। करे तो क्या करे?

धर्म एक दिन बहुत उदास बैठा था कि ऊपर से रोटी गिरी, देखा तो सुशीला बैठी हुई है।

कर्मविर ने सोचा, क्या सुशीला इस काम में मेरी सहायता कर सकती है। अच्छा, इसके लिए कुछ खिलौने बनाता हूं। कल जब आयेगी, तब इसे देकर फिर बात करुंगा।

दूसरे दिन सुशीला नहीं आयी। कर्मविर के कान में घोड़ों के टापों की आवाज आयी। कई आदमी घोड़ों पर सवार उधर से निकल गए। वे सब बातें करते जाते थे। कर्मविर को और तो कुछ न समझ में आया—हां, 'राजपूत' शब्द बार-बार सुनायी दिया। इससे उसने अनुमान किया कि राजपूतों की सेना कहीं निकट आ पहुंची है।

तीसरे दिन सुशीला फिर आयी और दो रोटियां गड्ढे में फेंक दीं, तब कर्मविर बोला— तू कल क्यों नहीं आयी? देख, मैंने तेरे वास्ते ये खिलौने बनाये हैं।

सुशीला—खिलौने लेकर क्या करुंगी; मुझे खिलौने नहीं चाहिए। उन्होंने तुम्हें मार डालने का विचार कल पक्का कर लिया है। सब मरहठे इकट्ठे हुए थे, इसी कारण मैं कल नहीं आ सकी।

कर्मविर—कौन मारना चाहता है?

सुशीला—मेरा पिता। बूढ़े ने यह सलाह दी है कि राजपूतों की सेना निकट आ गई है, तुम्हें मार डालना ही ठीक है। मुझे तो यह सुनकर रोना आता है।

कर्मविर—यदि तुम्हें दया आती है, तो एक बांस ला दो।

सुशीला—यह नहीं हो सकता।

कर्मविर—सुशीला, दया कर, मैं हाथ जोड़कर कहता हूं कि एक बांस ला दो।

सुशीला—बांस कैसे लाऊं, वे सब घर पर बैठे हैं, देखे लेंगे। यह कह कर वह चली गई।

सूर्य अस्त हो गया। तारे चमकने लगे। चांद अभी नहीं निकला था, मन्दिर का घंटा बजा, बस फिर सन्नाटा हो गया। कर्मविर इस विचार में बैठा था कि सुशीला बांस लायेगी अथवा नहीं।

अचानक ऊपर से मिट्टी गिरने लगी। देखा तो सामने की दीवार में बांस लटक रहा है। कर्मविर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने बांस को नीचे खींच लिया।

बाहर आकाश में तारे चमक रहे थे। गड्ढे के किनारे पर मुंह रखकर धीरे से सुशीला ने कहा—कर्मविर, सिवाय दो के और सब बाहर चले गये हैं।

कर्मविर ने परमविर से कहा—भाई चरन! आओ, एक बार फिर यत्न कर देखें, हिम्मत न हारो। चलो, मैं तुम्हारी सहायता करने को तैयार हूं।

परमविर—मुझमें तो करवट लेने की शक्ति नहीं, चलना तो एक ओर रहा। मैं नहीं भाग सकता।

कर्मविर—अच्छा, राम-राम, परन्तु मुझे निर्दयी मत समझना।

कर्मविर परमविर से गले मिला, बांस का एक सिरा सुशीला ने पकड़ा, दूसरा सिरा कर्मविर ने। इस भांति वह बाहर निकल आया।

कर्मविर—सुशीला, तुम्हें भगवान कुशल से रखें। मैं जन्म भर तुम्हारा जस गाऊंगा। अच्छा, जीती रहो, मुझे भूल मत जाना।

कर्मविर ने थोड़ी दूर जाकर पत्थरों से बेड़ी तोड़ने का बहुत ही यत्न किया, पर वह न टूटी। वह उसे हाथ में उठा कर चलने लगा। वह चाहता था कि चन्द्रमा उदय होने से पहले जंगल में पहुंच जाय, परन्तु पहुंच न सका। चन्द्रमा निकल आया, चारों ओर उजाला हो गया, पर सौभाग्य से जंगल में पहुंचने तक राह में कोई न मिला।

कर्मविर फिर बेड़ी तोड़ने लगा, पर सारा यत्न निष्फल हुआ। वह थक गया, हाथ-पांव घायल हो गए। विचारने लगा, अब क्या करुं? बस, चलो, ठहरने का काम नहीं। यदि एक बार बैठ गया, तो फिर उठना कठिन हो जायेगा। माना कि प्रातः काल से पहले किले में नहीं पहुंच सकता, न सही, दिन-भर जंगल में काट दूंगा, रात आने पर फिर चल दूंगा सहसा पास से दो मरहठे निकले, वह झट झाड़ी में छिप गया।

चांद फीका पड़ गया, सवेरा होने लगा। जंगल पीछे छूट गया, साफ मैदान आ गया। किला दिखाई देने लगा। बायीं ओर देखने पर मालूम हुआ कि थोड़ी दूर पर कुछ राजपूत सिपाही खड़े हैं। कर्मविर मग्न हो गया और बोला—अब क्या है, परन्तु ऐसा न हो कि मरहठे पीछे से आ पकड़ें, मैं सिपाहियों तक न पहुंच सकूं, इस कारण जितना भागा जाए भागो।

इतने में बायीं ओर दो सौ कदम की दूरी पर कुछ मरहठे दिखाई दिए। धर्म निराश हो गया, चिल्ला उठा— भाइयो, दौड़ो, दौड़ो! मुझे बचाओ, बचाओ!

राजपूत सिपाहियों ने कर्मविर की पुकार सुन ली। मरहठे समीप थे, सिपाही दूर थे। वे दौड़े, कर्मविर भी बेड़ी उठाकर 'भाइयो, भाइयो' कहता हुआ ऐसा भागा कि झट सिपाहियों से जा मिला, मरहठे डरकर भाग गए।

राजपूत पूछने लगे कि तुम कौन हो और कहां से आये हो, परन्तु कर्मविर घबराया हुआ 'भाइयो, भाइयो' पुकारता चला जाता था। निकट आने पर सिपाहियों ने उसे पहचान लिया। कर्मविर सारा वृत्तान्त कहकर बोला— भाइयो, इस तरह मैं घर गया और विवाह किया। विधाता की यही लीला थी।

एक महीना पीछे पांच हजार मुद्रा देकर परमविर छूटकर किले में आया। वह उस समय अधमुए के समान हो रहा था।

८ परमेश्वर ने दर्शन देने का वादा किया

किसी गांव में यशोधन नाम का एक बनिया रहता था। सड़क पर उसकी छोटी सी दुकान थी। वहां रहते उकसे बहुत काल हो चुका था, इसलिए वहां के सब निवासियों को भली-भांति जानता था। वह बड़ा सदाचारी, सत्यवक्ता, व्यावहारिक और सुशील था। जो बात कहता, उसे जरूर पूरा करता। कभी धेले भर भी कम न तोलता और न घी-तेल मिला कर बेचता। चीज अच्छी न होती, तो ग्राहक से साफ-साफ कह देता, धोखा न देता था।

चौथेपन में वह भगवत्भजन का प्रेमी हो गया था। उसके और बालक तो पहले ही मर चुके थे, अंत में तीन साल का बालक छोड़कर उसकी स्त्री भी जाती रही। पहले तो यशोधन ने सोचा, इसे ननिहाल भेज दूं, पर फिर उसे बालक से प्रेम हो गया। वह स्वयं उसका पालन करने लगा। उसके जीवन का आधार अब यही बालक था। इसी के लिए वह रात-दिन काम किया करता था। लेकिन शायद संतान का सुख उसके भाग्य में लिखा ही न था।

पिल-पिलाकर बीस वर्ष की अवस्था में यह बालक भी यमलोक को सिधार गया। अब यशोधन के शोक की कोई सीमा न थी। उसका विश्वास हिल गया। सदैव परमात्मा की निन्दा कर वह कहा करता था कि परमेश्वर बड़ा निर्दयी और अन्यायी है; मारना बूढ़े को चाहिए था, मार डाला युवक को। यहां तक कि उसने ठाकुर के मंदिर में जाना भी छोड़ दिया।

एक दिन उसका पुराना मित्र, जो आठ वर्ष से तीर्थ यात्रा को गया हुआ था, उससे मिलने आया। यशोधन बोला—मित्र देखो, सर्वनाश हो गया। अब मेरा जीना अकारथ है। मैं नित्य परमात्मा से यही विनती करता हूं कि वह मुझे जल्दी इस मृत्युलोक से उठा ले, मैं अब किस आशा पर जीऊं।

मित्र—यशोधन, ऐसा मत कहो। परमेश्वर की इच्छा को हम नहीं जान सकते। वह जो करता है, ठीक करता है। पुत्र का मर जाना और तुम्हारा जीते रहना विधाता के वश है, और कोई इसमें क्या कर सकता है! तुम्हारे शोक का मूल कारण यह है कि तुम अपने सुख में सुख मानते हो। पराए सुख से सुखी नहीं होते।

यशोधन—तो मैं क्या करुं?

मित्र—परमात्मा की निष्काम भक्ति करने से अन्तःकरण शुद्ध होता है। जब सब काम परमेश्वर को अर्पण करके जीवन व्यतीत करोगे तो तुम्हें परमानंद प्राप्त होगा।

यशोधन—चित्त स्थिर करने का कोई उपाय तो बतलाइए।

मित्र—गीता, भक्तमालादि ग्रन्थों का श्रवण, पाठन, मनन किया करो। ये ग्रन्थ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों फलों को देने वाले हैं। इनका पढ़ना आरम्भ कर दो, चित्त को बड़ी शांति प्राप्ति होगी।

यशोधन ने इन ग्रन्थों को पढ़ना आरम्भ किया। थोड़े ही दिनों में इन पुस्तकों से उसे इतना प्रेम हो गया कि रात को बारह-बारह बजे तक गीता आदि पढ़ता और उसके उपदेशों पर विचार करता रहता था।

पहले तो वह सोते समय छोटे पुत्र को स्मरण करके रोया करता था, अब सब भूल गया। सदा परमात्मा में लवलीन रहकर आनंदपूर्वक अपना जीवन बिताने लगा। पहले इधर-उधर बैठकर हंसी-ठहाका भी कर लिया करता था, पर अब वह समय व्यर्थ न खोता था। या तो दुकान का काम करता था या रामायण पढ़ता था। तात्पर्य यह कि उसका जीवन सुधर गया।

एक रात रामायण पढ़ते-पढ़ते उसे ये चौपाइयां मिलीं—

एक पिता के विपुल कुमारा। होइ पृथक गुण शील अचारा॥

कोई पंडित कोइ तापस ज्ञाता। कोई धनवंत शूर कोइ दाता॥

कोइ सर्वज्ञ धर्मरत कोई। सब पर पितहिं परीति सम होई॥

अखिल विश्व यह मम उपजाया। सब पर मोहि बराबर दाया॥

यशोधन पुस्तक रखकर मन में विचारने लगा कि जब ईश्वर सब प्राणियों पर दया करते हैं, तो क्या मुझे सभी पर दया न करनी चाहिए? तत्पश्चात सुदामा और शबरी की कथा पढ़कर उसके मन में यह भाव उत्पन्न हुआ कि क्या मुझे भी भगवान के दर्शन हो सकते हैं!

यह विचारते-विचारते उसकी आंख लग गई। बाहर से किसी ने पुकारा—यशोधन! बोला—यशोधन! देख, याद रख, मैं कल तुझे दर्शन दूंगा।

यह सुनकर वह दुकान से बाहर निकल आया। वह कौन था? वह चकित होकर कहने लगा, यह स्वप्न है अथवा जागृति। कुछ पता न चला। वह दुकान के भीतर जाकर सो गया।

दूसरे दिन प्रातःकाल उठ, पूजा-पाठ कर, दुकान में आ, भोजन बना यशोधन अपने काम-धंधे में लग गया; परंतु उसे रात वाली बात नहीं भूलती थी।

रात्रि को पाला पड़ने के कारण सड़क पर बर्फ के ढेर लग गए थे। यशोधन अपनी धुन में बैठा था। इतने में बर्फ हटाने को कोई कुली आया। यशोधन ने समझा कृष्णचन्द्र आते हैं, आंखें खोलकर देखा कि बूढ़ा बालु बर्फ हटाने आया है, हंसकर कहने लगा—आवे बूढ़ा बालु और मैं समझूं कृष्ण भगवान्, वाह री बुद्धि!

बालु बर्फ हटाने लगा। बूढ़ा आदमी था। शीत के कारण बर्फ न हटा सका। थक - कर बैठ गया और शीत के मारे कांपने लगा। यशोधन ने सोचा कि बालु को ठंड लग रही है, इसे आग तपा दूं।

यशोधन—बालु भैया, यहां आओ, तुम्हें ठंड सता रही है। हाथ सेंक लो।

बालु दुकान पर आकर धन्यवाद करके हाथ सेंकने लगा।

यशोधन—भाई, कोई चिंता मत करो। बर्फ मैं हटा देता हूं। तुम बूढ़े हो, ऐसा न हो कि ठंड खा जाओ।

बालु—तुम क्या किसी की बाट देख रहे थे?

यशोधन—क्या कहूं, कहते हुए लज्जा आती है। रात मैंने एक ऐसा स्वप्न देखा है कि उसे भूल नहीं सकता। भक्तमाल पढ़ते-पढ़ते मेरी आंख लग गई। बाहर से किसी ने पुकारा—'यशोधन!' मैं उठकर बैठ गया। फिर शब्द हुआ, 'यशोधन! मैं तुम्हें दर्शन दूंगा!' बाहर जाकर देखता हूं तो वहां कोई नहीं। मैं भक्तमाल में सुदामा और शबरी के चरित पृकर यह जान चुका हूं कि भगवान ने प्रमेवश होकर किस प्रकार साधारण जीवों को दर्शन दिए हैं। वही अभ्यास बना हुआ है। बैठा कृष्णचन्द्र की राह देख रहा था कि तुम आ गए।

बालु—जब तुम्हें भगवान से प्रेम है तो अवश्य दर्शन होंगे। तुमने आग न दी होती, तो मैं मर ही गया था।

यशोधन—वाह भाई बालु, यह बात ही क्या है! इस दुकान को अपना घर समझो। मैं सदैव तुम्हारी सेवा करने को तैयार हूं।

बालु धन्यवाद करके चल दिया। उसके पीछे दो सिपाही आये। उनके पीछे एक किसान आया। फिर एक रोटी वाला आया। सब अपनी राह चले गए। फिर एक स्त्री आयी। वह फटे-पुराने वस्त्र पहने हुए थी। उसकी गोद में एक बालक था। दोनों शीत के मारे कांप रहे थे।

यशोधन—माई, बाहर ठंड में क्यों खड़ी हो? बालक को जाड़ा लग रहा है, भीतर आकर कपड़ा ओढ़ लो।

स्त्री भीतर आई। यशोधन ने उसे चूल्हे के पास बिठाया और बालक को मिठाई दी।

यशोधन—माई, तुम कौन हो?

स्त्री—मैं एक सिपाही की स्त्री हूं। आठ महीने से न जाने कर्मचारियों ने मेरे पति को कहां भेज दिया है, कुछ पता नहीं लगता। गर्भवती होने पर मैं एक जगह रसोई का काम करने पर नौकर थी। ज्योंही यह बालक उत्पन्न हुआ, उन्होंने इस भय से कि दो जीवों को अन्न देना पड़ेगा, मुझे निकाल दिया। तीन महीने से मारी-मारी फिरती हूं। कोई टहलनी नहीं रखता। जो कुछ पास था, सब बेचकर खा गई। इधर साहूकारिन के पास जाती हूं। स्यात नौकर रख ले।

यशोधन—तुम्हारे पास कोई ऊनी वस्त्र नहीं है?

स्त्री—वस्त्र कहां से हो, दाम भी तो पास नहीं।

यशोधन—यह लो लोई, इसे ओढ़ लो।

स्त्री—भगवान तुम्हारा भला करे। तुमने बड़ी दया की। बालक शीत के मारे मरा जाता था।

यशोधन—मैंने दया कुछ नहीं की। श्री कृष्णचन्द्र की इच्छा ही ऐसी है।

फिर यशोधन ने स्त्री को रात वाला स्वप्न सुनाया।

स्त्री—क्या अचरज है, दर्शन होने कोई असम्भव तो नहीं।

स्त्री के चले जाने पर सेव बेचने वाली आयी। उसके सिर पर सेवों की टोकरी थी और पीठ पर अनाज की गठरी। टोकरी धरती पर रखकर खम्भे का सहारा ले वह विश्राम करने लगी कि एक बालक टोकरी में से सेव उठाकर भागा। सेव वाली ने दौड़कर उसे पकड़ लिया और सिर के बाल खींचकर मारने लगी। बालक बोला—मैंने सेव नहीं उठाया।

यशोधन ने उठकर बालक को छुड़ा दिया।

यशोधन—माई, क्षमा कर, बालक है।

सेव वाली—यह बालक बड़ा उत्पाती है। मैं इसे दंड दिये बिना कभी न छोड़ूंगी।

यशोधन—माई, जाने दे, दया कर। मैं इसे समझा दूंगा। वह ऐसा काम फिर नहीं करेगा।

बुढ़िया ने बालक को छोड़ दिया। वह भागना चाहता था कि सूरत ने उसे रोका और कहा—बुढ़िया से अपना अपराध क्षमा कराओ और प्रतिज्ञा करो कि चोरी नहीं करोगे। मैंने आप तुम्हें सेव उठाते देखा है। तुमने यह झूठ क्यों कहा?

बालक ने रोकर बुढ़िया से अपना अपराध क्षमा कराया और प्रतिज्ञा की कि फिर झूठ नहीं बोलूंगा। इस पर यशोधन ने उसे एक सेव मोल ले दिया।

बुढ़िया —वाह-वाह, क्या कहना है! इस प्रकार तो तुम गांव के समस्त बालकों का सत्यानाश कर डालोगे। यह अच्छी शिक्षा है! इस तरह तो सब लड़के शेर हो जायेंगे।

यशोधन—माई, यह क्या कहती हो! बदला और दंड देना तो मनुष्यों का स्वभाव है, परमात्मा का नहीं, वह दयालु है। यदि इस बालक को एक सेव चुराने का कठिन दंड मिलना उचित है, तो हमको हमारे अनन्त पापों का क्या दंड मिलना चाहिए? माई, सुनो, मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूं। एक कर्मचारी पर राजा के दस हजार रुपये आते थे। उसके बहुत विनय करने पर राजा ने वह ऋ़ण छोड़ दिया। उस कर्मचारी की भी अपने सेवकों से सौ-सौ रुपये पावने थे, वह उन्हें बड़ा कष्ट देने लगा। उन्होंने बहु तेरा कहा कि हमारे पास पैसा नहीं, ऋण कहां से चुकावें? कर्मचारी ने एक न सुनी। वे सब राजा के पास जाकर फरियादी हुए। राजा ने उसी दम कर्मचारी को कठिन दंड दिया। तात्पर्य यह कि हम जीवों पर दया नहीं करेंगे, तो परमात्मा भी हम पर दया नहीं करेगा।

बुढ़िया —यह सत्य है, परंतु ऐसे बर्ताव से बालक बिगड़ जाते हैं।

यशोधन—कदापि नहीं। बिगड़ते नहीं, वरन सुधरते हैं।

बुढ़िया टोकरा उठाकर चलने लगी कि उसी बालक ने आकर विनय की कि माई, यह टोकरा तुम्हारे घर तक मैं पहुंचा आता हूं।

रात्रि होने पर यशोधन भोजन करने के बाद गीता पाठ कर रहा था कि उसकी आंख झपकी और उसने यह दृश्य देखा—

'यशोधन! यशोधन!'

यशोधन—कौन हो?

'मैं—बालु।' इतना कहकर बालु हंसता हुआ चला गया।

फिर आवाज आयी—'मैं हूं।' यशोधन देखता है कि दिन वाली स्त्री आई है, बालक को गोद में लिये, सम्मुख आकर खड़ी हुई, हंसी और लोप हो गई। फिर शब्द सुनाई दिया—'मैं हूं।' देखा कि सेव बेचने वाली और बालक हंसते-हंसते सामने आये और अन्तर्धान हो गए!

यशोधन उठकर बैठ गया। उसे विश्वास हो गया कि कृष्णचन्द्र के दर्शन हो गए, क्योंकि प्राणिमात्र पर दया करना ही परमात्मा का दर्शन करना है।

9 रीक्ष का शिकार

हम एक दिन रीछ के शिकार को निकले। मेरे साथी ने एक रीछ पर गोली चलायी। वह गहरी नहीं लगी। रीछ भाग गया। बर्फ पर लहू के चिह्न बाकी रह गए।

हम एकत्र होकर यह विचार करने लगे कि तुरन्त पीछा करना चाहिए या दो तीन दिन ठहर कर उसके पीछे जाना चाहिए। किसानों से पूछने पर एक बूढ़ बोला—तुरन्त पीछा करना ठीक नहीं, रीछ को टिक जाने दो। पांच दिन पीछे शायद वह मिल जाए। अभी पीछा करने पर तो वह डरकर भाग जायेगा।

इस पर एक दूसरा जवान बोला—नहीं नहीं, हम आज ही रीछ को मार सकते हैं। वह बहुत मोटा है, दूर नहीं जा सकता। सूर्य अस्त होने से पहले कहीं न कहीं टिक जाएगा, नहीं तो मैं बर्फ पर चलने वाले जूते पहनकर ढूंढ़ निकालूंगा।

मेरा साथी तुरन्त रीछ का पीछा करना नहीं चाहता था, पर मैंने कहा—झगड़ा करने से क्या मतलब? आप सब गांव को जाइए। मैं और दुगार (मेरे सेवक का नाम) रीछ का पीछा करते हैं। मिल गया तो वाह-वाह! दिनभर और करना ही क्या है?

और सब तो गांव को चले गए, मैं और दुगार जंगल में रह गए। अब हम बन्दूकें संभालकर, कमर कस, रीछ के पीछे हो लिये।

रीछ का निशान दूर से दिखाई पड़ता था। प्रतीत होता था कि भागते समय कभी तो वह पेट तक बर्फ में धंस गया है, कभी बर्फ चीरकर निकला है। पहले पहले तो हम उसकी खोज के पीछे बड़े-बड़े वृक्षों के नीचे चलते रहे, परन्तु घना जंगल आ जाने पर दुगार बोला—अब यह राह छोड़ देनी चाहिए, वह यहीं कहीं बैठ गया है। धीरे-धीरे चलो, ऐसा न हो कि डर कर भाग जाए।

हम राह छोड़कर बायीं ओर लौट पड़े। पांच सौ कदम जाने पर सामने वही चिह्न फिर दिखाई दिए। उसके पीछे चलते-चलते एक सड़क पर जा निकले। चिह्नों से जान पड़ता था कि रीछ गांव की ओर गया है।

दुगार्—महाराज, सड़क पर खोज लगाने से अब कोई लाभ नहीं। वह गांव की ओर नहीं गया। आगे चलकर चिह्नों से पता लग जायेगा कि वह किस ओर गया है।

एक मील आगे जाने पर चिह्नों से ऐसा प्रकट होता था कि रीछ सड़क से जंगल की ओर नहीं, जंगल से सड़क की ओर आया है। उसकी उंगलियां सड़क की तरफ थीं। मैंने पूछा कि दुगार्, क्या यह कोई दूसरा रीछ है?

दुगार्—नहीं, यह वही रीछ है, उसने धोखा दिया है। आगे चलकर दुगार का कहना सत्य निकला, क्योंकि रीछ दस कदम सड़क की ओर आकर फिर जंगल की ओर लौट गया था।

दुगार्—अब हम उसे अवश्य मार लेंगे। आगे दल-दल है, वह वहीं जाकर बैठ गया है, चलिए।

हम दोनों आगे बढ़े। कभी तो मैं किसी झाड़ी में फंस जाता था, बर्फ पर चलने का अभ्यास न होने के कारण कभी जूता पैर से निकल जाता था। पसीने से भीग कर मैंने कोट कंधे पर डाल लिया, लेकिन दुगार बड़ी फुर्ती से चला जा रहा था। दो मील चलकर हम झील के उस पार पहुंच गए।

दुगार्—देखो, सुन-सान झाड़ी पर चिड़ियां बोल रही हैं, रीछ वहीं है। चिड़िया रीछ की महक पा गई हैं।

हम वहां से हटकर आधा मील चले होंगे कि फिर रीछ का खुर दिखाई दिया। मुझे इतना पसीना आ गया कि मैंने साफा भी उतार दिया। दुगार को पसीना आ गया था।

दुगार्—स्वामी, बहुत दौड़ धूप की, अब जरा विश्राम कर लीजिए।

संध्या हो चली थी। हम जूते उतार कर धरती पर बैठ गए और भोजन करने लगे। भूख के मारे रोटी ऐसी अच्छी लगी कि मैं कुछ कह नहीं सकता। मैंने दुगार से पूछा कि गांव कितने दूर है?

दुगार्—कोई आठ मील होगा, हम आज ही वहां पहुंच जायेंगे। आप कोट पहन लें, ऐसा न हो सर्दी लग जाए।

दुगार ने बर्फ ठीक करके उस पर कुछ झाड़ियां बिछाकर मेरे लिए बिछौना तैयार कर दिया। मैं ऐसा बेसुध सोया कि इसका ध्यान ही न रहा कि कहां हूं। जागकर देखता हूं कि एक बड़ा भारी दीवान खाना बना हुआ है, उसमें बहुत से उजले चमकते हुए खम्भे लगे हुए है, उसकी छत तवे की तरह काली है, उसमें रंगदार अनन्त दीपक जगमगा रहे हैं। मैं चकित हो गया। परन्तु तुरन्त मुझे याद आई कि यह तो जंगल है, यहां दीवान-खाना कहां? असल में श्वेत खम्भे तो बर्फ से ढके हुए वृक्ष थे, रंगदार दीपक उनकी पत्तियों में से चमकते हुए तारे थे।

बर्फ गिर रही थी, जंगल में सन्नाटा था। अचानक हमें किसी जानवर के दौड़ने की आहट मिली। हम समझे कि रीछ है, परन्तु पास जाने पर मालूम हुआ कि जंगली खरहा है। हम गांव की ओर चल दिए। बर्फ ने सारा जंगल श्वेत बना रखा था। वृक्षों की शाखाओं में से तारे चमकते और हमारा पीछा करते ऐसे दिखाई देते थे कि मानो सारा आकाश चलायमान हो रहा है।

जब हम गांव पहुंचे तो मेरा साथी सो गया था। मैंने उसे जगा कर सारा वृत्तांत कह सुनाया और जमींदार से अगले दिन के लिए शिकारी एकत्र करने को कहा। भोजन करके सो रहे। मैं इतना थक गया था कि यदि मेरा साथी मुझे न जगाता, तो मैं दोपहर तक सोया पड़ा रहता। जागकर मैंने देखा कि साथी वस्त्र पहने तैयार है और अपनी बन्दूक ठीक कर रहा है।

मैं—दुगार कहां है?

साथी—उसे गये देर हुई। वह कल के निशान पर शिकारियों को इकट्ठा करने गया है।

हम गांव के बाहर निकले। धुन्ध के मारे सूर्य दिखाई न पड़ता था! दो मील चलकर धुआं दिखाई पड़ा। समीप जाकर देखा कि शिकारी आलू भून रहे हैं और आपस में बातें करते जाते हैं। दुगार भी वहीं था। हमारे पहुंचने पर वे सब उठ खड़े हुए। रीछ को घेरने के लिए दुगार उन सबको लेकर जंगल की ओर चल दिया। हम भी उसके पीछे हो लिये। आधा मील चलने पर दुगार ने कहा कि अब कहीं बैठ जाना उचित है। मेरे बायीं ओर ऊंचे-ऊंचे वृक्ष थे। सामने मनुष्य के बराबर ऊंची बर्फ से ढँकी हुई घनी झाड़ियां थीं, इनके बीच से होकर

एक पगडंडी सीधी वहां पहुंचती थी, जहां मैं खड़ा हुआ था। दायीं ओर साफ मैदान था। वहां मेरा साथी बैठ गया।

मैंने अपनी दोनों बन्दूकों को भली-भांति देखकर विचारा कि कहां खड़ा होना चाहिए। तीन कदम पीछे हटकर एक ऊंचा वृक्ष था। मैंने एक बन्दूक भर कर तो उसके सहारे खड़ी कर दी, दूसरी घोड़ा चढ़ाकर हाथ में ले ली। म्यान से तलवार निकाल कर देख ही रहा था कि अचानक जंगल में से दुगार का शब्द सुनाई दिया— "वह उठा, वह उठा!" इस पर सब शिकारी बोल उठे, सारा जंगल गूंज पड़ा। मैं घात में था कि रीछ दिखाई पड़ा और मैंने तुरंत गोली छोड़ी।

अकस्मात बायीं ओर बर्फ पर कोई काली चीज दिखाई दी। मैंने गोली छोड़ी, परंतु खाली गई और रीछ भाग गया।

मुझे बड़ा शोक हुआ कि अब रीछ इधर नहीं आएगा। शायद साथी के हाथ लग जाए। मैंने फिर बन्दूक भर ली, इतने में एक शिकारी ने शोर मचाया—"यह है, यह है यहां आओ!"

मैंने देखा कि दुगार भागकर मेरे साथी के पास आया और रीछ को उंगली से दिखाने लगा। साथी ने निशाना लगाया। मैंने समझा, उसने मारा, परंतु वह गोली भी खाली गई, क्योंकि यदि रीछ गिर जाता तो साथी अवश्य उसके पीछे दौड़ता। वह दौड़ा नहीं, इससे मैंने जाना कि रीछ मरा नहीं।

हैं! क्या आपत्ति आयी, देखता हूं कि रीछ डरा हुआ अंधा-धुन्ध भागा मेरी ओर आ रहा है। मैंने गोली मारी, परन्तु खाली गई। दूसरी छोड़ी, वह लगी तो सही, परन्तु रीछ गिरा नहीं। मैं दूसरी बन्दूक उठाना ही चाहता था कि उसने झपट कर मुझे दबा लिया और लगा मेरा मुंह नोंचने। जो कष्ट मुझे उस समय हो रहा था, मैं उसे वर्णन नहीं कर सकता। ऐसा प्रतीत होता था मानो कोई छुरियों से मेरा मुंह छील रहा है।

इतने में दुगार और साथी रीछ को मेरे ऊपर बैठा देखकर मेरी सहायता को दौड़े। रीछ उन्हें देख, डरकर भाग गया। सारांश यह कि मैं घायल हो गया, पर रीछ हाथ न आया और हमें खाली हाथ गांव लौटना पड़ा।

एक मास पीछे हम फिर उस रीछ को मारने के लिए गये, मैं फिर भी उसे न मार सका उसे दुगार ने मारा, वह बड़ा भारी रीछ था। उसकी खाल अब तक मेरे कमरे में बिछी हुई है।

10 अर्जुन और मोहन किसान

एक गांव में अजुर्न और मोहन नाम के दो किसान रहते थे। अजुर्न धनी था, मोहन साधारण पुरुष था। उन्होंने चिरकाल से बद्रीनारायण की यात्रा का इरादा कर रखा था।

अजुर्न बड़ा सुशील, सहासी और दृढ़ था। दो बार गांव का चौधरी रह कर उसने बड़ा अच्छा काम किया था। उसके दो लड़के तथा एक पोता था। उसकी साठ वर्ष की अवस्था थी, परन्तु दाढ़ी अभी तक नहीं पकी थी।

मोहन प्रसन्न बदन, दयालु और मिलनसार था। उसके दो पुत्र थे, एक घर में था, दूसरा बाहर नौकरी पर गया हुआ था। वह खुद घर में बैठा - बैठा बढ़ई का काम करता था।

बद्रीनारायण की यात्रा का संकल्प किए उन्हें बहुत दिन हो चुके थे। अजुर्न को छुट्टी ही नहीं मिलती थी। एक काम समाप्त होता था कि दूसरा आकर घेर लेता था। पहले पोते का ब्याह करना था, फिर छोटे लड़के का गौना आ गया, इसके पीछे मकान बनना प्रारम्भ हो गया। एक दिन बाहर लकड़ी पर बैठ कर दोनों बूढ़ो में बातें होने लगी।

मोहन—क्यों भाई, अब यात्रा करने का विचार कब है?

अजुर्न—जरा ठहरो। अब की वर्ष अच्छा नहीं लगा। मैंने यह समझा था कि सौ रुपये में मकान तैयार हो जाएगा। तीन सौ रुपये लगा चुके हैं अभी दिल्ली दूर है। अगले वर्ष चलेंगे।

मोहन—शुभ कार्य में देरी करना अच्छा नहीं होता। मेरे विचार में तो तुरंत चल देना ही उचित है, दिन बहुत अच्छे हैं।

अजुर्न—दिन तो अच्छे हैं, पर मकान को क्या करुं! इसे किस पर छोडूं?

मोहन—क्या कोई संभालने वाला ही नहीं, बड़े लड़के को सौंप दो?

अजुर्न—उसका क्या भरोसा है?

मोहन—वाह-वाह, भला बताओ तो कि मरने पर कौन संभालेगा? इससे तो यह अच्छा है कि जीते जी संभाल लें। और तुम सुख से जीवन व्यतीत करो।

अजुर्न—यह सत्य है, पर किसी काम में हाथ लगाकर उसे पूरा करने की इच्छा सभी की होती है।

मोहन—तो काम कभी पूरा नहीं होता, कुछ न कुछ कसर रह ही जाती है। कल ही की बात है कि रामनवमी के लिए स्त्रियां कई दिन से तैयारी कर रही थीं—कहीं लिपाई होती थी, कहीं आटा पीसा जाता था। इतने में रामनवमी आ पहुंची। बहू बोली, परमेश्वर की बड़ी कृपा है कि त्योहार बिना बुलाए ही आ जाते हैं, नहीं तो हम अपनी तैयारी ही करती रहें।

अजुर्न—एक बात और है, इस मकान पर मेरा बहुत रुपया खर्च हो गया है। इस समय रुपये का भी तोड़ा है। कमसे-कम सौ रुपये तो हों, नहीं तो यात्रा कैसे होगी।

मोहन—(हंसकर) अहा हा! जो जितना धनवान होता है, वह उतना ही कंगाल होता है तुम और रुपये की चिंता! जाने दो। मैं सच कहता हूं, इस समय मेरे पास एक सौ रुपये भी नहीं, परन्तु जब चलने का निश्चय हो जायेगा, तो रुपया भी कहीं न कहीं से अवश्य आ ही जाएगा। बस, यह बतलाओ कि चलना कब है?

अजुर्न—तुमने रुपये जोड़ रखे होंगे, नहीं तो कहां से आ जाएगा, बताओ तो सही।

मोहन—कुछ घर में से, कुछ माल बेचकर। पड़ोसी कुछ चौखट आदि मोल लेना चाहता है, उसे सस्ती दे दूंगा।

अजुर्न—सस्ती बेचने पर पछतावा होगा।

मोहन—मैं सिवाय पाप के और किसी बात पर नहीं पछताता। आत्मा से कौन चीज़ प्यारी है!

अजुर्न—यह सब ठीक है, परन्तु घर के कामकाज बिसराना भी उचित नहीं।

मोहन—और आत्मा को बिसारना तो और भी बुरा है। जब कोई बात मन में ठान ली तो उसे बिना पूरा किए न छोड़ना चाहिए।

अन्त में चलना निश्चय हो गया। चार दिन पीछे जब विदा होने का समय आया, तो अजुर्न बड़े लड़के को समझाने लगा कि मकान पर छत इस प्रकार डालना, भूसी बखार में इस भांति जमा कर देना, मंडी में जाकर अनाज इस भाव से बेचना, रुपये संभाल कर रखना, ऐसा न हो खो जावें, घर का प्रबन्ध ऐसा रखना कि किसी प्रकार की हानि न होने पावे। उसका समझाना समाप्त ही न होता था।

इसके प्रतिकूल मोहन ने अपनी स्त्री से केवल इतना ही कहा कि तुम चतुर हो, सावधानी से काम करती रहना।

मोहन तो घर से प्रसन्न मुख बाहर निकला और गांव छोड़ते ही घर के सारे बखेड़े भूल गया। साथी को प्रसन्न रखना, सुख-पूर्वक यात्रा कर घर लौट आना उसका मन्तव्य था। राह चलता था तो ईश्वर सम्बन्धी कोई भजन गाता था या किसी महापुरुष की कथा कहता। सड़क पर अथवा सराय में जिस किसी से भेंट हो जाती, उससे बड़ी नम्रता से बोलता।

अजुर्न भी चुपके -चुपके चल तो रहा था, परन्तु उसका चित्त व्याकुल था। सदैव घर की चिंता लगी रहती थी। लड़का अनजान है, कौन जाने क्या कर बैठे? अमुक बात कहना भूल आया। ओहो, देखू, मकान की छत पड़ती है या नहीं। यही विचार उसे हरदम घेरे रहते थे यहां तक कि कभी-कभी लौट जाने को तैयार हो जाता था।

चलते-चलते एक महीना पीछे वे पहाड़ पर पहुंच गए। पहाड़ी बड़े अतिथि-सेवक होते हैं अब तक यह मोल का अन्न खाते रहे थे। अब उनकी खातिरदारी होने लगी।

आगे चलकर वे ऐसे देश में पहुंचे, जहां दुर्घट अकाल पड़ा हुआ था। खेतियां सब सूख गई थीं, अनाज का एक दाना भी नहीं उगा था। धनवान कंगाल हो गए थे धनहीन देश को छोड़कर भीख मांगने बाहर भाग गए थे।

यहां उन्हें कुछ कष्ट हुआ, अन्न कम मिलता था और वह भी बड़ा महंगा। रात को उन्होंने एक जगह विश्राम किया। अगले दिन चलते-चलते एक गांव मिला। गांव के बाहर एक झोंपड़ा था। मोहन थक गया था, बोला—मुझे प्यास लगी है। तुम चलो, मैं इस झोंपड़े से पानी पीकर अभी तुम्हें आ मिलता हूं। अजुर्न बोला—अच्छा, पी आओ। मैं धीरे-धीरे चलता हूं।

झोंपड़े के पास जाकर मोहन ने देखा कि उसके आगे धूप में एक मनुष्य पड़ा है। मोहन ने उससे पानी मांगा, उसने कोई उत्तर नहीं दिया। मोहन ने समझा कि कोई रोगी है।

समीप जाने पर झोंपड़े के भीतर एक बालक के रोने का शब्द सुनायी दिया। किवाड़ खुले हुए थे। वह भीतर चला गया।

उसने देखा कि नंगे सिर केवल एक चादर ओढ़े एक बुढ़ि धरती पर बैठी है, पास में भूख का मारा हुआ एक बालक बैठा रोटी, रोटी, पुकार रहा है। चूल्हे के पास एक स्त्री तड़प रही है, उसकी आंखें बन्द हैं, कंठ रुका हुआ है।

मोहन को देखकर बुयि ने पूछा—तुम कौन हो? क्या मांगते हो? हमारे पास कुछ नहीं हैं।

मोहन—मुझे प्यास लगी है, पानी मांगता हूं।

बुढ़ि—यहां न बर्तन है, न कोई लाने वाला। यहां कुछ नहीं। जाओ, अपनी राह लो।

मोहन—क्या तुममें से कोई उस स्त्री की सेवा नहीं कर सकता?

बुढ़ि—कोई नहीं। बाहर मेरा लड़का भूख से मर रहा है, यहां हम भूख से मर रहे हैं।

यह बातें हो ही रही थीं कि बाहर से वह मनुष्य भी गिरता - पड़ता भीतर आया और बोला—काल और रोग दोनों ने हमें मार डाला। यह बालक कई दिन से भूखा है क्या करुं—यह कहकर रोने लगा और उसकी हिचकी बंध गई।

मोहन ने तुरन्त अपने थैले में से रोटी निकालकर उनके आगे रख दी।

बुढ़ि बोली—इनके कंठ सूख गए हैं, बाहर से पानी ले आओ। मोहन बुढ़ि से कुएं का पता पूछकर बाहर गया और पानी ले आया। सबने रोटी खाकर पानी पिया, परन्तु चूल्हे के पास वाली स्त्री पड़ी तड़पती रही। मोहन गांव में जाकर कुछ दाल, चावल मोल ले आया और खिचड़ी पाकर सबको खिलायी।

तब बुढ़ि बोली—भाई, क्या सुनाऊं, निर्धन तो हम पहले ही थे, उस पर पड़ा अकाल। हमारी और भी दुर्गति हो गई। पहले-पहल तो पड़ोसी अन्न उधार देते रहे, परन्तु वे क्या करते? वे आप भूखों मरने लगे, हमें कहां से देते।

मनुष्य ने कहा—मैं मजूरी करने निकला, दो-तीन दिन तो कुछ मिला, फिर किसी ने नौकर न रखा बुढ़ि और लड़की भीख मांगने लगीं। अन्न का अकाल था, कोई भीख भी न देता था। बहु तेरे यत्न किए, कुछ न बन सका। भूख के मारे घास खाने लगे, इसी कारण यह मेरी स्त्री चूल्हे के पास पड़ी तड़प रही है।

बुढ़ि—पहले कई दिनों तक तो मैं चल-फिर कर कुछ धंधा करती रही, परन्तु कहां तक? भूख और रोग ने जान ले ली। जो हाल है, तुम अपने नेत्रों से देख रहे हो।

उनकी बिथा सुनकर मोहन ने विचारा कि आज रात यहीं रहना उचित हैं साथी से कल मिल लेंगे।

प्रातः काल उठकर वह गांव में गया और खाने-पीने की जिन्स ले आया। घर में कुछ न था। वह वहां ठहर कर इस तरह काम करने लगा कि मानो अपना ही घर है। दो-तीन दिन पीछे सब चलने-फिरने लगे और वह स्त्री उठ बैठी।

चौथे दिन एकादशी थी। मोहन ने विचारा कि आज सन्ध्या को इन सबके साथ बैठकर फला-हार करके कल प्रातःकाल चल दूंगा।

वह गांव में जाकर दूध, फल सब सामग्री लाकर बुढ़ि को दे, आप पूजा-पाठ करने मन्दिर में चला गया। इन लोगों ने अपनी जमीन एक जमींदार के यहां गिरवी रख-कर अकाल के समय अपना निवार्ह किया था। मोहन जब मन्दिर गया, तब किसान युवक जमींदार के पास पहुंचा और विनय पूर्वक बोला—चौधरी जी, इस समय रुपये देकर खेत छुड़ाना मेरे काबू के बाहर है। यदि आप इस चौमासे में मुझे खेत बोने की आज्ञा दे दें, तो मेहनत -मजदूरी करके आपका ऋण चुका दे सकता हूं।

परन्तु चौधरी कब मानता था? वह बोला—बिना रुपये दिए खेत नहीं बो सकते जाओ, अपना काम करो। वह निराश होकर घर लौट आया। इतने में मोहन भी पहुंच गया। जमींदार की बात सुनकर वह मन में विचार करने लगा कि जब यह जमींदार खेत नहीं बोने देता, तो इन किसानों की प्राण रक्षा क्या करेगा? यदि मैं इन्हें इसी दशा में छोड़कर चल दिया, तो यह सब काल के कौर बन जायेंगे? कल नहीं परसों जाऊंगा।

मोहन अब बड़ी दुविधा में पड़ा था। न रहते ही बनता था, न जाते ही बनता था। रात को पड़ा-पड़ा सोचने लगा, यह तो अच्छा बखेड़ा फैला। पहले अन्न-पानी, अब खेत छुड़ाना, फिर गाय और बैलों की जोड़ी मोल लेना। मोहन तुम किस जंजाल में फंस गए?

जी चाहता था कि वह उन्हें ऐसे ही छोड़कर चल दे, परन्तु दया जाने न देती थी। सोचते-सोचते आंख लग गई। स्वप्न में देखता क्या है कि वह जाना चाहता है, किसी ने उसे पकड़ लिया है। लौट कर देखा तो बालक रोटी मांग रहा है। वह तुरन्त उठ बैठा और मन में कहने लगा—नहीं, अब मैं नहीं जाता। यह स्वप्न शिक्षा देता है कि मुझे इनका खेत छुड़ाना, गाय-बैल मोल लेना और सारा प्रबन्ध करके जाना उचित है।

प्रातःकाल उठकर जमींदार के पास गया और रुपया देकर उनका खेत छुड़ा दिया। जब एक किसान से एक गाय और दो बैल मोल लेकर लौट रहा था कि राह में स्त्रियों को बातें करते सुना।

'बहन, पहले तो हम उसे साधारण मनुष्य जानते थे। वह केवल पानी पीने आया था, पर अब सुना है कि खेत छुड़ाने और गाय-बैल मोल लेने गया है। ऐसे महात्मा के दर्शन करने चाहिए।' मोहन अपनी स्तुति सुनकर वहां से टल गया। गाय-बैल लेकर जब झोंपड़े पर पहुंचा तो किसान ने पूछा—पिताजी, यह कहां से लाये?

मोहन—अमुक किसान से यह बड़े सस्ते मिल गए हैं। जाओ, पशु-शाला में बांधकर इनके आगे कुछ भूसा डाल दो।

उसी रात जब सब सो गए, तो मोहन चुपके से उठकर घर से बाहर निकल बद्रीनारायण की राह ली।

तीन मील चलकर मोहन एक वृक्ष के नीचे बैठकर बटुआ निकाल, रुपये गिनने लगा तो थोड़े ही रुपये बाकी थे। उसने सोचा—

इतने रुपयों में बद्रीनाराण पहुंचना असम्भव है, भीख मांगना पाप है। अजुर्न वहां अवश्य पहुंचेगा और आशा है कि मेरे नाम पर कुछ चढ़ावा भी चढ़ा ही देगा। मैं तो अब इस जीवन में यह यात्रा करने का संकल्प पूरा नहीं कर सकता। अच्छा, परमात्मा की इच्छा, वह बड़ा दयालु है। मुझ जैसे पापियों को निस्संदेह क्षमा कर देगा।

यह विचार करके गांव का चक्कर काट कर कि कोई देख न ले, वह घर की ओर लौट पड़ा।

गांव में पहुंचा जाने पर घर वाले उसे देखकर अति प्रसन्न हुए और पूछने लगे कि लौट क्यों आये? मोहन ने यही उत्तर दिया कि अजुर्न से साथ छूट गया और रुपये चोरी हो गए, इस कारण लौट आना पड़ा। घर में कुशल क्षेम थी। कोई कष्ट न था।

मोहन का आना सुनकर अजुर्न के घर वाले उससे पूछने लगे कि अजुर्न को कहां छोड़ा उनसे भी उसने यही कहा कि बद्रीनारायण पहुंचने से तीन दिन पहले मैं अजुर्न से पिछड़ गया, रुपया किसी ने चुरा लिया, बद्रीनारायण जाना असम्भव था, मुझे लौटना ही पड़ा।

सब लोग मोहन की बुद्धि पर हंसने लगे कि बद्रीनारायण पहुंचा ही नहीं, रास्ते में रुपये खो दिए। मोहन घर के धंधे में लग गया, बात बीत गई।

अब उधर का हाल सुनिए—

मोहन जब पानी पीने चला गया तब थोड़ी दूर जाकर अजुर्न बैठ गया और साथी की बाट देखने लगा।

सन्ध्या हो गई, पर मोहन न आया।

अजुर्न सोचने लगा—क्या हुआ, साथी क्यों नहीं आया? मेरी आंखें लग गई थीं। कहीं आगे न निकल गया हो। पर यहां से जाता तो क्या दिखायी नहीं देता? पीछे लौटकर देखूं, कहीं आगे न चला गया हो, फिर तो मिलना ही असम्भव है। आगे ही चलो, रात को चट्टी पर अवश्य भेंट हो जाएगी।

रास्ते में अजुर्न ने कई मनुष्यों से पूछा कि तुमने कोई नाटा, सांवले रंग का आदमी देखा है? परन्तु कुछ पता न चला। रात चट्टी पर भी मोहन से भेंट न हुई। अगले दिन यह विचार कर कि वह देवप्रयाग पर अवश्य मिल जाएगा, वह आगे चल दिया।

रास्ते में अजुर्न को एक साधु मिल गया। वह जगन्नाथ की यात्रा करके आया था। अब दूसरी बार बद्रीनारायण के दर्शन को जा रहा था। रात को चट्टी में वे दोनों इकट्ठे ही रहे और फिर एक साथ यात्रा करने लगे।

देवप्रयाग में पहुंचकर अजुर्न ने मोहन के विषय में पंडे से बहुत पूछताछ की, कुछ पता न चला। यहां सब यात्री एकत्र हो गए। देवप्रयाग से आगे चल कर सब लोग रात को एक चट्टी में ठहरे। वहां मूसलाधार मेंघ बरसने लगा। बिजली की कड़कने लगी, बादल की गरज से सब कांप गए। सारी रात जागते कटी। त्राहि–त्राहि करते दिन निकला।

अन्त को दोपहर के समय सब लोग बद्रीनारायण पहुंच गए। पंडे देवप्रयाग से ही साथ हो लिये थे। बद्रीनारायण में यही रीति है कि पहले दिन यात्रियों को मन्दिर की ओर से भोजन कराया जाता है और उसी दिन यात्रियों को अटका अथवा च़ावा बतला देना पड़ता है कि कौन कितना च़ाएगा, कम से कम सवा रुपया नियत है। उस समय तो सबने पंडों के घरों में जाकर विश्राम किया। दूसरे दिन प्रातःकाल उठकर दर्शनप्रसन में लग गए। अजुर्न और साधु एक ही स्थान में टिके थे। सांझ की आरती के दर्शन करके लौटकर जब घर आये, तब साधु बोला कि मेरा तो किसी ने रुपये का बटुआ निकाल लिया।

अजुर्न के मन में यह पाप उत्पन्न हुआ कि यह साधु झूठा है। किसी ने इसका रुपया नहीं चुराया। इसके पास रुपया था ही नहीं।

लेकिन तुरन्त ही उसको पश्चाताप हुआ कि किसी पुरुष के विषय में ऐसी कल्पना करना महापाप है। उसने मन को बहुतेरा समझाया, परंतु उसका ध्यान साधु में ही लगा रहा। पवित्र स्थान में रहने पर भी चित्त की मलिनता दूर नहीं हुई। इतने में शयन की आरती का घंटा बजा। दोनों दर्शनार्थ मन्दिर में चले गए। भीड़ बहुत थी, अजुर्न नेत्र मूंदकर भगवान की स्तुति करने लगा, परंतु हाथ बटुए पर था, क्योंकि साधु के रुपये खो जाने से संस्कार चित्त में पड़े हुए थे। अन्तःकरण का शुद्ध हो जाना क्या कोई सहज बात है!

स्तुति समाप्त करके नेत्र खोलकर अजुर्न जब भगवान के दर्शन करने लगा, तब देखता क्या है कि मूर्ति के अति समीप मोहन खड़ा है। ऐ—मोहन! नहीं नहीं, मोहन यहां कैसे पहुंच सकता है? सारे रास्ते तो ढूँढता आया हूं।

मोहन को साष्टांग दण्डवत करते देखकर अजुर्न को निश्चय हो गया कि मोहन ही है। सायद किसी दूसरी राह से यहां आ पहुंचा है। चलो, अच्छा हुआ, साथी तो मिल गया।

आरती हो गई। यात्री बाहर निकलने लगे। अजुर्न का हाथ बटुए पर था कि कोई रुपये न चुरा ले। वह मोहन को खोजने लगा, पर उसका कहीं पता नहीं चला।

दूसरे दिन प्रातःकाल मन्दिर में जाने पर अजुर्न ने फिर देखा कि मोहन हाथ जोड़े भगवान के सम्मुख खड़ा है। वह चाहता था कि आगे बढ़कर मोहन को पकड़ ले, परन्तु ज्योंही वह आगे बढ़ा, मोहन लोप हो गया।

तीसरे दिन भी अजुर्न को वही दृश्य दिखाई दिया। उसने विचारा कि चल कर द्वार पर खड़े हो जाओ। सब यात्री वहीं से निकलेंगे, वहीं मोहन को पकड़ लूंगा। अत एव उसने ऐसा ही किया, लेकिन सब यात्री निकल गए, मोहन का कहीं पता ही नहीं।

एक सप्ताह बद्रीनारायण में निवास करके अजुर्न घर लौट पड़ा।

राह चलते अजुर्न के चित्त में वही पुराने घर के झमेले बार-बार आने लगे। साल-भर बहुत होता है। इतने दिनों में घर की दशा न जाने क्या हुई हो। कहावत है—छाते लगे छः मास और छिन में होय उजाड़। कौन जाने लड़के ने क्या कर छोड़ा हो? फसल कैसी हो? पशुओं का पालन-पोषण हुआ है कि नहीं?

चलते-चलते अजुर्न जब उस झोपड़े के पास पहुंचा, जहां मोहन पानी पीने गया था, तो भीतर से एक लड़की ने आकर उसका कुरता पकड़ लिया और बोली—बाबा, बाबा भीतर चलो।

अजुर्न कुरता छुड़ाकर जाना चाहता था कि भीतर से एक स्त्री बोली—महाशय! भोजन करके रात्रि को यहीं विश्राम कीजिए। कल चले जाना। वह अंदर चला गया और सोचने लगा कि मोहन यहीं पानी पीने आया था। सायद इन लोगों से उसका कुछ पता चल जाए।

स्त्री ने अजुर्न के हाथ-पैर धुलाकर भोजन परस दिया। अजुर्न उसको आशीष देने लगा।

स्त्री बोली—दादा, हम अतिथि सेवा करना क्या जानें? यह सब कुछ हमें एक यात्री ने सिखाया है। हम परमात्मा को भूल गए थे। हमारी यह दशा हो गई थी कि यदि वह बूढ़ा यात्री न आता तो हम सबके-सब मर जाते। वह यहां पानी पीने आया था। हमारी दुर्दशा देखकर यहीं ठहर गया। हमारा खेत रेहन पड़ा था, वह छुड़ा दिया। गाय-बैल मोल ले दिए और सामग्री जुटाकर एक दिन न जाने कहां चला गया।

इतने में एक बुढ़ि आ गई और यह बात सुनकर बोल उठी—वह मनुष्य नहीं था, साक्षात देवता था। उसने हमारे ऊपर दया की, हमारा उद्धार कर दिया, नहीं तो हम मर गए होते वह पानी मांगने आया। मैंने कहा, जाओ, यहां पानी नहीं। जब मैं वह बात स्मरण करती हूं, तो मेरा शरीर कांप उठता है।

छोटी लड़की बोल उठी—उसने अपनी कांवर खोली और उसमें से लोटा निकाला कुएं की ओर चला।

इस तरह सबके-सब मोहन की विचार करने लगे। रात को किसान भी आ पहुंचा और वही विचार करने लगा—निस्संदेह उस यात्री ने हमें जीवन दान दिया। हम जान गए कि परमेश्वर क्या है? और परोपकार क्या? वह हमें पशुओं से मनुष्य बना गया।

अजुर्न ने अब समझा कि बद्रीनारायण के मंदिर में मोहन के दिखायी देने का कारण क्या था? उसे निश्चय हो गया कि मोहन की यात्रा सफल हुई।

कुछ दिनों पीछे अर्जुन घर पहुंच गया। लड़का शराब पीकर मस्त पड़ा था। घर का हाल सब गड़बड़ था। अर्जुन लड़के को डांटने लगा। लड़के ने कहा—तो यात्रा पर जाने को किसने कहा था? न जाते। इस पर अर्जुन ने उसके मुंह पर तमाचा मारा।

दूसरे दिन अर्जुन जब चौधरी से मिलने जा रहा था, तो राह में मोहन की स्त्री मिल गई।

स्त्री—भाई जी, कुशल से तो हो? बद्रीनारायण हो आये?

अर्जुन—हां, हो आया। मोहन मुझसे रास्ते में बिछुड़ गए थे। कहो, वह कुशल से घर तो पहुंच गए?

स्त्री—उन्हें आये तो कई महीने हो गए। उनके बिना हम सब उदास रहा करते थे। लड़के को तो घर काटे खाता था। स्वामी बिना घर सूना होता है।

अर्जुन—घर में हैं कि कहीं बाहर गये हैं?

स्त्री—नहीं, घर में हैं।

अर्जुन भीतर चला गया और मोहन से बोला—राम-राम, भैया मोहन, राम-राम!

मोहन—राम-राम! आओ भाई! कहो, दर्शन कर आये!

अर्जुन—हां, कर तो आया, पर मैं यह नहीं कह सकता कि यात्रा सफल हुई अथवा नहीं। लौटते समय मैं उस झोंपड़े में ठहरा था, जहां तुम पानी पीने गये थे।

मोहन ने बात टाल दी और अर्जुन भी चुप हो गया, परंतु उसे दृढ़ विश्वास हो गया कि उत्तम तीर्थ-यात्रा यही है कि पुरुष जीवन पर्यन्त प्रत्येक प्राणी के साथ प्रेमभाव रख कर सदैव उपकार में तत्पर रहे।

11 श्रवण और कालु किसान

एक समय एक गांव में श्रवण नामक एक मालदार किसान रहता था। उसके तीन पुत्र थे, सब युवक और काम करने में चतुर थे। सबसे बड़ा ब्याहा हुआ था, मंझला ब्याहने को था, छोटा क्वांरा था। श्रवण की स्त्री और बहू चतुर और सुशील थीं। घर के सभी प्राणी अपना-अपना काम करते थे, केवल श्रवण का बूढ़ा बाप दमे के रोग से पीड़ित होने के कारण कुछ काम-काज न करता था। सात बरसों से वह केवल खाट पर पड़ा रहता था। श्रवण के पास तीन बैल, एक गाय, एक बछड़ा, पंद्रह भेड़ें थीं। स्त्रियां खेती के काम में सहायता करती थीं। अनाज बहुत पैदा हो जाता था। श्रवण और उसके बाल-बच्चे बड़े आराम से रहते; अगर पड़ोसी कमला के लंगड़े पुत्र कालु के साथ इनका एक ऐसा झगड़ा न छिड़ गया होता जिससे सुखचैन जाता रहा था।

जब तक बूढ़ा कमला जीता रहा और श्रवण का पिता घर का प्रबंध करता रहा, कोई झगड़ा नहीं हुआ। वह बड़े प्रेमभाव से, जैसा कि पड़ोसियों में होना चाहिए, एक-दूसरे की सहायता करते रहे। लड़कों का घरों को संभालना था कि सबकुछ बदल गया।

अब सुनिए कि झगड़ा किस बात पर छिड़ा। श्रवण की बहू ने कुछ मुर्गियां पाल रखी थीं। एक मुर्गी नित्य पशु-शाला में जाकर अंडा दिया करती थी। बहू शाम को वहां जाती और अंडा उठा लाती। एक दिन दैव गति से वह मुर्गी बालकों से डरकर पड़ोसी के आंगन में चली गयी और वहां अंडा दे आई। शाम को बहू ने पशु-शाला में जाकर देखा तो अंडा वहां न था। सास से पूछा, उसे क्या मालूम था। देवर बोला कि मुर्गी पड़ोसिन के आंगन में कुड़-कुड़ा रही थी, शायद वहां अंडा दे आयी हो।

बहू वहां पहुंचकर अंडा खोजने लगी। भीतर से कालु की माता निकल कर पूछने लगी - बहू, क्या है?

बहू - मेरी मुर्गी तुम्हारे आंगन में अंडा दे गई है, उसे खोजती हूं। तुमने देखा हो तो बता दो।

कालु की मां ने कहा - मैंने नहीं देखा। क्या हमारी मुर्गियां अंडे नहीं देतीं कि हम तुम्हारे अंडे बटोरती फिरेंगी। दूसरों के घर जाकर अंडे खोजने की हमारी आदत नहीं।

यह सुनकर बहू आग हो गई, लगी बकने। कालु की मां कुछ कम न थी, एक-एक बात के सौसौ उत्तर दिये। श्रवण की स्त्री पानी लाने बाहर निकली थी। गाली-गलौच का शोर सुन कर वह भी आ पहुंची। उधर से कालु की स्त्री भी दौड़ पड़ी। अब सबकी-सब इकट्ठी होकर लगीं गालियां बकने और लड़ने। कालु खेत से आ रहा था, वह भी आकर मिल गया। इतने में श्रवण भी आ पहुंचा। पूरा महाभारत हो गया। अब दोनों गुंथ गए। श्रवण ने कालु की दाढ़ी के बाल उखाड़ डाले। गांव वालों ने आकर बड़ी मुश्किल से उन्हें छुड़ाया। पर कालु ने अपनी दाढ़ी के बाल उखाड़ लिये और कालु परगना के इजलास में जाकर कहा - मैंने दाढ़ी इसलिए नहीं रखी थी जो यों उखाड़ी जाये। श्रवण से हरजाना लिया जाए। पर श्रवण के बूढ़े पिता ने उसे समझाया - बेटा, ऐसी तुच्छ बात पर लड़ाई करना मूर्खता नहीं तो क्या है? जरा विचार तो करो, सारा बखेड़ा सिर्फ एक अंडे से फैला है। कौन जाने शायद किसी बालक ने उठा लिया हो, और फिर अंडा था कितने का? परमात्मा सबका पालन-पोषण करता है। पड़ोसी यदि गाली दे भी दे, तो क्या गाली के बदले गाली देकर अपनी आत्मा को मलिन करना उचित है? कभी नहीं, खैर! अब तो जो होना था, वह हो ही गया, उसे मिटाना उचित है, बढ़ाना ठीक नहीं। क्रोध पाप का मूल है। याद रखो, लड़ाई बढ़ाने से तुम्हारी ही हानि होगी।

परन्तु बूढ़े की बात पर किसी ने कान न धरा। श्रवण कहने लगा कि कालु को धन का घमंड है, मैं क्या किसी का दिया खाता हूं? बड़े घर न भेज दिया तो कहना। उसने भी नालिश ठोंक दी।

यह मुकदमा चल ही रहा था कि कालु की गाड़ी की एक कील खो गई। उसके परिवार वालों ने श्रवण के बड़े लड़के पर चोरी की नालिश कर दी।

अब कोई दिन ऐसा न जाता था कि लड़ाई न हो। बड़ों को देखकर बालक भी आपस में लड़ने लगे। जब कभी वस्त्र धोने के लिए स्त्रियां नदी पर इकट्ठी होती थीं, तो सिवाय लड़ाई के कुछ काम न करती थीं।

हले-पहल तो गाली-गलौज पर ही बस हो जाती थी, पर अब वे एक-दूसरे का माल चुराने लगे। जीना दुर्लभ हो गया। न्याय चुकाते-चुकाते वहां के कर्मचारी थक गए। कभी कालु कभी श्रवण को कैद करा देता, कभी वह उसको बंदीखाने भिजवा देता। कुत्तों की भांति जितना ही लड़ते थे, उतना ही क्रोध बढ़ता था। छह वर्ष तक यही हाल रहा। बूढ़े ने बहु तेरा सिर पटका कि 'लड़को, क्या करते हो? बदला लेना छोड़ दो, बैर भाव त्यागकर अपना काम करो। दूसरों को कष्ट देने से तुम्हारी ही हानि होगी।' परंतु किसी के कान पर जूं तक न रेंगती थी।

सातवें वर्ष गांव में किसी के घर विवाह था। स्त्री-पुरुष जमा थे। बातें करते-करते श्रवण की बहू ने कालु पर घोड़ा चुराने का दोष लगाया। वह आग हो गया, उठ कर बहू को ऐसा मुक्का मारा कि वह सात दिन चारपाई पर पड़ी रही। वह उस समय गर्भवती थी। श्रवण बड़ा प्रसन्न हुआ कि अब काम बन गया। गर्भवती स्त्री को मारने के अपराध में इसे बंदीखाने न भिजवाया तो मेरा नाम श्रवण ही नहीं। झट जाकर नालिश कर दी। तहकीकात होने पर मालूम हुआ कि बहू को कोई बड़ी चोट नहीं आई, मुकदमा खारिज हो गया। श्रवण कब चुप रहने वाला था। ऊपर की कचहरी में गया और मुंशी को घूस देकर कालु को बीस कोड़े मारने का हुक्म लिखवा दिया।

उस समय कालु कचहरी से बाहर खड़ा था, हुक्म सुनते ही बोला - कोड़ों से मेरी पीठ तो जलेगी ही, परन्तु श्रवण को भी भस्म किए बिना न छोड़ूँगा।

श्रवण तुरन्त अदालत में गया और बोला - हुजूर, कालु मेरा घर जलाने की धमकी देता है। कई आदमी गवाह हैं।

हाकिम ने कालु को बुलाकर पूछा कि क्या बात है?

कालु - सब झूठ, मैंने कोई धमकी नहीं दी। आप हाकिम हैं। जो चाहें सो करें, पर क्या न्याय इसी को कहते हैं कि सच्चा मारा जाए और झूठा चैन करे?

कालु की सूरत देखकर हाकिम को निश्चय हो गया कि वह अवश्य श्रवण को कोई न कोई कष्ट देगा। उसने कालु को समझाते हुए कहा - देखो भाई, बुद्धि से काम लो। भला कालु, गर्भवती स्त्री को मारना क्या ठीक था? यह तो ईश्वर की बड़ी कृपा हुई कि चोट नहीं आई, नहीं तो क्या जाने, क्या हो जाता। तुम विनय करके श्रवण से अपना अपराध क्षमा करा लो, मैं हुक्म बदल डालूंगा।

मुंशी - दफा एक सौ सत्तरह के अनुसार हुक्म नहीं बदला जा सकता।

हाकिम - चुप रहो। परमात्मा को शांति प्रिय है, उसकी आज्ञा पालन करना सबका मुख्य धर्म है।

कालु बोला - हुजूर, मेरी अवस्था अब पचास वर्ष की है। मेरे एक ब्याहा हुआ पुत्र भी है। आज तक मैंने कभी कोड़े नहीं खाए। मैं और उससे क्षमा? कभी नहीं मांग सकता। वह भी मुझे याद करेगा।

यह कहकर कालु बाहर चला गया।

कचहरी गांव से सात मील पर थी। श्रवण को घर पहुंचते-पहुंचते अंधेरा हो गया। उस समय घर में कोई न था। सब बाहर गए हुए थे। श्रवण भीतर जाकर बैठ गया और विचार करने लगा। कोड़े लगने का हुक्म सुनकर कालु का मुख कैसा उतर गया था! बेचारा दीवार की ओर मुंह करके रोने लगा था। हम और वह कितने दिन तक एक साथ खेले हैं, मुझे उस पर इतना क्रोध न करना चाहिए था। यदि मुझे कोड़े मारने का हुक्म सुनाया जाता, तो मेरी क्या दशा होती।

इस पर उसे कालु पर दया आई। इतने में बूढ़े पिता ने आकर पूछा - कालु को क्या दंड मिला?

श्रवण - बीस कोड़े।

बूढ़ा - बुरा हुआ। बेटा, तुम अच्छा नहीं करते। इन बातों में कालु की उतनी ही हानि होगी जितनी तुम्हारी। भला, मैं यह पूछता हूं कि कालु पर कोड़े पड़ने से तुम्हें क्या लाभ होगा?

श्रवण - वह फिर ऐसा काम नहीं करेगा।

बूढ़ा - क्या नहीं करेगा, उसने तुमसे बढ़कर कौन-सा बुरा काम किया है?

श्रवण - वाह वाह, आप विचार तो करें कि उसने मुझे कितना कष्ट दिया है। स्त्री मरने से बची, अब घर जलाने की धमकी देता है, तो क्या मैं उसका जस गाऊं?

बूढ़ा - (आह भरकर) बेटा, मैं घर में पड़ा रहता हूं और तुम सर्वत्र घूमते हो, इसलिए तुम मुझे मूर्ख समझते हो। लेकिन द्रोह ने तुम्हें अंधा बना रखा है। दूसरों के दोष तुम्हारे नेत्रों के सामने हैं, अपने दोष पीठ पीछे हैं। भला, मैं पूछता हूं कि कालु ने क्या किया? एक के करने से भी कभी लड़ाई हुआ करती है? कभी नहीं, दो बिना लड़ाई नहीं हो सकती। यदि तुम शान्त स्वभाव के होते, लड़ाई कैसे होती? भला जवाब तो दो, उसकी दाढ़ी के बाल किसने उखाड़े? उसका भूसा किसने चुराया? उसे अदालत में किसने घसीटा? तिस पर सारे दोष कालु के माथे ही थोप रहे हो! तुम आप बुरे हो, बस यही सारे झगड़े की जड़ है। क्या मैंने तुम्हें यही शिक्षा दी है? क्या तुम नहीं जानते कि मैं और कालु का पिता किस प्रेमभाव से रहते थे। यदि किसी के घर में अन्न चुक जाता था, तो एक-दूसरे से उधार लेकर काम चलता था; यदि कोई किसी और काम में लगा होता था, तो दूसरा उसके पशु चरा लाता था। एक को किसी वस्तु की जरूरत होती थी, तो दूसरा तुरन्त दे देता था। न कोई लड़ाई थी न झगड़ा, प्रेम-प्रीतिपूर्वक जीवन व्यतीत करता था। अब? अब तो तुमने महाभारत बना रखा है, क्या इसी का नाम जीवन है? हाय! हाय! यह तुम क्या पाप कर्म कर रहे हो? तुम घर के स्वामी हो, यमराज के सामने तुम्हें उत्तर देना होगा। बालकों और स्त्रियों को तुम क्या शिक्षा दे रहे हो, गाली बकना और ताने देना! कल तारावती पड़ोसिन धनदेवी को गालियां दे रही थी। उसकी माता पास बैठी सुन रही थी। क्या यही भलमनसी है? क्या गाली का बदला गाली होना चाहिए? नहीं बेटा, नहीं, महापुरुषों का वचन है कि कोई तुम्हें गाली दे तो सह लो, वह स्वयं पछताएगा। यदि कोई तुम्हारे गाल पर एक चपत मारे, तो दूसरा गाल उसके सामने कर दो, वह

लज्जित और नम्र होकर तुम्हारा भक्त हो जाएगा। अभिमान ही सब दुःख का कारण है – तुम चुप क्यों हो गए! क्या मैं झूठ कहता हूं?

श्रवण चुप रह गया, कुछ नहीं बोला।

बूढ़ा – महात्माओं का वाक्य क्या असत्य है, कभी नहीं। उसका एक-एक अक्षर पत्थर की लकीर है। अच्छा, अब तुम अपने इस जीवन पर विचार करो। जब से यह महाभारत आरम्भ हुआ है, तुम सुखी हो अथवा दुःखी! जरा हिसाब तो लगाओ कि इन मुकदमों, वकीलों और जाने-आने में कितना रुपया खर्च हो चुका है। देखो, तुम्हारे पुत्र कैसे सुन्दर और बलवान हैं, लेकिन तुम्हारी आमदनी घटती जाती है। क्यों? तुम्हारी मूर्खता से। तुम्हें चाहिए कि लड़कों सहित खेती का काम करो। पर तुम पर तो लड़ाई का भूत सवार है, वह चैन लेने नहीं देता। पिछले साल जई क्यों नहीं उगी, इसलिए कि समय पर नहीं बोई गई। मुकदमे चलाओ कि जई बोओ। बेटा, अपना काम करो, खेती-बारी को सम्हालो। यदि कोई कष्ट दे तो उसे क्षमा करो, परमात्मा इसी से प्रसन्न रहता है। ऐसा करने पर तुम्हारा अंतःकरण शुद्ध होकर तुम्हें आनन्द प्राप्त होगा।

श्रवण कुछ नहीं बोला।

बूढ़ा – बेटा, अपने बूढ़े, मूर्ख पिता का कहना मानो। जाओ, कचहरी में जाकर आपस में राजीनामा कर लो। कल शबेरात है, कालु के घर जाकर नम्रतापूर्वक उसे नेवता दो और घर वालों को भी यही शिक्षा दो कि बैर छोड़कर आपस में प्रेम बढ़ाएँ।

पिता की बातें सुनकर श्रवण के मन में विचार हुआ कि पिताजी सच कहते हैं। इस लड़ाई-झगड़े से हम मिट्टी में मिले जाते हैं। लेकिन इस महाभारत को किस प्रकार समाप्त करूं? बूढ़ा उसके मन की बात जानकर बोला – बेटा, मैं तुम्हारे मन की बात जान गया। लज्जा त्याग जाकर कालु से मित्रता कर लो। फैलने से पहले ही चिनगारी को बुझा देना उचित है, फैल जाने पर फिर कुछ नहीं बनता।

बूढ़ा कुछ और कहना चाहता था कि स्त्रियां कोलाहल करती हुई भीतर आ गईं, उन्होंने कालु के दंड का हाल सुन लिया था। हाल में पड़ोसिन से लड़ाई करके आई थीं, आकर कहने लगीं कि कालु यह भय दिखाता है कि मैंने घूस देकर हाकिम को अपनी ओर फेर लिया है, श्रवण का सारा हाल लिखकर महाराज की सेवा में भेजने के लिए विनयपत्र तैयार किया है। देखो, क्या मजा चखाता हूं। आधी जायदाद न छीन ली तो बात ही क्या है? यह सुनना था कि श्रवण के चित्त में फिर आग दहक उठी।

आषाढ़ी बोने की ऋतु थी। करने को काम बहुत था। श्रवण भुसौल में गया और पशुओं को भूसा डालकर कुछ काम करने लगा। इस समय वह पिता की बातें और कालु के साथ लड़ाई सब कुछ भूला हुआ था। रात को घर में आकर आराम करना ही चाहता था कि पास से शब्द सुनाई दिया – वह दुष्ट वध करने ही योग्य है, जीकर क्या बनाएगा? इन शब्दों ने श्रवण को पागल बना दिया। वह चुपचाप खड़ा कालु को गालियां सुनाता रहा। जब वह चुप हो गया, तो वह घर में चला गया।

भीतर आकर देखा कि बहू बैठी ताक रही है, स्त्री भोजन बना रही है, बड़ा लड़का दूध गर्म कर रहा है, मंझला झाड़ू लगा रहा है, छोटा भैंस चराने बाहर जाने को तैयार है। सुख की यह सब सामग्री थी, परन्तु पड़ोसी के साथ लड़ाई का दुःख सहा न जाता था।

वह जला-भुना भीतर आया। उसके कान में पड़ोसी के शब्द गूंज रहे थे, उसने सबसे लड़ना आरम्भ किया। इतने में छोटा लड़का भैंस चराने बाहर जाने लगा। श्रवण भी उसके साथ बाहर चला आया। लड़का तो चल दिया, वह अकेला रह गया। श्रवण मन में सोचने लगा - कालु बड़ा दुष्ट है, हवा चल रही है, ऐसा न हो पीछे से आकर मकान में आग लगाकर भाग जाए। क्या अच्छा हो कि जब वह आग लगाने आए, तब उसे मैं पकड़ लूं। बस फिर कभी नहीं बच सकता, अवश्य उसे बन्दीखाने जाना पड़े।

यह विचार करके वह गली में पहुंच गया। सामने उसे कोई चीज़ हिलती दिखाई दी। पहले तो वह समझा कि कालु है, पर वहां कुछ न था - चारों ओर सन्नाटा था।

थोड़ी दूर आगे जाकर देखता क्या है कि पशुशाला के पास एक मनुष्य जलता हुआ फूस का पूला हाथ में लिए खड़ा है। ध्यान से देखने पर मालूम हुआ कि कालु है। फिर क्या था, जोर से दौड़ा कि उसे जाकर पकड़ ले।

श्रवण अभी वहां पहुंचने न पाया था कि छप्पर में आग लगी, उजाला होने पर कालु प्रत्यक्ष दिखाई देने लगा। श्रवण बाज की तरह झपटा, लेकिन कालु उसकी आहट पाकर चम्पत हो गया।

श्रवण उसके पीछे दौड़ा। उसके कुरते का पल्ला हाथ में आया ही था कि वह छुड़ाकर फिर भागा। श्रवण धड़ाम से पृथ्वी पर गिर पड़ा, उठकर फिर दौड़ा। इतने में कालु अपने घर पहुंच गया। श्रवण वहां जाकर उसे पकड़ना चाहता था कि उसने ऐसा लट्ठ मारा कि श्रवण चक्कर खाकर बेसुध हो धरती पर गिर पड़ा। सुध आने पर उसने देखा कि कालु वहां नहीं है, फिरकर देखता है तो पशुशाला का छप्पर जल रहा है, ज्वाला प्रचंड हो रही है और लपटें निकल रही हैं।

श्रवण सिर पीटकर पुकराने लगा - भाइयो, यह क्या हुआ! हाय, मेरा सत्यानाश हो गया! चिल्लाते-चिल्लाते उसका कंठ बैठ गया। वह दौड़ना चाहता था, परन्तु उसकी टांगें लड़-खड़ा गईं। वह धम से धरती पर गिर पड़ा, फिर उठा, घर के पास पहुंचते-पहुंचते आग चारों ओर फैल गई। अब क्या बन सकता है? भय से पड़ोसी भी अपना असबाब बाहर फेंकने लगे। वायु के वेग से कालु के घर में भी आग जा लगी, यहां तक कि आधा गांव जलकर राख का ढेर हो गया। श्रवण और कालु दोनों का कुछ न बचा। मुर्गियां, हल, गाड़ी, पशु, वस्त्र, अन्न, भूसा आदि सब कुछ स्वाहा हो गया। इतना अच्छा हुआ कि किसी की जान नहीं गई।

आग रात भर जलती रही। वह कुछ असबाब उठाने भीतर गया, परन्तु ज्वाला ऐसी प्रचंड थी कि जा न सका। उसके कपड़े और दाढ़ी के बाल झुलस गए।

प्रातःकाल गांव के चौधरी का बेटा उसके पास आया और बोला - श्रवण, तुम्हारे पिता की दशा अच्छी नहीं है। वह तुम्हें बुला रहे हैं। श्रवण तो पागल हो रहा था, बोला - कौन पिता जी ?

चौधरी का बेटा – तुम्हारे पिता। इसी आग ने उनका काम तमाम कर दिया है। हम उन्हें यहां से उठाकर अपने घर ले गए थे। अब वह बच नहीं सकते। चलो, अंतिम भेंट कर लो।

श्रवण उसके साथ हो लिया। वहां पहुंचने पर चौधरी ने बूढ़े को खबर दी कि श्रवण आ गया है।

बूढ़े ने श्रवण को अपने निकट बुलाकर कहा – बेटा, मैंने तुमसे क्या कहा था। गांव किसने जलाया?

श्रवण – कालु ने। मैंने आप उसे छप्पर में आग लगाते देखा था। यदि मैं उसी समय उसे पकड़ कर पूले को पैरों तले मल देता, तो आग कभी न लगती।

बूढ़ा – श्रवण, मेरा अन्त समय आ गया। तुमको भी एक दिन अवश्य मरना है, पर सच बतलाओ कि दोष किसका है?

श्रवण चुप हो गया।

बूढ़ा – बताओ, कुछ बोलो तो, फिर यह सब किसकी करतूत है, किसका दोष है?

श्रवण – (आंखों में आंसू भरकर) मेरा! पिताजी, क्षमा कीजिए, मैं खुद और आप दोनों का अपराधी हूं।

बूढ़ा – श्रवण!

श्रवण – हां, पिताजी।

बूढ़ा – जानते हो अब क्या करना उचित है?

श्रवण – मैं क्या जानूं, मेरा तो अब गांव में रहना कठिन है।

बूढ़ा – यदि तू परमेश्वर की आज्ञा मानेगा तो तुझे कोई कष्ट न होगा। देख, याद रख, अब किसी से न कहना कि आग किसने लगाई थी। जो पुरुष किसी का एक दोष क्षमा करता है, परमात्मा उसके दो दोष क्षमा करता है।

यह कहकर परमेश्वर को याद करते हुए बूढ़े ने प्राण त्याग दिए।

श्रवण का क्रोध शांत हो गया। उसने किसी को न बतलाया कि आग किसने लगाई थी। पहले- पहल तो कालु डरता रहा कि श्रवण के चुप रह जाने में भी कोई भेद है, फिर कुछ दिनों पीछे उसे विश्वास हो गया कि श्रवण के चित्त में अब कोई बैरभाव नहीं रहा।

बस, फिर क्या था – प्रेम में शत्रु भी मित्र हो जाते हैं। वे पास-पास घर बना कर पड़ोसियों की भांति रहने लगे।

श्रवण अपने पिता का उपदेश कभी न भूलता था कि फैलने से पहले ही चिन्गारी को बुझा देना उचित है। अब यदि कोई कष्ट देता, तो वह बदला लेने की इच्छा नहीं करता। यदि कोई उसे गाली देता, तो सहन

करके वह यह उपदेश करता कि कुवचन बोलना अच्छा नहीं। अपने घर के प्राणियों को भी वह यही उपदेश दिया करता। पहले की अपेक्षा अब उसका जीवन बड़े आनन्द पूर्वक कटता है।

12 दो बहनों कि कथा

दो बहने थी। बड़ी का कस्बे में एक सौदागर से विवाह हुआ था। छोटी देहात में किसान के घर ब्याह थी।

बड़ी का अपनी छोटी बहन के यहां आना हुआ। निबटकार दोनों जनी बैठीं तो बातों का सूत चल पड़ा। बड़ी अपने शहर के जीवन की तारीफ करने लगी, "देखो, कैसे आराम से हम रहते हैं? फैंसी कपड़े और ठाठ के सामान! स्वाद-स्वाद की खाने-पीने की चीजें, और फिर तमाशे-थियेटर, बाग-बगीचे!"

छोटी बहन को बात लग गई। अपनी बारी पर उसने सौदागर की जिंदगी को हेय बताया और किसान का पक्ष लिया। कहा, "मैं तो अपनी जिंदगी का तुम्हारे साथ अदला-बदला कभी न करूं। हम सीधे-सादे और रुखे-से रहते हैं तो क्या, चिंता-फिकर से तो छूटे हैं। तुम लोग सजी-धजी रहती हो, तुम्हारे यहां आमदनी बहुत है, लेकिन एक रोज वह सब हवा भी हो सकता है, जीजी। कहावत है ही-'हानि-लाभ दोई जुड़वा भाई।' अक्सर होता है कि आज तो अमीर है कल वही टुकड़े को मोहताज है। पर हमारे गांव के जीवन में यह जोखिम नहीं है। किसानी जिंदगी फूली और चिकनी नहीं दीखती तो क्या, उमर लंबी होती है और मेहनत से तन्दुरुस्ती भी बनी रहती है। हम मालदार न कहलायेगे: लेकिन हमारे पास खाने की कमी भी कभी न होगी।"

बड़ी बहन ने ताने से कहा, "बस-बस, पेट तो बैल और कुत्ते का भी भरता है। पर वह भी कोई जिंदगी है? तुम्हें जीवन के आराम, अदब और आनन्द का क्या पता है? तुम्हारा मर्द जितनी चाहे मेहनत करे, जिस हालत में तुम जीते हो, उसी हालत में मरोगे। वहीं चारों तरफ गोबर, भुस, मिट्टी! और यही तुम्हारे बच्चों की किस्मत में बदा है।"

छोटी ने कहा, "तो इसमें क्या हुआ? हां, हमारा काम चिकना-चुपड़ा नहीं हैं; लेकिन हमें किसी के आगे झुकने की भी जरुरत नहीं है। शहर में तुम हजार लालच से घिरी रहती हो। आज नहीं तो कल की क्या खबर है! कल तुम्हारे आदमी को पाप को लोभ-जुआ, शराब और दूसरी बुराइयां फंसा सकते हैं, तब घड़ी भर में सब बरबाद हो जायगा। क्या ऐसी बातें अक्सर होती नहीं हैं?"

घर का मालिक दीना ओसारे में पड़ा औरतों की यह बात सुन रहा था। उसने सोचा कि बात तो खरी है। बचपन से मां धरती की सेवा में हम इतने लगे रहते हैं कि कोई व्यर्थ की बात हमारे मन में घर नहीं कर पाती है। बस, है तो मुश्किल एक। वह यह कि हमारे पास जमीन काफी नहीं है। जमीन खूब हो तो मुझे किसी का परवा न रहे, चाहे शैतान ही क्यों न हो!

वहीं कोने में शैतान दुबका बैठा था। उसने सबकुछ सुना। वह खुश था किसान की बीवी ने गांव की बड़ाई करके अपने आदमी को डींग पर चढ़ा दिया। देखो न, कहता था कि जमीन खूब हो तो फिर चाहे शैतान भी आ जाय, तो परवाह नहीं।

शैतान ने मन में कहा कि अच्छा हजरत, यही फैसला सही। मैं तुमको काफी जमीन दूंगा और देखना है कि उसी से तुम मेरे चंगुल में होते हो कि नहीं।

गांव के पास ही जमींदारी की मालकिन की कोठी थी। कोई तीन सौ एकड़ उनकी जमीन थी। उनके अपने आसामियों के साथ बड़े अच्छे सम्बन्ध रहते आये थे; लेकिन उन्होंने एक कारिन्दा रक्खा, जो पहले फौज में रहा था। उसने आकर लोगों पर जुरमाने ठोकरे शुरु कर दिये।

दीना का यह हाल था कि वह बहुतेरा करता, पर कभी तो उसका बैल जमींदारी की चरी में पहुंच जाता, कभी गाय बगिया में चरती पाई जाती। और नहीं तो उनकी रखाई हुई घास में बछिया-बछड़ा ही जा मुंह मारते। हर बार दीना को जुर्माना उठाना पड़ता। जुर्माना तो वह देता, पर बेमन से। वह कुन-मुनाता और चिढ़ा हुआ-सा घर पहुंचता और अपनी सारी चिढ़ घर में उतारता। पूरे मौसम कारिंदे की वजह से उसे ऐसा त्रास भुगतना पड़ा।

अगले जाड़ों में गांव में खबर हुई कि मालकिन अपनी जमीन बेच रही हैं और मुंशी इकरामअली से सौदे की बातचीत चल रही है। किसाने सुनकर चौकत्रे हुए। उन्होंने सोचा कि मुंशीजी की जमीन होगी तो वह जमींदार के कारिन्दे से भी ज्यादा सख्ती करेंगे और जुर्माने चढ़ावेंगे और हमारी तो गुजर-बसर इसी जमीन पर है।

यह सोचकर किसान मालकिन के पास गये। कहा कि मुंशीजी को जमीन न दीजिए। हम उससे बढ़ती कीमत पर लेने को तैयार हैं। मालकिन राजी हो गईं।

तब किसानों ने कोशिश की कि मिलकर गांव-पंचायत की तरफ से वह सब जमीन पर जा से ताकि वह सभी की बनी रहे। दो बार इस पर विचार करने को पंचायत जुड़ी पर फैसला न हुआ। असल में शैतान की सब करतूत थी। उसने उनके बीच फूट डाल दी थी। बस, तब वे मिलकर किसी एक मत पर आ ही नहीं से। तय हुआ कि अलग-अलग करके ही वह जमीन ले ली जाय। हर कोई अपने बित्ते के हिसाब से ले। मालकिन पहले की तरह इस बात पर भी राजी हो गई।

इतने में दीना को मालूम हुआ कि एक पड़ोसी इकट्ठी पचास एकड़ जमीन ले रहा है और जमींदारिन राजी हो गई हैं कि आधा रुपया अभी नकद ले लें, बाकी साल भर बाद चुकता हो जायगा।

दीना ने अपनी स्त्री से कहा कि और जने जमीन खरीद रहे है। हमें भी बीस या इतने एकड़ जमीन ले लेनी चाहिए। जीना वैसे भार हो रहा है और वह कारिदा जुर्माने-पर-जुर्माने करके हमें बरबाद ही कर देगा।

उन दोनों ने मिलकर विचार किया कि किस तरकीब से जमीन खरीदी जाय। सौ कलदार तो उनके पास बचे हुए रखे थे। एक उन्होंने उमर पर आया अपना बछड़ा बेच डाला। कुछ माल बंधक रक्खा। अपने बड़े बेटे को मजदूरी पर चढ़ाकर उसकी नौकरी के मद्दे कुछ रुपया पेशगी ले लिया। बाकी बचा अपनी स्त्री के भाई से उधार ले लिया। इस तरह कोई आधी रकम उन्होंने इकट्ठी कर ली।

इतना करे दीना ने एक चालीस एकड़ जमीन का टुकड़ा पसंद किया, जिसमें कुछ हिस्से में दरख्त भी खड़े थे। मालकिन के पास उसका सौदा करने पहुंचा। सौदा पट गया ओर वहीं-के-वहीं नकद उसने साई दे दी। फिर कस्बे में जाकर लिखा-पढ़ी पक्की कर ली।

अब दीना के पास अपनी निजी जमीन थी। उसने बीज खरीदा और इसी अपनी जमीन पर बोया, इस तरह वह अब खुद जमींदार हो गया।

इस तरह दीना काफी खुशहाल था। उसके संन्तोष में कोई कमी न रहती। अगर बस पड़ोसियों की तरफ से उसे पूरा चैन मिल सकता। कभी-कभी उसे खेतों पर पड़ोसियों के मवेशी आ चरते। दीना ने बहुत विनय के साथ समझाया, लेकिन कुछ फर्क नहीं हुआ। उसके बाद और-तो-और, घोसी छोकरे गांव की गायों को दिन-दहाड़े उसकी जमीन में छोड़ देने लगे। रात को बैल खेतों का नुकसान करते। दीना ने उनको बार-बार निकलवाया और बार-बार उसने उनके मालिकों को माफ किया। एक अर्से तक वह धीरज रक्खे रहा और किसी के खिलाफ कार्रवाई नहीं की। लेकिन कब तक? आखिर उसका धीरज टूट गया और उसने अदालत में दरख्वास्त दी। मन में जानता तो था कि मुसीबत की वजह असली यह है कि और लोगों के पास जमीन की कमी है, जान-बूझकर दीना की सताने की मंशाा किसी की नहीं है। लेकिन उसने सोचा कि इस तरह मैं नरमी दिखाता जाऊंगा, तो वे लोग शह पाते जायंगे और मेरे पास जितना है सब बरबाद कर देंगे। नहीं उनको एक सबक सिखाना चाहिए।

सो उसने ठान ली। एक सबक दिया, दूसरा। नतीजा यह कि दो-तीन किसानों पर अदालत से जुर्माना हो गया। इस पर तो पास-पड़ोस के लोग दीना से कीना रखने लगे। अब कभी-कभी जान-बूझकर भी तंग करने के लिए अपने मवेशी उसके खेतों में छोड़ देते। एक आदमी गया और उसे जरुरत अगर घर में ईंधन की थी, तो उसने रात में जाकर सात पूरे शीशम के दरख्त काट गिराये। दीना ने सवेरे घूमते हुए देखा कि पेड़ कटे हुए पड़े है। वे धरती से सटे हैं और उनकी जगह खड़े ठूंठ मानो दीना को चिढ़ा रहे हैं। देखकर उसको तैश आ गया।

उसने सोचा कि अगर दुष्ट ने एक यहां का तो दूसरा दूर का पेड़ काटा होता तो भी गनीमत थी। लेकिन कम्बख्त ने आसपास के सब पेड़ काटकर बगिया को वीरान करे दिया। पता लगे तो खबर लिये बिना न छोडूं। उसने जानने के लिए सिर खुजलाया कि यह करतूत किसकी हो सकती है। आखिर तय किया कि हो-न-हो, यह धुन्नू होगा। और कोई ऐसा नहीं कर सकता। यह सोच धुन्नू की तरफ गया गया कि शायद कुछ सबूत मिल जाय, लेकिन वहां कुछ चोरी का सबूत मिला नहीं और आपस में कहा-सुनी और तेजा-तेजी के सिवा कुछ नतीजा न निकला। तो भी उसे मने में पक्का विश्वास हो गया कि धुन्नू ने यह किया है और जाकर रपट लिखा दी। धुन्नू की पेशी हुई, मामला चला। एक अदालत से दूसरी अदालत हुई। आखिर में धुन्नू बरी हो गया, क्योंकि कोई सबूत और गवाह ही नहीं थे। दीना इस बात पर और भी झल्ला उठा और अपना गुस्सा मजिस्ट्रेट पर उतारने लगा।

इस तरह दीना का अपने पड़ोसियों और अफसरों से मनमुटाव होने लगा, यहां तक कि उसे घर में भी आग लगाने की बातें सुनी जाने लगीं। हालांकि दीना के पास अब जमीन ज्यादा थी और जमींदारों में उसी गिनती थी, पर गांव में और पेचों में पहला-सा उसका मान न रह गया था।

इसी बीच अफवाह उड़ी कि कुछ लोग गांव छोड़-छोड़कर कहीं जा रहे हैं।

दीना ने सोचा कि मुझे तो अपनी जमीन छोड़ने की जरुरत है ही नहीं। लेकिन और कुछ लोग अगर गांव छोड़ेंगे तो चलो, गांव में भीड़ ही कम होगी। मैं उनकी जमीन खुद ले लूंगा। तब ज्यादा ठीक रहेगा। अब तो जमीन की कुछ तंगी मालूम होती है।

एक दिन दीना घर के ओसारे में बैठा हुआ था कि एक परदेसी-सा किसान उधर से गुजरता हुआ उसके घर उतरा। वह वहां रात-भर ठहरा और खाना भी वहीं खाया। दीना ने उससे बातचीत की कि भाई, कहां से आ रहे हो? उसने कहा दरिया सतलज के पास से आ रहा हूं। वहां बहुत काम है। फिर एक में से दूसरी बात निकली और आदमी ने बताया कि उस तरफ नई बस्ती बस रही है। उसे अपने गांव के कई और लोग वहां पहुंचे हैं। वे सोसायटी में शामिल हो गये हैं और हरेक को बीस एकड़ जमीन मुफ्त मिली है। जमीन ऐसी उम्दा है कि उस पर गेहूं की पहली फसल जो हुई तो आदमी से ऊंची उसी बालें गईं और इतनी घनी कि दरांत के एक काट में एक पूला बन जाय। एक आदमी के पास खाने को दाने न थे। खाली हाथ वहां पहुंचा। अब उसके पास दो गायें, छः बैल और भरा खलिहान अलग।

दीना के मन में भी अभिलाषा पैदा हुई। उसने सोचा कि मैं यहां तंग संकरी-सी जगह में पड़ा क्या कर रहा हूं, जबकि दूसरी जगह मौका खुला पड़ा है। यहां की जमीन, घर-बार बेच-बाचकर नकदी बना वहीं क्यों न पहुंचूं और नये सिरे से शुरु करके देखूं? यहां लोगों की गिचपित हुई जाती है। उससे दिक्कत होती है और तरक्की रुकती है, लेकिन पहले खुद जाकर मालूम कर आना चाहिए कि क्या बात है, सो बरसात के बाद तैयारी करे वह चल दिया। पहले रेल में गया। फिर सैकड़ों मील बैलगाड़ी पर और पैदल सफर करता हुआ सतलज के पारवाली जगह पर पहुंचा। वहां देखा कि जो उस आदमी ने कहा था, सब सच है। सबके पास खूब जमीन है। हरेक को सरकार की तरफ से बीस-बीस एकड़ जमीन मिली हुई है, या जो चाहे खरीद सकता है। और खूबी यह कि कौड़ियों के मोल जितनी चाहे, जमीन और भी ले सकता है।

सब जरुरी बातें मालूम करे दीना जाड़ों से पहले-पहल घर लौट आया। आकर देश-छोड़ने की बात सोचने लगा। नफे के साथ उसने सब जमीन बेच डाली। घर-मकान, मवेशी-डंगर सबकी नकदी बना ली और पंचायत से इस्तीफा दे दिया और सारे कुनबे को साथ ले सतलज-पार के लिए रवाना हो गया।

दीना परिवार के साथ उस जगह पहुंच गया। जाते ही एक बड़े गांव की पंचायत में शामिल होने की अर्जी दी। पंचों की उसने खूब खातिर की और दावतें दीं। जमीन का पट्टा उसे सहज मिल गया। मिली-जुली जमीन में से उसे और उसके बाल-बच्चों के इस्तेमाल के लिए पांच हिस्से यानी सौ एकड़ जमीन उसको दे दी गई। वह सब इकट्ठी नहीं थी, कई जगह टुकड़े थे। अलावा इसके पंचायती चरागाह भी उसके लिए खुला कर दिया गया। दीना ने जरुरी इमारतें अपने लिए खड़ी कीं और मवेशी खरीद लिये। शामलात जमीन में से ही अब उसको इतना मिल गया था कि पहले से तिगुनी, और जमीन उपजाऊ थी। वह पहले से कई गुना खुशहाल हो गया। उस पास चराई के लिए खुला मैदान-का-मैदान पड़ा था और जितने चाहे वह ढोर रख सकता था।

पहले तो वहां जमने और मकान-वकान बनवाने का उसे रस रहा। वह अपने से खुश था और उसे गर्व मालूम होता था। पर जब वह इस खुशहाली का आदी हो गया तो उसे लगने लगा कि यहां भी जमीन काफी नहीं है; ओर होती तो अच्छा था। पहले साल उसने गेहूं बुवाया और जमीन ने अच्छी फसल दी। वह फिर गेहूं ही बोते जाना चाहता था, पर उसे लिए और पड़ती जमीन काफी न थी। जो एक बार फसल दे चुकती थी, वह उसे तरफ एक साथ दोबारा गेहूं नहीं देती थी। एक या दो साल उससे गेहूं ले सकते थे, फिर जरुरी होता था कि धरती को आराम दिया जाय। बहुत लोग ऐसी जमीन चाहनेवाले थे, लेकिन सबके लिए आती कहां से? इससे बदाबदी और खींचातानी होती थी। जो संपन्न थे, वे गेहूं उगाने के लिए जमीन चाहते थे। जो गरीब थे, वे अपनी जमीन से जैसे-तैसे पैसा वसूल करना चाहते थे, ताकि टैक्स वगैरा अदा कर सकें। दीना और गेहूं बोना चाहता

था। इसलिए एक साल के लिए किराये पर उसने और जमीन ले ली। खूब गेहूं बोया और फसल भी खूब हुई। लेकिन जमीन गांव से दूर पड़ती थी और गल्ला मीलों दूर से गाड़ी में भर-भरकर लाना होता था। कुछ दिनों बाद दीना ने देखा कि कुछ बड़े-बड़े लोग अलग फाम्र डाल कर रहते हैं और वह खूब पैसा कमा रहे हैं। उसने सोचा कि आगर मैं इकट्ठी कायमी जमीन ले लूं और वहीं घर बसाकर रहूं तो बात ही दूसरी हो जाय।

इस तरह इकट्ठी और कायमी जमीन खरीदने का सवाल बार-बार उसके मन में उठने लगा।

तीन साल इस तरह निकल गये। दीना जमीन किराये पर लेता और गेहूं बोता। मौसम ठीक गये, काश्त अच्छी हुई और उस पास माल जमा होने लगा। वह इसी तरह संतोष से बढ़ता जा सकता था, लेकिन हर साल और लोगों से जमीन किराये पर लेने और उसके लिए कोशिश और सिरदर्दी करने के काम से वह थक गया था। जहां जमीन अच्छी होती, वहीं लेने वाले दौड़ पड़ते। इससे बहुत चौकस-चौकत्रा और होशियार न रहा जाता तो जमीन मिलना असंभव था। यह एक परेशानी की बात थी। तिसपर तीसरे साल ऐसा हुआ कि दीना ने एक महाजन के साझे में कुछ काश्तकारों से एक जमीन किराये में ली। जमीन गोड़ कर तैयार हो चुकी थी कि कुछ आपस में तनातनी हो गई और किसान लोग झगड़ा लेकर अदालत पहुंचे। अदालते से फिर मामला बिगड़ गया और की-कराई मेहनत बेकार गई।

दीना ने सोचा कि अगर कहीं जमीन मेरी कायमी मिल्कियत की होती तो मैं आजाद होता और क्यों यह पचड़ा बनता और बखेड़ बढ़ता?

उस दिन से वह जमीन के लिए निगाह रखने लगा। आखिर एक किसान मिला, जिसने एक हजार जमीन खरीदी थी, लेकिन पीछे उसकी हालत संभल न सकी। अब मुसीबत में पड़कर वह उसे सस्ती देने को तैयार था। दीना ने बात उससे चलाई और सौदा करना शुरु किया। आदमी मुसीबत में था, इससे दीना भाव-दर में कमी करने लगा। आखिर कीमत एक हजार रुपये तय पाई। कुछ नगद दे दिया जाय, बाकी फिर। सौदा पक्का हो गया था कि एक सौदागर अपने घोड़े के दाने-पानी के लिए उसे घर के आगे ठहरा। उससे दीना की बातचीत जो हुई तो सौदागर ने कहा कि मैं नर्मदा नदी के उस पार से चला आ रहा हूं। वहां 1500 एकड़ उम्दा जमीन कुल पांच सौ रुपये में मैंने खरीदी थी। सुनकर दीना ने उससे और सवाल पूछे।

सौदागर ने कहा:

"बात यह है कि अफसर-चौधरी से मेल-मुलाकात करने का हुनर चाहिए। सौ से ज्यादा रुपये तो मैंने रेशमी कपड़े और गलीचे देने में खर्च किये होंगे। फिर शराब, फल-मेवों की डालियां, चाय-सेट वगैरा के उपहार अलग। नतीजा यह कि फी एकड़ मुझे जमीन आनों के भाव पड़ गई।"कहकर सौदागर ने अपने दस्तावेज सब दीना के सामने कर दिये।

फिर कहा, "जमीन ऐन नदी के किनारे है और सारे-का-सारा किता इकट्ठा है। उपजाऊ इतना कि क्या पूछो।'

दीना ने इस पर उत्सुकतापूर्वक सौदागर से सवाल-पर-सवाल किये। उसने बताया:

"वहां इतनी जमीन है, इतनी कि तुम महीनों चलो तो पूरी न हो। वहां के लोग ऐसी सीधे हैं, जैसे भेड़ और जमीन समझो, मुफ्त के भाव ले सकते हो।"

दीना ने सोचा, यह ठीक रहेगा। भला मैं अब हजार एकड़ के लिए हजार रुपया क्यों फंसाऊं?

अगर वहां जाकर इतना रुपया जमीन में लगाऊं, तो यहां से कई गुनी ज्यादा जमीन मुझे पड़ जायगी।

दीना ने पूछताछ की कि उस जगह कैसे जाया जाय? सौदागर ने सब बतला दिया। वह चला गया तो दीना ने भी अपनी तैयारी शुरु की। बीवी को कहा कि घर देखना-भालना और खुद एक आदमी साथ ले, यात्रा को निकल पड़ा। रास्ते में एक शहर में ठहरकर, वहां से चाय के डब्बे, शराब और इसी तरह और उपहार की चीजें, जो सौदागर ने बताई थीं, ले लीं। फिर दोनों बढ़ते गये, बढ़ते गये। चलते-चलते आखिर सातवें रोज वहां पहुंचे, जहां से कोल लोगों की बस्ती शुरु होती थी। उसने देखा कि सौदागर ने जो बात बताई थी, वह सही थी। दरिया के पास जमीन-ही-जमीन थी। सब खाली। ये लोग उससे काम न लेते थे। कपड़े या सिरकी के तम्बू में रहते, शिकार करते, मवेशी पालते और ऐसे ही मौज करते थे। ने रोटी बनाना जानते थे, न अनाज उगाना सीखा था। दूध का छाछ-मठा बनाते, पनीर बनाते और उसी एक तरह की शराब भी तैयार कर लेते थे। ये सब काम औरतें करती। मर्द खाने-पीने और फुर्सत के वक्त चैन की बंसी बजाने में रहते। वे लोग मजबूत और स्वस्थ थे और काम-धाम के नाम बिना कुछ किये मगन रहते थे। अपने से बाहर उन्हें कुछ पता न था। पढ़ना-लिखना जानते नहीं थे और हिन्दी तक नहीं जानते थें पर थे भले-सीधे स्वभाव के। दीना को देखते ही वे अपने तम्बुओं से निकल आये और उसके चारों तरफ जमघट लगाकर खड़े हो गये। उनमें से एक दुभाषिये की मार्फत दीना ने बताया कि मैं जमीन की खातिर आया हूं। वे लोग बड़े खुश मालूम हुए। बड़ी आवभगत के साथ वे उसे अपने अच्छे-स-अच्छे डेरे में ले गये। वहां कालीन पर बिछे गद्दे पर बिठाया ओर खुद नीचे चारों ओर घिसकर बैठ गये। उसे पीने को चाय दी और दारु भी। उसकी मेहमानी में बढ़-बढ़कर दावत हुई। दीना ने भी गाड़ी में से अपने पास से भेंट की चीजें निकाली और सबको थोड़ी-थोड़ी चाय बांटी। कोल लोग बड़े खुश थे। उन्होंने आपस में इए अजनबी की बाबत खूब चर्चा की। फिर दुभाषिये से कहा कि मेहमान को सब समझा दो।

दुभाषिये ने कहा कि ये लोग कहना चाहते हैं कि हम आपके आने से खुश हैं। हमारे यहां का कायदा है कि मेहमान की खातिर जो हमसे बन सके, करें। आपकी कृपा के हम कृतज्ञ हैं। बतलाइए कि हमारे पास कौन-सी चीलज है, जो आपको सबसे पसंद हैं, ताकि हम उसीसे आपकी खातिर कर सकें।

दीना ने जवाब दिया कि जिस चीज को देखकर मैं बहुत खुश हूं, वह आपकी जमीन है। हमारे यहां जमीन की कमी है और वह उपजाऊ भी इतनी नहीं होती, लेकिन यहां उसका कोई पार नहीं है और वह जमीन उपजाऊ भी खूब है। मैंने तो अपनी आंखों से यहां-जैसी धरती दूसरी देखी नहीं।

दुभाषिये ने दीना की बात अपने लोगों को समझा दी। कुछ देर वे आपस में सलाह करते रहे। दीना समझ नहीं सकता कि वे क्या कह रहे हैं। लेकिन उसने देखा कि वे बहुत खुश मालूम होते है, बड़े हंस रहे हैं और जोर-जोर से बोल रहे हैं। अनंतर वे चुप हुए और दीना की तरफ देखने लगे।

फिर आपस में बात करने लगे। मालूम पड़ा कि जैसे उनमें कुछ दुविधा है। दीना ने पूछा कि उन लोगों में अब किस बात की अटक है। दुभाषिये ने बताया कि उनमें कुछ की राय है कि सरदार से जमीन देने के

बारे में और पूछ लेना चाहिए, गैर-हाजिरी में कुछ कर डालना ठीक नहीं है। दूसरों का खयाल है कि इस बात में सरदार के लौटने की राह देखने की जरुरत नहीं है, जरा-सी तो बात है।

यह विवाद चल रहा था कि एक आदमी बड़ी-सी बालदार टोपी पहने वहां आ पहुंचा। सब चुप होकर उसके संम्मान में खड़े हो गये। दुभाषिये ने कहा कि यही हमारे सरदार है।

दीना ने फौरन अपने सामान में से एक बढ़िया लबाद निकाला और चाय का एक बड़ा डिब्बा, और अन्य चीजें सरदार को भेंट कीं। सरदार ने भेंट स्वीकार की और अपने आसन पर आ बैठा। बैठते ही कोल लोगों ने उससे कुछ कहना शुरु किया। सरदार कुछ देर सुनता रहा, फिर उसने उन्हें चुप रहने का इशारा किया। उसे बाद दीना की तरफ मुखातिब होकर हिन्दुस्तानी में कहा:

"इन भाइयों ने जो कहा, ठीक है। जितनी जमीन चाहे चुन लो। हमारे यहां उसका घाटा नहीं है।"

दीना ने सोचा कि मैं मनचाहे जितनी जमीन कैसे ले सकता हूं। पक्का करने के लिए दस्तावेज वगैरा भी तो चाहिए, नहीं तो जैसे आज इन्होंने कह दिया कि यह तुम्हारी है, पीछे वैसे ही उसे ले भी सकते हैं।

प्रकट में उसने कहा, "आपकी दया के लिए मैं कृतज्ञ हूं। आपके पास बहुत धरती है और मुझे थोड़ी-सी चाहिए। लेकिन मुझे भरोसा होना चाहिए कि मेरा अपना छोटा टुकड़ा कौन-सा है और यह कि वह मेरा ही है। क्या ऐसा नहीं हो सता कि जमीन को नाप लिया जाय और उतना टुकड़ा फिर मेरे हवाले कर दिया जाय? मरना-जीना ईश्वर के हाथ है और संसार में यही चक्कर चलता है। आप दयावान लोग तो मुझे यह देते हैं, पर हो सता है कि पीछे आपकी औलाद उसीको वापस ले लेना चाहे तब?"

सरदार ने कहा, "तुम्हारी बात ठीक है। जमीन तुम्हारे हवाले ही कर दी जायगी।"

दीना ने कहा, "सुना है, यहां एक सौदागर आया था। उसको भी आपने जमीन दी थी और उस बाबत कागज पक्का कर दिया था। वैसे ही मैं चाहता हूं कि कागज पक्का हो जाय।"

सरदार समझ गया।

बोला, "हां, जरुर। यह तो आसानी से हो सकता है। हमारे यहां एक मुंशी है, कस्बे में चलकर लिखा-पढ़ी पक्की कर ली जायगी और रजिस्ट्री हो जायगी।"

दीना ने पूछा, "कीमत की दर क्या होगी?"

"हमारी दर तो एक ही है। एक दिन के एक हजार रुपये।"

दीना समझा नहीं। बोला, "दिन! दिन का हिसाब यह कैसा है? यह बताइये कितने एकड़?"

सरदार ने कहा, ''यह सब गिनना-गिनाना हमसे नही होता। हम तो दिन कि हिसाब से बेचते हैं, जितनी जमीन एक दिन में पैदल चलकर तुम नाप डालो, वही तुम्हारी। और कीमत है ही दिनभर की एक हजार।''

दीना अचरज में पड़ गयां कहा, ''एक दिन में तो बहुत-सी जमीन को घेरा जा सकता है।''

सरदार हंसा। बोला, ''हां, क्यों नही। बस, वह सब तुम्हारी। लेनि एक शर्त है। अगर तुम उसी दिन, उसी जगह न आ गये, जहां से चले थे, तो कीमत जब्त समझी जायगी।''

''लेकिन मुझे पता कैसे चलेगा कि मैं इस जगह से चला था।''

''क्यों, हम सब साथ चलेंगे और जहां तुम ठहरने को कहोगे, ठहरे रहेंगे। उस जगह से शुरु करना और वहीं लौट आना। साथ फावड़ा ले लेना। जहां जरुरी सूमझा, निशान लगा दिया। हर मोड़ पर एक गड्ढा किया और उस पर घास को जरा ऊंचा चिन दिया। पीछे फिर हमलोग चलेंगे और हल से इस निशान से उस निशान तक हदबन्दी खींच देंगे। अब दिन भर में जितना चाहो, बडे-से-बड़े चक्कर तुम लगा सकते हो। पर सूरज छिपने से पहले जहां से चले थे, वहां आ पहुंचना। जितनी जमीन तुम इस तरह नाप लोगे, वह तुम्हारी हो जायगी।''

दीना खुश हुआ। तय हुआ कि अगले सवेरे ही चलना शुरु कर दिया जायगा। फिर कुछ गपशप हुई, खाना-पीना हुआ। ऐसे ही करते-कराते रात हो गई। दीना के लिए उन्होंने खूब आराम का परों का बिस्तर लगा दिया और वे लोग रातभर के लिए विदा हो गये। कह गये कि पौ फटने से पहले ही वे आ जायंगे, ताकि सूरज निकलने से पहले-पहले मुकाम पर पहुंच जाया जाय।

दीना अपने परों के बिस्तरे पर लेटा तो रहा, पर उसे नींद ने आई। रह-रहकर वह जमीन के बारे में सोचने लगता था:

''चलकर मैं कितनी जमीन नाप डालूं कुछ ठिकाना है! एक दिन में पैंतीस मील तो आसानी से कर ही लूंगा। दिन आजकल लंबे होते हैं और पैंतीस मील!-कितनी जमीन उसमें आ जायगी! उसमें से घटिया वाली तो बेच दूंगा या किराये पर उठा दूंगा, लेकिन जो चुनी हुई बढ़िया होगी वहां अपना फाम्र बनाऊंगा। दो दर्जन तो बैल फिलहाल काफी होंगे। दो आदमी भी रखने होंगे। कोई डेढ़ सौ एकड़ में तो काश्त करुंगा। बाकी चराई के लिए।''

दीना रातभर पड़ा जमीन-आसमान के कुलाबे मिलाता रहा। देर-रात कहीं थोड़ी नींद आई। आंख झपी होगी किसी के बाहर से खिलखिलाकर हंसने की आवाज उसके कानों में आई। अचरज हुआ कि यह कौन हो सकता है? उठकर बाहर आकर देखा कि कोल लोगों का वह सरदार ही बाहर बैठा जोर-जोर से हंस रहा है। हंसी के मारे अपना पेट पकड़ रक्खा है। पास जाकर दीना ने पूछना चाहा, ''आप ऐसे हंस क्यों रहे हैं?'' लेकिन अभी पूछ पाया नहीं था कि देखता क्या है कि वहां सरदार तो है नहीं, बल्कि वह सौदागर बैठा है, जो अभी कुछ दिन पहले उसे अपने देश में मिला था ओर जिसने इस जमीन की बात बताई थी। तब दीना उससे पूछने को हुआ कि यहां तुम कैसे हो और कब आये? लेकिन देखा तो वह सौदागर भी नहीं, बल्कि वही पुराना किसान है जिसने मुद्दत हुई तब सतलज-पार की जमीन का पता दिया था। लेकिन फिर जो देखता है तो वह किसान

भी नहीं है, बल्कि खुद शैतान है, जिसके खुर हैं और सींग है। वही वहां बैठा ठट्टा मारकर हंस रहा है। सामने उसके एक आदमी पड़ा हुआ है–नंगे पैर, बदन पर बस एक कुर्त्ता–धोती। जमीन पर वह आदमी औंधे मुंह बेहाल पड़ा है। दीना ने सपने में ही ध्यान से देखा कि ऐसा पड़ा हुआ आदमी कौन है और कैसा? देखता क्या है कि वह आदमी दूसरा कोई नहीं, खुद दीना ही है और उसकी जान निकल चुकी है। यह देखकर मारे डर के वह घबरा गया। इतने में उसी आंख खुल गई।

उठकर सोचा कि सपने में आदमी जाने क्या–क्या वाहियात बातें देख जाता है। अंह्! यह सोचकर मुंह मोउ़ दरवाजे के बाहर झांककर जो देखा तो सवेरा होनेवाला था। सोचा, समय हो गया। उन्हें अब जगा देना चाहिए। चलने में देर ठीक नहीं।

वह खड़ा हो गया और गाड़ी में सोते हुए अपने आदमी को जगाया। कहा कि गाड़ी तैयार करो। खुद कोल लोगों को बुलाने चल दिया।

जाकर कहा, "सवेरा हो गया है। जमीन नापने चल पड़ना चाहिए।" कोल लोग सब उठे और इकट्ठे हुए। सरदार भी आ गये। चलने से पहले उन्होंने चाय की तैयारी की और दीना को चाय के लिए पूछा। लेकिन चाय में देर होने का खयाल कर उसने कहा, "अगर जाना है तो हमको चल देना चाहिए। वक्त बहुत हो गया।"

कोल तैयार हुए और सब चल पड़े। कुछ घोड़े पर, कुछ गाड़ी में। दीना नौकर के साथ अपनी छोटी बहली में सवार था। फावड़ा उसने साथ रख लिया था। खुले मैदान में जब पहुंचे, तड़का फूट ही रहा था। पास एक ऊंची टेकड़ी थी, पार खुला बिछा मैदान। टेकड़ी पर पहुंचकर गाड़ी–घोड़ों से सब उतर आये और एक जगह जमा हुए। सरदार ने फिर आगे जाने कितनी दूर तक फैले मैदान की तरफ हाथ उठाकर दीना से कहा कि देखते हो, जहां तक यह सब, आंख जाती है वहां तक, हमलोगों की जमीन है। उसमें जितनी तुम चाहों, ले लो।

दीना की आंखें चमक उठीं। धरती एकदम अछूती पड़ी थी। हथेली की तरह हमवार और मुलायम। काली ऐसी कि बिनौला। और जहां कहीं जरा निचान था, वहां छाती–छाती जितनी तरह–तरह की हरियाली छाई थी।

सरदार ने अपने सिर की रोएंदार टोपी उतारी और धरती पर रख दी। कहा "यह निशान रहा। यहां से चलो और यहां आ जाओ। जितनी जमीन चल लोगे, वहीं तुम्हारी।"

दीना ने भी रुपये निकाले और टोपी पर निगकर रख दिये। फिर उसने पहना हुआ अपना कोट उतार डाला और धोती को कस लिया। अंगोछे में रोटी रक्खी, आस्तीनों चढ़ाई, पानी का बन्दोबस्त किया, आदमी से फावड़ा लिया, और चलने को तैयार खड़ा हो गया। कुछ क्षण सोचता रह गया कि किस तरफ को चलना बेहतर होगा। सभी तरफ का लालच था।

उसने तय किया कि आगे देखा जायगा। पहले तो सामने सूरज की तरफ ही चला चलूं। एक बार पूरब की ओर मुंह करके खड़ा हो गया, अंगड़ाई लेकर बदन की सुस्ती हटाई और धरती के किनारे सूरज के मुंह चमकाने का इंतजार करने लगा।

सोचने लगा कि मुझे वक्त नहीं खोना चाहिए और ठंड-ठंड में रास्ता अच्छा पार हो सकता है। सूरज की पहली किरण का उनकी ओर आना था कि दीना, कंधे पर फावड़ा संभाल, खुले मैदान में कदम बढ़ाकर चल दिया।

शुरु में वह न धीमे चला, न तेज। हजार-एक गज चलने पर वह ठहरा। वहां एक गड्ढा किया और घास ऊंची चिन दी कि आसानी से दीख सके। फिर आगे बढ़ा। उसे बदने में फुर्ती आ गई। उसने चाल तेज कर दी। कुछ देर बाद दूसरा गड्ढा खोदा।

अब पीछे मुड़कर देखा। सूरज की धूप में टेकड़ी साफ दीखती थी। उस पर आदमी खड़े थे और गाड़ी के पहियों के आरे तक चमकते दीखते थे। अंदाजन तीन मील तो वह आ गया होगा। धूप में ताप आता जाता था। कुर्ते पर से बास्कट उतारकर उसने कंधे पर डाल ली और फिर चल पड़ा। अब खासी गर्मी होने लगी। उसने सूरज की तरफ देखा। वक्त हो गया था कि कुछ खाने-पीने की भी सोची जाती।

"एक पहर तो बीत गया। लेकिन दिन में चार पहर होते हैं। अंह्, अभी जल्दी है। लेकिन जूते उतार डालूं।" यह सोच उसने जूते उतारकर अपनी धोती में खोंस लिये और बढ़ चला। अब चलना आसान था।

सोचा, "अभी तीन-एक मील तो और भी चला चलूं। तब दूसरी दिशा लूंगा। कैसी उमदा जगह ह। इसे हाथ से जाने देना हिमाकत है; लेकिन क्या अजब बात है कि जितना आगे बढ़ो, उतनी जमीन एक-से-एक बढ़कर मिलती है।"

कुछ देर वह सीधा बढ़ा चला। फिर पीछे मुड़कर देखा तो टेकड़ी मुश्किल से दीख पड़ती थी और उस पर के आदमी रेंगती चींटी-से मालूम होते थे और वहां धूप में जाने क्या कुछ चलता हुआ-सा दीख पड़ता था।

दीना ने सोचा, "ओह, मैं इधर काफी बढ़ आया हूं। अब लौटना चाहिए।" पसीना बेहद आ रहा था और प्यास भी लग आई थी।

यहां ठहरकर उसने गड्ढा किया, ऊपर घास को ढेर चिन दिया। उसके बाद पानी पीकर सीधा बाईं। तरफ मुड़ गया। चलता चला गया, चलता चला गया। घास ऊंची थी और गरमी बढ़ रही थी। वह थकने लगा। उसने सूरज की तरफ देखा। सिर पर दोपहर हो आई थी।

सोचा, अब जरा आराम कर लेना चाहिए। वह बैठ गया। रोटी निकालकर खाई और कुछ पानी पिया। लेटा नहीं कि कहीं नींद न आ जाय। इस तरह कुछ देर बैठ, फिर आगे बढ़ चला।

पहले तो चलना आसान हुआ। खाने से उसमें दम आ गया था। लेकिन गरमी तीखी हो चली और आंखों में उसके ऊंघ-सी आने लगी। तो भी वह चलता ही चला गया। सोचा कि तकलीफ घड़ी-दो-घड़ी की है, आराम जिंदगी भर का हो जायगा।

इस तरह भी उसने काफी लम्बी राह नापी। वह बाईं तरफ मुड़ने वाला ही था कि आगे जमीन उपजाऊ दिखाई दी। उसने सोचा कि इस टुकड़े को छोड़ना तो मूर्खता होगी। यहां सनी की बाड़ी ऐसी उगेगी

कि क्या कहना! यह सोच उसने उस टुकड़े को भी नाप डाला और पार आकर गड्ढे का निशान बना दिया। फिर दूसरी तरफ मुड़ा। जो टेकड़ी की तरफ देखा तो ताप के मारे हवा कांपती-सी मालूम हुई। उस कंपकंपी के धुंधकारे में से वह टेकड़ी की जगह मुश्किल से चीन्ह पड़ती थी।

दीना ने सोचा कि क्षेत्र की ये दो भुजाएं मैंने ज्यादा मैंने नाप डाली है। अब इधर कुछ कम ही रहने दूं। वह तेज कदमों से तीसरी तरफ बढ़ा। उसने सूरज को देखा। सूरज कोई दो-तिहाई। अपना चक्कर काट चुका था। मुकाम से अभी वह दस मील दूर था। उसने सोचा कि छोड़ा जाने भी दो। मेरी जमीन की एक बाजू छोटी रह जायगी तो छोटी सही। लेकिन अब सीधी लकीर में मुझे वापस चलना चाहिए। जो ऐसे कहीं दूर निकल गया। तो बाजी गई। अरे, इतनी ही जमीन क्या थोड़ी है!

यह सोच दीना ने वहां तीसरे गड्ढे का निशान डाल दिया और टेकड़ी की तरफ मुंह कर ठीक उसी सीध में चल दिया।

नाक की सीध बांधकर सवह टेकड़ी की तरफ चला। लेकिन अब चलते मुश्किल होती थी। धूम उसका सत ले चुकी थी। नंगे पैर जगह-जगह कट और छिल गये थे और टांगें जवाब दे रही थीं। जरा आराम करने का उसका जी हुआ, लेकिन यह कैसे हो सकता था? सूरज छिपने से पहले उसे वहां पहुंच जाना था। सूरज किसी की बाट देखता बैठा नहीं रहता! वह पल-पल नीचे ढल रहा था।

उसके मन में सोच होने लगा कि मुझसे बड़ी भूल हुई। मैंने इतने पैर पसारे क्यों? अगर कहीं वक्त तक न पहुंचा तो?

उसने फिर टेकड़ी की तरफ देखा, फिर सूरज की तरफ। मुकाम से अभी वह दूर था और सूरज धरती के पास झुक रहा था।

दीना जी-तोड़ चलने लगा। चलने में सांस फूलती और कठिनाई होती थी; लेकिन तेज-पर तेज कदम वह रखता गया। बढ़ा चला, लेकिन जगह अब भी दूर बनी थी। यह देख उसने भागना शुरु किया। कंधे से वास्कट फेंक दी, जूते दूर हटाए, टोपी अलग की,बस साथ में निशान लगाने के लिए वह हल्का फावड़ा रहने दिया।

रह-रहकर सोच होता कि मैं क्या करुं? मैंने बिसात से बाहर चीज हथियानी चाही।

उसमें बना काम बिगड़ा जा रहा है। अब सूरज छिपने से पहले मैं वहां कैसे पहुंचूंगा?

इस सोच और डर के कारण वह और हांफने लगा। वह पसीना-पसीना हो रहा था, धोती गीली होकर चिपकी जा रही थी और मुंह सूख गया था। लेकिन फिर भी वह भागता ही जाता था। छाती उसकी लुहार की धौंकनी की तरह चल उठी, दिल भीतर हथौड़े की चोट-सा धड़कने लगा। उधर टांगे बेबस हुई जा रही थीं। दीना को डर हुआ कि इस थकान के मारे कहीं गिरकर ढेर ही न हो जाय।

हाल यह था, पर रुक वह नहीं सका। इतना भागकर भी अगर मैं जब रूकूंगा तो वे सब लोग मुझ पर हंसेगे और बेवकूफ बनायंगे, इसलिए उसने दौड़ना न छोड़ा दौड़े ही गया। आगे कोल लोगों की आवाज सुन पड़ती थी। वे उसको जोर जोर से कहकर बुला रहे थे। इन आवाजों पर उसका दिल और सुलग उठा। अपनी आखिरी ताकत समेट वह दौड़ा।

सूरज धरती से लगा जा रहा था। तिरछी रोशनी के कारण वह खूब बड़ा और लहू-सा लाल दीख रहा था। वह अब डूबा, अब डूबा। सूरज बहुत नीचे पहुंच गया था। लेकिन दीना भी जगह के बिल्कुल किनारे आ लगा था। टेकड़ी पर हाथ हिला-हिलाकर बढ़ावा देते हुए कोल लोग उसे सामने दिखाई देते थे। अब तो जमीन पर रक्खी वह टोपी भी दीखने लगी, जिस पर उसकी रकम भी रक्खी थी। वहां बैठा सरदार भी दिखाई दिया- वह पेट पकड़े हंस रहा था।

दीना को सपने की याद हो आई।

उसने सोचा कि हाय, जमीन तो काफी नाप डाली है, लेकिन क्या ईश्वर मुझे उसको भोगने के लिए बचने देगा? मेरी जान तो गई दीखती है। मैं मुकाम तक अब नहीं पहुंच सकूंगा। दीना ने हसरत-भरी निगाह से सूरज की तरफ देखा सूरज धरती को छू चुका था। वह बची-खुची अपनी शक्ति से आगे बढ़ा । कमर झुकाकर भागा, जैसे कि टांगें साथ न देती हों। टेकड़ी पर पहुंचते-पहुंचते अंधेरा हो आया था। उसने ऊपर देखा-सूरज छिप चुका था। उसके मुंह से एक चीख-सी निकल गई, "ओह, मेरी सारी मेहनत व्यर्थ गई!"-यह सोचकर वह थमने को हुआ, लेकिन उसे सुन पड़ा कि खड़े हैं और उन्हें सूरज अब भी दीख रहा होगा। सूरज छिपा नहीं है, अगर्चे मुझको नहीं दीखता। यह सोचकर उसने लंबी सांस खींची और टेकड़ी पर आंख मूंदकर दौड़ा। चोटी पर अभी धूप थी। पास पहुंचा और सामने टोपी देखी। बराबर सरदार बैठा वहीं पेट पकड़े हंस रहा था। दीना को फिर अपना सपना याद आया और उसके मुंह से चीख निकल पड़ी। टांगों ने जवाब दे दिया।

वह मुंह के बल आगे को गिरा और उसके हाथ टोपी तक जा पहुंचे।

"खूब! खूब !" सरदार ने कहा, "देखो, उसने कितनी जमीन ले डाली !"

दीना का नौकर दौड़ा आया और उसने मालिक को उठाना चाहा। लेकिन देखता क्या है कि मालिक के मुंह से खून निकल रहा है।

दीना मर चुका था। कोल लोग दया से और व्यंग्य से हंसने लगे। नौकर ने फावड़ा लिया और दीना के लिए कब्र खोदी और उसमें लिटा दिया। सिर से पांव तक कुल दो गज (छः फुट) जमीन उसे काफी हुई।

13 जीम्मेदारियों के भार को उठाईयें

नेताओं के पास कई ज़िम्मेदारियां होती हैं हम नेताओं के रूप में स्वयं को नहीं देखा जाना चाह सकते हैं क्योंकि हम जिम्मेदारी नहीं चाहते हैं। ऐसे नेतृत्व वाले लोग हैं जो यह सुनिश्चित करने के लिए चाहते हैं कि हर कोई उनके बोझ को जानता है। उनकी ज़िम्मेदारी जाहिर तौर पर उन पर भारी होती है। हम ऐसे नेता जान

को सकते हैं जो कार्य करते हैं जैसे कि हम जानबूझकर अपने जीवन को कठिन बनाने की कोशिश कर रहे हैं। वे किसी भी गलती या किसी प्रश्न का अर्थ जानबूझकर अपनी जिम्मेदारी के वजन को जोड़ते हैं। ऐसा लगता है कि वे अपने कंधे पर दुनिया का वजन ले रहे हैं नेताओं में वास्तव में बहुत ज़िम्मेदारी है वे न केवल प्रत्येक परियोजना के सभी टुकड़ों को एक साथ फिट करते हैं, बल्कि लोगों को अच्छी तरह से मिलाकर काम करते हैं। कुछ नेताओं ने चीजों को पूरा करने के विवरण पर ध्यान दिया जबकि दूसरों ने उनके दृष्टिकोण का वर्णन किया। नेतृत्व केवल ज़िम्मेदारी लेने का मामला नहीं है, बल्कि हम इसे कैसे लेते हैं। हमारे नेतृत्व का उपयोग करने के लिए कोई भी सही तरीके से नहीं है हम में से प्रत्येक अपने स्वयं के व्यक्तिगत तरीके से नेतृत्व की जिम्मेदारियां उठाते हैं। हम प्रत्येक अपने लिए ज़िम्मेदारी का भार उठाते हैं। हमारा नेतृत्व हमारी शिक्षा या शीर्षक या स्थिति विवरण से बाहर नहीं बढ़ता। नेतृत्व निम्नलिखित नियमों या चेकलिस्ट या किसी निश्चित पुस्तक को पढ़ने का मामला नहीं है। हम नेता नहीं बनते हैं क्योंकि अन्य लोग हमें बताते हैं कि हम हैं। हम कौन हैं, उनमें से नेतृत्व बहती है। जैसा कि हम अपने आप को और अधिक गहराई से जान लेते हैं, हम इसके साथ आराम से शुरू करना शुरू करते हैं कि हम कैसे जीते हैं? हम सीखते हैं कि जिम्मेदारी के वजन को कैसे उठाना है, अपने लिए नेतृत्व के लिए। हमारी जिम्मेदारियों का वजन कितना भारी है? क्या हम अपने हिस्से से अधिक ले जा रहे हैं? किसकी जिम्मेदारियां हम ले रहे हैं? क्या हम उत्तरदायित्व का भार उठा रहे हैं? कई भिक्षुओं के बारे में मुझे पता है कि जिम्मेदारी के वजन को ले जाने के तरीके अन्य नेताओं से अलग हैं। भिक्षुओं की कर्तव्यों और जिम्मेदारियों अन्य नेताओं के उन लोगों से भिन्न हो सकती हैं। भिक्षुओं के पास उन तरीकों और व्यवहार भी हैं जो मठवासी जीवन से बढ़ते हैं। एक भिक्षु की प्रत्येक जिम्मेदारी सेवा का कार्य है। महासभा के रूप में या जिम्मेदारी की दूसरी स्थिति में या शारीरिक श्रम करना, वे समुदाय की सेवा करते हैं हर गतिविधि समुदाय जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा है जब मैंने देखा है कि भिक्षुओं का घबराहट या निराश हो गया है, मैंने कभी नहीं देखा है कि उनके कंधों पर दुनिया का भार उठाया जाता है। हालांकि उनकी ज़िम्मेदारियां गंभीर हैं, वे भारी नहीं हैं कुछ प्रकार की जिम्मेदारी दूसरों की तुलना में अधिक स्वागत है मुझे पता है कि प्रत्येक भिक्षुओं के पास कर्तव्य होते हैं, वे दूसरों से अधिक पसंद करते हैं। मठ की जिंदगी का हिस्सा जिम्मेदारी के वजन ले रहा है। यहां तक कि जब वे कार्य नहीं करते हैं, तो वे काम करना पसंद करते हैं, प्रत्येक कार्य को सेवा माना जाता है समुदाय का प्रत्येक सदस्य अपनी जिम्मेदारियों को अपने तरीके से रखता है कुछ भिक्षुओं को दूसरों की तुलना में जप से अधिक उपहार दिया जाता है, कुछ अधिक मेहमान नवाज होते हैं मठवासी जीवन का इरादा उन कार्यों से बचने के तरीकों को नहीं खोज रहा है जिन्हें आप आनंद नहीं लेते। भिक्षुओं का ध्यान नहीं है और सबसे अच्छे मंत्रों का जप करते हैं। समुदाय के प्रत्येक सदस्य को प्रत्येक तरह की जिम्मेदारी करने का अवसर है। इरादा प्रत्येक भिक्षु को समुदाय की जरूरतों के संतुलन और कौशल को खोजने की इजाजत देता है।

हम में से प्रत्येक हमारे अपने तरीके से ज़िम्मेदारी का भार उठाते हैं। साथ में हम पूरे समुदाय की ज़िम्मेदारी का भार उठा रहे हैं। प्रत्येक सदस्य के विस्तार के दौरान समुदाय के किसी भी सदस्य को अधिक बोझ नहीं होना चाहिए। हमारी ले जाने की ज़िम्मेदारी का एक हिस्सा उसे आराम करने के लिए समय ले रहा है। हम जिम्मेदारी के वजन को कैसे उठा रहे हैं? मुझे पता है कि कुछ नेताओं को आराम और प्रतिबिंब के लिए उनकी जरूरतों को समझ में नहीं आता। वे मठवासी जीवन की दैनिक अनुसूची से सीख सकते हैं जो काम में संतुलन और बाकी की तलाश करता है। मैं जानता हूं कि जो नेता जिम्मेदारी के भार को लेकर विश्वास करते हैं, वे प्रतिस्पर्धी घटना हैं। वे यह आश्वस्त हो जाते हैं कि जो भी सबसे ज्यादा बोझ को दूर करता है वह

श्रेष्ठ नेता है। प्रत्येक दिन एक ओलंपिक टीम के लिए एक परीक्षण की तरह आ रहे हैं, वे अपनी क्षमता बढ़ाने का प्रयास करते हैं। मुझे विश्वास नहीं है कि अधिक से अधिक जिम्मेदारी का भार उठाते हुए हमें मजबूत होता है जब मैं अधिक मात्रा में वजन बढ़ाता हूं तो मुझे थका हुआ होता है । मैं आमतौर पर अपना ध्यान अधिक से अधिक ध्यान देता हूं कि मैं क्या ले रहा हूं और मैं कहाँ जा रहा हूं ऐसे समय होते हैं जब मुझे बैठने, आराम करने, गहरी सांस लेना और अपना बीयरिंग मिलना पड़ता है। ज़िम्मेदारी का भार उठाते हुए हमारे कंधे पर दुनिया का वजन नहीं ले जा रहा है। हम शायद दूसरों की तुलना में कुछ ज़िम्मेदारियों का आनंद लेते हैं कार्य और कर्तव्य हैं जो हम दूसरों को पसंद करते हैं हमें हमेशा यह चुनने की ज़रूरत नहीं है कि हम किस जिम्मेदारियों को स्वीकार करते हैं। कुछ नेतृत्व जिम्मेदारियां मुझे दूसरों की तुलना में अधिक खुशी देती हैं यह जरूरी नहीं कि ये कार्यों को पूरा करने में मैं सबसे अच्छा हूं जो मुझे सबसे अधिक संतुष्टि देती है। हमारे कंधों से दुनिया का वजन लेना हम सब कुछ करने के लिए ज़िम्मेदार नहीं हैं। जब मुझे सबसे ज़्यादा महसूस होता है तो ज़िम्मेदारी का भारी भार तब होता है जब मैं इसे खुद रखता हूं नेतृत्व, जैसे मठवासी जीवन, हमारे और हमारे आस-पास के लोगों में सबसे अच्छे से बाहर लाने का इरादा है। पूर्णता की केवल एक ही आवश्यकताएं हैं जो हम खुद पर थोपना चाहते हैं। हम यह सुनिश्चित करने के लिए ज़िम्मेदार नहीं हैं कि कोई गलती नहीं है। मठवासी जीवन की तरह, नेतृत्व उन लोगों के लिए है जो नई चीजों की कोशिश करना चाहते हैं। हम अपने आप को तौलना करते हैं, और अपेक्षाओं और अपेक्षाओं के साथ नीचे एक दूसरे अनावश्यक जिम्मेदारियों का बोझ हमारे लिए नहीं है। नेताओं, और भिक्षुओं, जो मुझे प्रेरणा देते हैं कि हमें क्या लेना चाहिए और हम क्या नहीं करते। जब हम भावनाओं को अलग करते हैं जिससे हमें आगे बढ़ने की ज़रूरत नहीं होती है तो हम नृत्य करने में सक्षम हैं। नेतृत्व जिम्मेदारी किस वजन का आप आज सबसे ज्यादा पसंद करना चाहते हैं? हम इस हफ्ते जिम्मेदारी के भार कैसे उठा रहे हैं?

14 और इन दिनों कैसा चल रहा हैं

जब हम राय या राजनीति या जातीयता में हमारे मतभेदों की परवाह किए बिना, अन्य लोगों के लिए सरल मानव शालीनता और सम्मान की हमारी समझ खो बैठते हैं? मैं व्हाईट हाउस के उस आदमी पर एक उंगली को इंगित कर सकता हूं जो एक बदसूरत और विभाजनकारी स्वर को स्थापित करने के लिए है। लेकिन शायद यह पहले ही सफल होने के लिए आ रहा था, सबसे विशेष रूप से ऑनलाइन संदेश बोर्डों में, जहां नाम न छापने, कच्चे तेल और घृणित भाषा को कवर किया गया है। इसे बदलना होगा- और परिवर्तन आपके साथ शुरू होगा

"क्या?" आप कहते हैं, मैं डीसी से बाहर आने वाले व्यंग्यात्मक या कड़े ऑनलाइन चर्चाओं में शामिल नहीं हूं। न तो मैं हूं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम अपनी व्यक्तिगत बातचीत से कैसे निपटते हैं, इसके बारे में हम एक नए दृष्टिकोण नहीं ले सकते। हमारे शब्द बात करते हैं हम अधिक करुणा दिखा सकते हैं हम दूसरों की राय का सम्मान करना चुन सकते हैं, भले ही वे हमारे अपने विरोध में हों।

हम "ठंपर के नियम" के नाम से जाना जा सकता है। डिज़्नी फिल्म बांबी में, थंबर नामक एक युवा खरगोश है, जो टिप्पणी करते हैं कि फोंम बांबी "थोड़े वॉकबली" हैं और "बहुत अच्छी तरह से नहीं चलती।" ठीक है, थंबर की मां इस तरह की भाषा के लिए नहीं जाती और उसे एक हम सभी का उपयोग कर सकते हैं सलाह का टुकड़ा, मौखिक सुनहरा नियम का एक प्रकार:

"यदि आप कुछ अच्छा नहीं कह सकते, तो कुछ भी मत कहो।" सेंट फ्रांसिस की पुस्तक, द लास्ट्स ऑफ द लेस्न्स ऑफ़ द लास्ट्स, द लाउज़ टू साईप्लीसीटी एंड आर्मररिटीज़ इन दि डेली लाइफ, जॉन माइकल टैलबोट, हमें बताए गए अन्य तरीके बता सकते हैं जिस तरह से हम हर दिन परिवार, दोस्तों, सहकर्मियों और परिचितों के साथ बातचीत करते हैं यह एक छोटा सा कदम है कि कम से कम दुनिया के एक छोटे से कोने को एक बेहतर, अधिक दयालु स्थान बना सकता है। मैंने टैलबोट के विचारों को डिस्टिल्ड किया है, जो सेंट फ्रांसिस के जीवन से प्रभावित थे, तीन प्राथमिक चरणों में:

देखो। बात सुनो। क्षमा करना।

1 देखो कुछ भी नहीं बताता है कि आप किसी दूसरे व्यक्ति में रुचि रखते हैं जैसे कि आपका पूरा ध्यान दें। इसका मतलब है फोन नीचे, अधिमानतः बंद और अपनी जेब या पर्स में बसे, और आँखें आप से भर में व्यक्ति पर केंद्रित है लेखक जी.के. चेस्टरटन ने सेंट फ्रांसिस के दृष्टिकोण को आँख से संपर्क करने का तरीका बताया: फ्रांसिस की आंखों में देखा गया कोई भी व्यक्ति कभी नहीं था कि फ्रांसिस वास्तव में उन पर रूचि रखते थे; अपने निजी जीवन में कब्र से कब्र तक; कि वे खुद मूल्यवान थे और गंभीरता से लिया। जब हम दूसरों से बात करते हैं तो क्या हम ऐसा नहीं कर सकते हैं? दूसरों को दिखाएं जिन्हें वे मूल्यवान और गंभीरता से लिया गया है?

2. सुनो। जब किसी अन्य व्यक्ति को सुनना, हमें आलोचकों की आलोचना के लिए सभी-भी-मानवीय आग्रहों का सामना करना पड़ता है कि वे क्या कह रहे हैं। जैसा कि टैलबोट कहते हैं, "करुणा यह नहीं है कि क्या आप किसी को कह रहे हैं की आप को स्वीकार या अस्वीकार करते हैं; यह एक और व्यक्ति को समझने के बारे में है यह आपके एजेंडे को बढ़ावा देने के बारे में नहीं है; यह किसी और की समझ के बारे में है। "इसका मतलब है कि दूसरे व्यक्ति को पहले बोलना, बात करने के लिए प्रतीक्षा करने की बजाय सुनना

3. क्षमा करें माफी का मतलब है कि हमारे निर्णय का सिंहासन उतरना और उन लोगों को रिहा करना जो आपके शत्रुता और क्रोध से आपको नाराज़ हैं। हर व्यक्ति को एक और अवसर दिया जाना चाहिए। और आपके सबसे महत्वपूर्ण रिश्तों को एक तिहाई और चौथा मौका मिल सकता है टैलबॉट फ्रेडरिक बुचर कहते हैं कि माफी यह कहने का एक तरीका है: आपने कुछ अकथनीय किया है, और सभी अधिकारों से मुझे फोन करना चाहिए कि वह हमारे बीच से निकल जाता है यद्यपि मैं कोई गारंटी नहीं देता हूं, मैं आपके द्वारा जो किया है उसे भूलने में सक्षम होगा, मैं इसे हमारे बीच खड़ा होने देने से इनकार करता हूं मैं अब भी आपको अपने दोस्त के लिए चाहता हूं क्रोध हमें किसी भी अच्छा करने की तुलना में अधिक नुकसान पहुंचाए का एक तरीका है अमेरिकी आध्यात्मिकता के पिता के रूप में, राल्फ वाल्डो इमर्सन ने एक बार कहा था: "हर मिनट के लिए

आप गुस्सा रहते हैं, आप मन की शांति के साठ सेकंड दे देते हैं।" टैलबोट की पुस्तक में, मुझे एक कविता की भी याद दिला दी गई थी, जिसे सेंट फ्रांसिस ने एक बार लिखा था भगवान की प्रकृति के बारे में एक करीबी दोस्त के लिए मैंने इसे नीचे समझाया है। आज कोई भी पुरुष, महिला या बच्चा जीवित नहीं हो सकता है जो इन सब गुणों को घेरता है, लेकिन मुझे लगता है कि वे ऐसे गुण हैं जो हम हर दिन प्रत्येक के लिए प्रयास कर सकते हैं।

आप प्यार में हैं।

आप बुद्धि हैं

आप नम्रता हैं

आप धीरज हैं

आप आराम कर रहे हैं तुम शांति कर रहे हो

आप खुशी और खुशी हैं

आप न्याय और संयम है

आप नम्रता हैं

आप हमारे संरक्षक और रक्षक हैं

आप हमारी हिम्मत हैं

आप हमारे स्वर्ग और हमारी आशा है।

3 जैसे हम बड़े हो जाते हैं,

यह लग सकता है कि सभी शुरुआत हमारे पीछे हैं हम सभी जीवनशैली, स्नातक स्तर की पढ़ाई, नौकरी पाने, शादी करने आदि के बारे में आम तौर पर मनाते हैं, और हम मान सकते हैं कि फिर से शुरू करने में बहुत देर हो चुकी है, कि हमारी शुरूआत ने हमें पारित कर दिया है। यह सत्य से बहुत दूर है, हालांकि, क्योंकि जीवन फिर से शुरू करने के लिए व्यावहारिक रूप से अनन्त संभावनाएं प्रदान करता है।

नई शुरुआतएं पहले प्राकृतिक होती हैं, यह महसूस करें: प्रकृति में कुछ भी कभी स्थिर या रैखिक नहीं है। सब कुछ चल रहा है और ध्रुव्यों के निरंतर नृत्य में बदल रहा है क्योंकि हम मौसम, जन्म और मृत्यु के बीच में उतार-चढ़ाव करते हैं, श्वास लेते हैं और श्वास बाहर करते हैं। और इन बातों के भीतर, चक्र के भीतर चक्र होते हैं। यह समुद्र के ज्वार की तरह है; साल के लिए और हर दिन के लिए एक उच्च ज्वार होता है, और हर कुछ क्षणों में एक और तरंग चमक जाती है और फिर घट जाती है। इसके अलावा, सागर कई अन्य चक्रों के साथ जुड़ा हुआ है, भूमि पर जल चक्र और अनगिनत पौधे और जानवरों के जीवन चक्रों में योगदान देता है। वही

पृथ्वी पर किसी भी पारिस्थितिकी तंत्र के लिए सच है, तो यह कैसे मानव जीवन के लिए भी सच नहीं हो सकता है?

शुरू करने का फैसला बस प्रकृति के बाकी हिस्सों की तरह, हमारे जीवन में बहुत सी शुरुआतएं और अंत हैं, और सब कुछ हमेशा बदल रहा है। यद्यपि यह हो सकता है कि हम अपने जीवन की शुरुआत के मुकाबले कहीं ज्यादा चले गए हैं, फिर भी कई बार फिर से शुरू करने के कई मौके हैं क्योंकि हर नए दिन के साथ-साथ हर पल के साथ हमें शुरुआत भी मिलती है। चाहे हम इसे चुनते हैं या नहीं, परिवर्तन आ जाएगा। लेकिन, हमें निष्क्रिय रूप से स्वीकार नहीं करना पड़ता है कि जिस तरह से चीजें हमेशा हमेशा की तरह रही हैं, उनका अब भी होना चाहिए। या वह ज़िंदगी बिगड़ने के लिए किस्मत में है मनुष्य के रूप में, हमारे पास चुनने के लिए मन की एक शानदार शक्ति है, और उस शक्ति के साथ परिवर्तन की शक्ति आता है। इस प्रकार, परिवर्तन की ओर पहला कदम परिवर्तन हो जाने का निर्णय लेना है।

स्पष्ट विजन सेट करें यदि हम चुनाव को बदलने के लिए करते हैं, तो हमें स्पष्ट रूप से पता होना चाहिए कि हम कैसे बदलना चाहते हैं। यही कारण है कि आप जहां जाना चाहते हैं, इसका एक बहुत स्पष्ट दृष्टिकोण सेट करना महत्वपूर्ण है यह आमतौर पर कहा जाता है कि जीवन एक यात्रा है, लेकिन आप किसी कार में नहीं जाना चाहते हैं और बिना किसी भी विचार के आप भाग लेना चाहते हैं, ठीक है? यदि आप निश्चित रूप से जानते हैं कि आपका अगला गंतव्य जीवन में कहाँ है, तो आप वहां पहुंचने के लिए एक बहुत स्पष्ट योजना बना सकते हैं, और आप यात्रा के कठिन क्षणों को सामना करने में सक्षम होंगे क्योंकि आपको पता है कि आप अंत में कहाँ खत्म होंगे ।

पुराने के अवशेषों को दूर धोएं जो बहुत आसान लगते हैं, लेकिन फिर, फिर से शुरू करना कितना कठिन है और हमारे जीवन को ऐसे तरीकों से बदलने के लिए जो वास्तव में मायने रखता है? नए साल के संकल्प सेट होते हैं और फिर तुरंत टूटा जाता है, और हमारे सबसे सुखी लक्ष्य और योजनाएं विलंब का शिकार होती हैं। समस्या की सामान्य जड़ों में से एक यह है कि हम अपनी यात्रा पर बहुत अधिक सामान पैक कर रहे हैं। यह सामान नकारात्मक भावनाओं के रूप में है, जिसे हमने जारी नहीं किया है और पूर्व विश्वासों को स्वीकार करते हैं जो कि हम सभी को वापस कर सकते हैं जो हम कर सकते हैं। इसलिए, यदि आप वास्तव में परिवर्तन करना और नए सिरे से शुरू करना चाहते हैं, तो आपको निरंतर और ईमानदारी से अपने अंदरूनी दिल और मन की जांच करना और पुनः जांच करना होगा, और उन सभी को छोड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए जो आपके सर्वोच्च स्वभाव की सेवा नहीं करते। मैं अत्यधिक आत्म-परीक्षा के दैनिक अभ्यास के रूप में ध्यान की सिफारिश करता हूं।

नवीनीकरण आता है किसी बात को याद रखने वाला कोई अन्य महत्वपूर्ण बात यह नहीं है कि कोई भी बदलाव नहीं आता है हम साल से साल में कभी भी एक ही व्यक्ति नहीं होते हैं, या मिनट से लेकर मिनट तक भी नहीं। कुंजी, अगर हम जीवन में एक वांछनीय गंतव्य पर पहुंचना चाहते हैं, तो सक्रिय होना चाहिए प्रकृति केवल एंट्रोपी के साथ जड़ता का पुरस्कार, अराजकता, क्षय, और मृत्यु की ओर नीचे की ओर ढलान। दूसरी ओर,

जीवन और विकास, ऊर्जा और गति की आवश्यकता होती है । । और हमेशा से फिर से शुरू करने का संकल्प, कोई बात नहीं क्या।

15 यह अवकाश के दौरान हुआ,

19 93 में ग्रामिण नेशनल स्कूल के खेल का मैदान पर। मैं लगभग 80 लड़कों और लड़कियों की कुल छात्र आबादी वाले एक छोटे से ग्रामीण अकादमी में प्रथम गठबंधन था, जो मेरे छोटे भाई संजय थे। वह मेरे क्रोध का सामना करने में कामयाब रहा था और मैंने कुछ बहुत ही भाईचारे के शब्दों से बात नहीं की थी, जब अचानक, एक कम, खतरा बढ़ने से स्वर्ग से निकल जाना शुरू हुआ। मैं पूरी तरह से सीधी, पतली, सफ़ेद रेखा को आकाश में फैलाने को देखने के लिए समय पर चिंतित था। मैं अपना पहला जेट विमान देख रहा था, सिवाय इसके कि न तो मैं और ना ही खेल के मैदान के किसी भी बच्चे ने कभी जेट विमानों के बारे में सुना, अकेले एक को देखा। तो, मैं तुरंत यह पता लगा कि वह क्या था। यह एक बहुत परेशान भगवान की तुलना में कुछ भी नहीं था एक रेजर ब्लेड ले जा रहा है और झुकाव के नीले रंग खोलने। मैं इस कटौती के दोनों ओर पकड़ने के लिए दैवीय अंकों के डर और कांप में इंतजार कर रहा था और आकाश को अलग खींचता था। मुझे पता था कि उसके बाद वह अपने सिर को दबाएंगे और मुझे सीमस के प्रति अपने क्रोधित व्यवहार का लेखा लेना चाहेंगे। सौभाग्य से, उसने अपने दिमाग को बदल दिया और मुझे सिर्फ अगर मैं अपराध को दोहराया तो वह वास्तव में क्या कर सकता है की प्राप्ति के साथ छोड़ दिया।

और आज, मेरे पास एक समान अनुभव था, हालांकि संजय या कठोर शब्दों के बिना मैं मिर्जापुर में अपने घर के बाहर चट्टान के किनारे पर ग्लाइडर पर बैठा था, पिना क्रीक पर पश्चिम की ओर देख रहा था। एक शानदार सूर्यास्त लाल और गुलाबी और नारंगी टिंगियों को फ़िरोज़ा रंग के आकाश में पोंछते थे। और सिर्फ एक जेट विमान ने आकाश को बिगड़ लिया। यह पश्चिम के लिए बहुत दूर था क्योंकि यह पूरी तरह से बेरहम सफारी बना रहा था और इसके निशान रक्त लाल था क्योंकि यह सेटिंग सूर्य के रंग को पकड़ लिया था।

मैं तुरंत समझ गया कि भगवान क्या कर रहे थे वह कैसरियन अनुभाग द्वारा पृथ्वी को वितरित कर रहा था उनके स्केलपेल ने नाजुक झिल्ली को खोल दिया था जो भ्रूणिक धरती रखता था और वह इसे पुनर्जन्म करने वाला था। पृथ्वी के लिए, अपने मानवीय की तरह, कई बार फिर से बिरवाया जाना चाहिए। यीशु ने इतना कहा - दो बार यूहन्ना के सुसमाचार में फरीसी सच्चाई-साधक निकोडेमुस को पढ़ाने के दौरान उन्होंने कहा, "जब तक कोई आदमी फिर से पैदा नहीं होता, वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा।" यह निश्चित रूप से गैर-परक्राम्य डिक्री के रूप में लगातार गलत समझा गया है कि बपतिस्मा ही उद्धार का एकमात्र मार्ग है: यीशु की प्रभुता में अपने विश्वास को मानना और बपतिस्मा लेना या नाश करना - सनातन रूप से। यह एक असामान्य, भयावह प्रतिक्रिया के लिए एक रहस्यमय घोषणा नहीं है लेकिन तथ्य यह है कि मसीह के वक्तव्य का कुछ ईसाई संप्रदाय में H2O या किसी सांप्रदायिक प्रेरण के साथ कुछ भी नहीं करना है, बल्कि यह सच है कि राज्य में प्रवेश करने से मसीह चेतना में बदलाव होता है

ल्यूक का सुसमाचार हमें पुनर्जन्म रूपक पर दूसरा कोण देता है। वह बताता है कि कैसे यीशु ने हमें निम्नलिखित पर निरूपित किया है, "आप दयालु हो सकते हैं जैसे आपके स्वर्गीय पिता दयालु हो।" अब, यीशु अरामी और अरामी शब्द में बोल रहा होगा, अबवोन का मतलब "पिता" ही नहीं है, यह इसका अर्थ है, "ब्रह्मांड के बिरिंग सिद्धांत" या "जो कि सभी का मूल है।" इसके अलावा, करुणा के लिए अरामी शब्द, रहमिम, गर्भाशय के लिए शब्द का बहुवचन है। तो यहां उनके बयान की एक बेहतर गायन हो सकती है, "ब्रह्माण्ड के ब्रह्मांड के सिद्धांत का गर्भ है, वैसे ही आपको गर्भपात होना चाहिए।" इस प्रकार, राज्य में प्रवेश, लगभग क्रमशः स्वयं के अधिक से अधिक और अधिक संस्करणों को ग्रहण करने वाला है हम जन्म मसीह चेतना और फिर, अंततः, हम जन्म भगवान धरती इस कार्य के लिए 4.6 अरब सालों के दौरान सभी निपुणता के साथ झुक गई है। केवल विकास का एक गरीब मॉडल इस दिशा में यादृच्छिक उत्परिवर्तनों के अनुक्रम के रूप में देखेगा, जो किसी तरह से बढ़ते परिष्कृत प्रजातियों को फेंकने का प्रबंधन करता है। यह यात्रा केवल तेजी से परिष्कृत भौतिक विशेषताओं के बारे में नहीं है, बल्कि घनत्व से वास्तविकता के अधिक सूक्ष्म आयामों तक क्वांटम पाली की जाती है भौतिक चट्टान, सूरज से तीसरा, जो गिया मनाया गया था, केवल पहले आधार था।

गैया आयामों में कूद गए, जैविक संस्थाओं के आगमन के साथ-साथ बैक्टीरिया और सरीसृप जैसे जीवित प्राणियों के साथ ही इसे फिर से बंट गया। अगले पुनर्जन्म में स्तनधारियों के आगमन और उनके अंग प्रणालियों के आगमन के साथ भावनात्मक जीवन का उद्भव हुआ। फिर गिया ने बौद्धिक जीवन के माध्यम से खुद को पुनर्जन्म कर दिया, मनुष्य सैपियंस (सोच आदमी) और होमो सैपियन्स सैपियंस (आत्म-चिंतनशील मनुष्य) को फेंक दिया। फिर, केवल 2,500 साल पहले, वह फिर से श्रम में गया और उसने पहली प्रोटोटाइप को आगे बढ़ाया मैं कहूंगा, होनो आध्यात्मिकता (आत्मा आदमी।) गौतम सिद्धार्थ और नासरत का यीशु इनमें से सबसे प्रसिद्ध हैं। लेकिन, प्रोटोटाइप का निर्माण करते हुए, गैया एक पूरी प्रजाति के बिरिंग के संकुचन के साथ तनाव में है, जो ईश्वर-जागरूक होगा; अपनी स्वयं की दिव्यता और सभी अभिव्यक्ति के देवत्व से अवगत है।

कुछ साल पहले, मुझे पृथ्वी के चारों तरफ लाइटवकर्र्स के जाली का एक सपना था, उनमें से एक, अक्षांश और देशांतर के प्रत्येक रेखा के छोर पर और दो पोल; कुल 64,442 उनमें से। वो हैं इस सबसे महत्वपूर्ण जन्म में सहायता करने वाले दाइयों, हिब्रू रहस्यवाद की बहुत प्रबलित लम्बे वावनिक हालांकि यह सच है कि ओण्टोलॉजी फिलोजेनी का पुनर्कथन करती है, यह अभी तक समझा नहीं है कि फाइलजिनी खुद ब्रह्माण्ड विज्ञान का पुनरावृत्त करता है गिया पर जीवनरूपों का विकास, ब्रह्मांडीय नृत्यकला के आयाम-कूद ब्ल्यूप्रिंट पर बारीकी से चल रहा है जो विकासवादी पैनेंथेसिम है। आज हम एक ग्रेड स्कूल के खेल के मैदान पर खड़े होकर डरावने देवता का भय मानते हैं, जब हमें एक रहस्यमय सूर्यास्त और पहली कटौती की पतली रक्त रेखा को देखकर एक ग्लाइडर पर बैठा हो, तो बचत सर्जरी जो ग्रह को आजाद करेगी एक गर्भ के कारावास से जो हमें अच्छी सेवा प्रदान करता था, लेकिन अब हमारे लिए बहुत छोटा है। क्या आप अपने पुनर्जन्म के उत्सव में रो सकते हैं? क्या आप आत्मा की पहली गुल में चूसना करने के लिए तैयार हैं? क्या आप स्वतंत्र होंगे?

16 स्थिरता इतनी पवित्र क्यों है?

मेरा अनुभव मुझे सिखाता है कि स्थिरता में गहरी और शक्तिशाली पवित्रता है हम में से बहुत सारे लोग रोज़मर्रा की बात सुनने और उसमें पवित्र पाते हैं। हम अपने दिमाग में विचारों और भावनाओं, यादों और कल्पनाओं के घबराहट के विवाद को रोकते हैं। क्या स्थिरता हमें प्रदान करता है सुनने के लिए एक मौका लेना हमें हमारी सांस पकड़ने की अनुमति देता है। स्थिरता सुनना स्वस्थ है और हमारे दिमाग को स्पष्ट करने में हमारी मदद करता है। हम शांति और आराम का स्वागत करते हैं जो हम स्थिरता में पा सकते हैं। क्या यह स्थिरता पवित्र करता है? मैं बहुत कुछ जानता हूं जो लगता है कि शब्द स्थिरता से अधिक पवित्र हैं। उनमें से कई लोग एक साथ मिलकर पवित्र गाना गाते हैं या बात करते हुए सुनते हैं। वे विश्वास करते हैं कि प्रचार या उपदेश के बारे में कुछ पवित्र है हम अक्सर लगता है कि हमारे अपने शब्दों स्थिरता से अधिक पवित्र हैं। शब्द हम कैसे समझते हैं और हमारे चारों तरफ दुनिया पर एक संभाल लेते हैं। हम अपनी अंतर्दृष्टि साझा करते हैं और हमारे प्रश्न पूछते हैं, लेकिन अक्सर आगे को प्रतिबिंबित करने के लिए समय नहीं लेते

हमारे विचारों से परे यह विचार हमारे लिए चुनौतीपूर्ण है। यदि हम सब कुछ के बारे में बात कर या सोच सकते हैं तो हम मानते हैं कि हम इसे सब समझ सकते हैं। क्या स्थिरता इतनी पवित्र है अगर शब्द हम कैसे खोजते हैं और समझते हैं? हमारे लिए जो पवित्र है उसे खोजने में हम सभी रुचि नहीं हो सकते हैं हमारे जीवन में पवित्र हमें सूक्ष्म तरीके से खींचता है पवित्र सच्चाई उनकी वर्णन या उनका विश्लेषण करने की इच्छा से परे हो सकती है। हम अभ्यास से बाहर हो सकते हैं

कैसे स्थिरता इतनी पवित्र है? इससे पहले कि मैं सुनने के लिए सीखना शुरू किया, मुझे स्थिरता में रुचि नहीं थी। मैं एक ऐसी दुनिया में रहती हूं जो विश्लेषण के शब्दों की शक्ति और सुंदरता पर आधारित है। मेरे अनुभव ने मुझे सिखाया जीवन को हल करने की एक समस्या थी। मेरा ध्यान जीवन के सवालों के सही उत्तर पाने पर था। कुछ सवाल दूसरों की तुलना में अधिक जटिल थे जीवन को समझने के बारे में था प्रत्येक स्थिति, प्रत्येक प्रश्न, पता लगाया जा सकता है और सूचीबद्ध किया गया है। हम टुकड़ों को समझ सकते हैं और उन्हें एक साथ फिट कर सकते हैं, हालांकि इसमें कुछ समय लग सकता है। मैंने सोचा था कि पवित्र उसी तरह से काम किया। अगर हम ध्यान केंद्रित करते हैं तो हम चीजों को फोकस में खींच सकते हैं मेरे लिए चुनौती तब थी जब सभी प्रश्न और उम्मीदें मुझे एक कोने में धकेल दिया। मैं जो विश्वास करता था वह पवित्र था मुझे अपने विश्लेषण से परे जाने के लिए खींच रहा था मेरी सावधानीपूर्वक क्रमबद्ध श्रेणियां अलग-थलग पड़ने लगीं पवित्र सच्चाई मुझे कहीं और जाने के लिए आगे बढ़ रही थी मुझे एक बिंदु से मिला, जहां से मैं अगले चरण को समझ नहीं पाया। मुझे और अधिक लेने के लिए पर्याप्त शब्द नहीं थे मेरी ही एकमात्र पसंद है कि यह सुनने के लिए कि शांति क्या कह रहा है मुझे संचार की खोज में दोनों शब्दों और स्थिरता दोनों शामिल हैं जब शब्दों ने हमें उन तक ले जाया है जहां तक वे कर सकते हैं, स्थिरता को सुनना हमारा अगला कदम है क्या स्थिरता इतनी पवित्र है कि हम इसे शब्दों से परे ले जा सकते हैं? हाँ, यह हो सकता है।

स्थिरता क्या इतना पवित्र है? हमारे तर्कसंगत, बौद्धिक विश्लेषण हमें दूर ले जा सकते हैं, लेकिन अभी तक। जीवन हम जो व्यवस्थित और समझ सकते हैं, उससे ज्यादा है। स्थिरता के साथ-साथ शब्दों में सबक भी हैं हमारे चारों तरफ गहरे सत्य, और हमारे भीतर, उनको स्पष्ट करने की हमारी क्षमता से सीमित नहीं हैं हम सुन

सकते हैं और हम शब्दों में डाल सकते हैं। हम पहले भी इसे सुनने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। यह हमें पवित्र स्थिरता को सुनने के लिए अभ्यास करने के लिए अभ्यास लेता है समय के साथ हम अपने अति मनोवैज्ञानिक मस्तिष्क को शांत करना शुरू करते हैं और पहचानते हैं कि क्या स्थिरता में पवित्र है। हममें से कुछ को हमारी अत्यधिक आवश्यकता के विश्लेषण और समझने की आवश्यकता पर काम करने की आवश्यकता है। जब हम स्वयं को एक पवित्र स्थान में मिलते हैं तो हम सुनने के लिए समय लेते हैं। यह शक्तिशाली संगीत या एक चुनौतीपूर्ण धर्मोपदेश के बारे में नहीं है हम इस जगह की पवित्र स्थिरता को सुनते हैं। स्थिरता एक समान नहीं है, वैसे ही हम इसे कहीं भी पाते हैं। हम अन्य लोगों की बात करते हुए भरे हुए स्थानों में स्थिरता पा सकते हैं। कभी-कभी हमें शब्दों से ब्रेक लेने के लिए पढ़ने या देखने को रोकने की आवश्यकता होती है। हम खुद को पवित्र स्तब्धता सुनने की ज़रूरत पाते हैं

दीप सच्चाई स्थिरता में एम्बेडेड हैं जब हम शब्दों और सोच को अलग रखते हैं तो हम स्थिरता को सुन सकते हैं। गहराई जो हमारे स्पष्टीकरण से परे है, हमारे लिए स्थिरता में प्रतीक्षा करता है। हमारे अस्तित्व में पवित्र कहाँ है? हम स्थिरता की तुलना में शब्दों के साथ अधिक सहज हो गए हैं हमारे जीवन में घिरे हुए हैं और ध्वनि से संतृप्त हैं स्थिरता कुछ हो गया है जिसे हमें अनुभव करना चाहिए हममें से प्रत्येक शांति में अपने तरीके से पवित्रता पा सकते हैं। हमारे लिए पवित्र स्थिरता का पता लगाने की कोई त्वरित और आसान जांच सूची नहीं है हम पवित्र स्थिरता को सुनने के लिए कुछ समय लेते हैं। यह पहली बार में थोड़ा असामान्य या असहज महसूस कर सकता है अपनी असुविधा आपके सुनने के लिए एक बाधा मत बनो। यह कुछ समय हो सकता है क्योंकि आपने वास्तव में कुछ भी सुना है। जब हम सुनते हैं तो हम बंद कर देते हैं और ध्यान देते हैं। हमारे मन व्याकुलता से व्याकुलता से घूमते नहीं हैं। हम अपने आप को अन्य सभी चीजों से याद नहीं करते हैं जिन्हें हम शायद हमारे समय के साथ कर रहे हैं। बिना प्रयास किए बिना, हम खुद को पवित्र करने के लिए खोलते हैं स्थिरता में हम सांस लेते हैं और हमारी अपनी सांस की लय सुनते हैं। हमारी समझ से परे पवित्र सच्चाई हमें प्रत्येक सांस से भर देती है। पवित्र स्थान को सुनने के अलावा, हमारे लिए ज़्यादा ज़रूरी कोई स्थान नहीं है, कोई काम हमारे लिए ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं है। हम अपने भीतर स्थिरता पाते हैं और पवित्र को सुनते हैं जो हमारे बीच बहती हैं। हम अपने तरीके से बाहर निकलते हैं और सुनते हैं कि हम क्या सुन सकते हैं। इस हफ्ते हमारे लिए इतनी पवित्रता क्यों पवित्र है? आज हम पवित्र पवित्रता कहां जाएंगे?

17 जीवन कठिन है, जीवन कठिन है

हर कोई जीवन में खुश होना चाहता है हम सब एक आदर्श जीवन जीना चाहते हैं हम उस महान काम या एक सफल व्यवसाय चाहते हैं हम श्री राइट या मिस्टर परफेक्ट से शादी करना चाहते हैं। हम महान बच्चों

चाहते हैं हम चाहते हैं कि हमारे पास मित्र रहें जो बारिश आती हैं या चमकते हैं हम सभी भौतिक चीजों को जीवन देने में सक्षम होना चाहते हैं और हमारी सभी समस्याओं को गायब करना है।

हर कोई अच्छे जीवन की इच्छा करता है यह विभिन्न स्तरों पर हो सकता है। एक व्यक्ति एक अच्छा जीवन को एक तरह से परिभाषित कर सकता है और दूसरा इसे किसी अन्य तरीके से बता सकता है। एक व्यक्ति के लिए एक अच्छा जीवन सिर्फ एक दिन में तीन भोजन और उनके सिर पर एक छत हो सकता है। दूसरे के लिए बैंक में एक विशाल हवेली और कुछ मिलियन डॉलर हो सकते हैं।

एक अच्छा जीवन क्या है इसके विभिन्न स्तर और अर्थ हैं लेकिन जो भी आप इसे परिभाषित करते हैं, शायद एक बात यह है कि आप कई अन्य लोगों के साथ समान हो सकते हैं। आप चाहते हैं कि अच्छा जीवन तनाव मुक्त हो। आप इसे इतना कठिन या इतना इसके लिए संघर्ष करने के लिए बिना काम करना चाहते हैं यह एक सामान्य मानव उम्मीद है किसी को जीवन के माध्यम से संघर्ष करना पसंद नहीं है

दुर्भाग्य से, यह भी है कि आप उस महान जीवन को होने से रोक सकते हैं। सभी काम के बारे में सोचा, सभी योजनाएं, बाधाओं और प्रतिरोधों पर काबू पाने के लिए बहुत से लोगों को छोड़ने से पहले भी शुरू हो जाएं। यह सब बहुत भारी लग सकता है, और कई लोगों के लिए यह सब इसके लायक नहीं लगता है। यह एक मैराथन चलाने के विचार पर ऊर्जा की सूखा होने की तरह है इससे पहले कि आप शुरुआती लाइन पर भी चल रहे हैं, जो कि चल रहे सभी का विचार आपको डराता है और आपको बहुत मानसिक रूप से टायर करता है, आप इसके लिए नहीं जाने का फैसला करते हैं। यह सिर्फ बहुत कठिन है

मेरी पसंदीदा पुस्तकों में से एक एम। स्कॉट पेक द्वारा "द रोड कम ट्रैवल" नामक है पुस्तक में पहला वाक्य है:

"ज़िंदगी कठिन है।"

अब, यदि आप एक पुस्तक उठाते हैं और पहली बात यह बताती है कि "जीवन कठिन है" तो आप सोच सकते हैं "क्या यह किताब ऐसी शुरुआत के बाद आश्वस्त और प्रोत्साहित करने जा रही है?

लेकिन, जैसा कि पेक को समझने के लिए चला जाता है, एक बार जब आप स्वीकार करते हैं कि जीवन कठिन है, तो यह अब एक मुद्दा बन जाता है कि यह मुश्किल है वह कहता है:

"एक बात जो हम जानते हैं कि जीवन कठिन है – एक बार जब हम वास्तव में समझते हैं और स्वीकार करते हैं – तो जीवन अब मुश्किल नहीं होता।"

ज़िंदगी में आपको कुछ भी मिलना चाहिए जो आप चाहते हैं बिना कुछ प्रयासों के जीवन में कुछ भी प्राप्त करना बहुत दुर्लभ है। अगर आप लॉटरी जीतते हैं तो आपको बिना प्रयास किए सब कुछ मिलेगा, फिर भी आप को बाहर जाना होगा और लॉटरी टिकट खरीदना होगा, इसलिए यह बिल्कुल मुफ्त नहीं है।

जीवन कठिन है – आपका बॉस हमेशा दुनिया का सबसे अच्छा व्यक्ति नहीं होगा आपकी नौकरी में ऐसे चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा जिन्हें आपने पहले नहीं देखा था आपके सहकर्मियों को कभी-कभी दर्द होगा आप हमेशा वेतन और मान्यता प्राप्त नहीं करेंगे जो आपको काम पर लायक और योग्य चाहिए। आपके ग्राहक दुनिया के सबसे अच्छे व्यक्ति नहीं हो सकते हैं।

जीवन कठिन है – आपके बच्चे हमेशा आदर्श बच्चे नहीं होते हैं जिन्हें आप चाहते हैं आपकी पत्नी या पति के रूप में बिल्कुल सही नहीं होगा जैसा कि आपने सोचा था कि जब आप उनसे शादी करते थे – वास्तव में मैं आपको गारंटी देता हूं कि वे नहीं हैं। आपका घर आदर्श स्थान नहीं है, जिसे आप चाहते हैं कि यह होना चाहिए आप एकदम सही पत्नी या पति नहीं हैं, जिसे आपने एक बार सोचा था कि आप थे।

जीवन कठिन है – व्यवसाय चलाने से उतना आसान नहीं है जितना आपने सोचा था कि यह होगा। कोई भी आपके कारोबार में पैसा लाने के लिए तैयार नहीं है, भले ही आप वाकई बहुत ही अच्छे इंसान हैं और आपके व्यवसाय में बहुत अच्छे उत्पाद हैं ।

मैं इन उदाहरणों पर और साथ में जा सकता हूं, लेकिन निचली रेखा यह है कि "जीवन कठिन है।"

इसका मतलब यह नहीं है कि आप सभी को यह कहें कि आप ब्रेक के लायक नहीं हैं मैं यह नहीं कह रहा हूं कि आप यह सोचकर न्यायसंगत नहीं हैं कि आप जीवन और दुनिया से जो कुछ भी हासिल कर चुके हैं, उससे अधिक के लायक हैं।

मैं यह नहीं कह रहा हूं कि आप जिस तरह से महसूस करते हैं, उसे महसूस करने में आप उचित नहीं हैं। मुझे पता है कि आपको कई बार मुश्किल हो गया है। मुझे पता है कि कभी-कभी आपको लगता है कि यह सब बहुत भ्रमित और सिर्फ बहुत मुश्किल है मेरा मतलब है कि आपने बहुत मुश्किल काम किया है आपने अपनी ज़िंदगी में जो भी काम किया है या घर पर यह सब किया है। लेकिन ऐसी चीजें हैं जो आपने कामयाब नहीं हुई हैं या साथ ही आशा की थी। यह सब सिर्फ गलत हो गया लगता है और आप नहीं जानते हैं कि कैसे या क्यों?

पर यह ठीक है। यह आम है। यही इंसान है जो सभी के बारे में है यह वही जीवन है जो सभी के बारे में है जीवन कठिन है। स्वीकार करो उसे।

एक बार जब आप करते हैं, तो आप अपने परिस्थितियों के बारे में बेहतर महसूस करेंगे तब आप अपनी स्थिति को किसी भी चीज़ के बारे में नहीं सोचेंगे, लेकिन हर इंसान के लिए आम बात है। तब आप जीवन के एक हिस्से के रूप में अपनी स्थिति के बारे में सोचेंगे। अब आप अपने आप को यह नहीं बताएंगे कि बुरी चीजें क्या हैं या आप एक क्षेत्र या किसी अन्य क्षेत्र में इतनी अच्छी तरह से नहीं कर रहे हैं। आपको पता चल जाएगा कि आप केवल इंसान हैं आप सभी की तरह गलती करते हैं। आप सभी के समान बिल्कुल सही नहीं हैं अस्थायी और बस प्रवाह के साथ जाओ। आप देखते हैं, इस कहानी के दो पक्ष हैं। इस सिक्का का एक और पहलू है। सिक्का के एक तरफ जहां आपके पास "जीवन कठोर" शब्द हैं, लेकिन यदि आप उस सिक्का को बदलते हैं तो पांच बहुत छोटे लेकिन शक्तिशाली शब्द होंगे। उन्होंने पढ़ा: "आप इसे बेहतर बना सकते हैं" यह जीवन के बारे में खूबसूरत चीजों में से एक है। आप अपना जीवन बेहतर बना सकते हैं आपके लिए क्या जिम्मेदारी है और आप इस बात का कैसे जवाब देते हैं कि जीवन कठिन है जैसा अब कह रहे हैं, "जीवन यदि

आप नींबू बना ले, तो नींबू पानी बनाओ।" उस ज़िंदगी को स्वीकार करना मुश्किल है, यह स्वीकार करने के साथ कि आपको इसे बेहतर बनाने की ज़िम्मेदारी है। आपके पास यह बेहतर बनाने की ज़िम्मेदारी ही नहीं है, आपके पास इसे बेहतर बनाने की क्षमता और शक्ति है। आप इसे बेहतर बना सकते हैं – बेहतर कर्मचारी बन सकते हैं और काम पर अधिक जिम्मेदारियों को देने वाला कोई व्यक्ति बन सकते हैं। पदोन्नति और बेहतर वेतन एक तरह से या किसी अन्य का पालन करने के लिए निश्चित है। आप इसे बेहतर बना सकते हैं – बेहतर बच्चों को उठाने और खुशहाल घर कैसे जानें अच्छा पति या पत्नी बनें, जिसे आप अपने पति को पसंद करना चाहते हैं। आप इसे बेहतर बना सकते हैं – यह जानने के लिए कि उस कारोबार को कैसे बदलना है आपको एक सफल व्यवसाय चलाने के लिए आवश्यक अतिरिक्त कौशल हासिल करें। आप देखते हैं, केवल एक ही व्यक्ति पर आपके पास कोई नियंत्रण है, वह स्वयं है आप अन्य लोगों को नहीं बदल सकते चलो क्षण के लिए शादी का उदाहरण लेते हैं। ध्यान दें कि मैंने यह नहीं कहा था कि आपको अपने पति या पति को आदर्श पति या पत्नी में बदलना चाहिए। मैंने कहा था कि आपको आदर्श पति या पत्नी बनना चाहिए, जिसे आप चाहते हैं कि आपका पति पत्नी हो। उसके बाद, जब आप एक ऐसे व्यक्ति बन जाएं तो आपके पास अपने पति या पत्नी से संबंधित कैसे कई विकल्प हो सकते हैं. पहले, जब आप किसी पति या पत्नी के रूप में एकदम सही हो जाते हैं, तो कोई भी आपके पति या पत्नी हो सकता है, अंतर देख सकता है और इसके लिए भी बदलाव का निर्णय ले सकता है बेहतर या वे सिर्फ अपने नए दृष्टिकोण की प्रतिक्रिया के रूप में स्वाभाविक रूप से बदल सकते हैं दूसरे, यदि वे बदलते नहीं हैं, तो शायद आप परिपक्वता के स्तर पर पहुंच गए होंगे, जहां आप सामग्री और संतुष्ट हैं कि वे कौन हैं और उनके दोष आपको परेशान नहीं करते हैं। या तीसरे, कुछ मामलों में, जैसे अपमानजनक संबंधों या रिश्तों में जो आपके स्वास्थ्य के लिए खतरा हैं, आप स्वयं स्वीकृति और साहस के स्तर पर पहुंच सकते हैं जहां आप उस अपमानजनक या विश्वासघाती साथी को छोड़ सकते हैं। जो भी मामला हो सकता है , यह उदाहरण इस तथ्य के बारे में एक अन्य महत्वपूर्ण तथ्य को दिखाता है कि जीवन कठिन है और जिम्मेदारी ले रहा है यही है: "आपके पास हमेशा विकल्प हैं" चाहे आप किस स्थिति में हों, आपके पास कोई विकल्प नहीं है कोई फर्क नहीं पड़ता कि कितनी बुरी चीजें हैं, आपके पास एक विकल्प है कोई बात नहीं जो आप सोचते हैं कि आप कर सकते हैं या नहीं कर सकते, आपके पास कोई विकल्प है. अब यह किसी भी तरह से आसान विकल्प नहीं हो सकता है। यह एक बहुत ही मुश्किल विकल्प हो सकता है और जिस सड़क पर आप फैसला लेते हैं वह कठिन हो सकता है यह आपको अपने आराम क्षेत्र से बाहर निकल सकता है इसका मतलब यह हो सकता है कि शुरुआती समय में आपकी ज़िंदगी इससे पहले की तुलना में भी कठिन हो सकती है। लेकिन यह एक विकल्प भी है। कई बार आप वास्तव में पाएंगे कि विकल्प उतने मुश्किल नहीं हैं जितना आपने सोचा था कि वे थे। आप उन विकल्पों और संभावनाओं को देखने से अपने दिमाग को बंद कर सकते हैं क्योंकि आपने सोचा था कि आपके पास कोई विकल्प नहीं है। एक बार जब आप इस विचार के लिए खुले हो जाएं कि आप अपने जीवन के लिए ज़िम्मेदार हैं और आपके पास विकल्प हैं, तो आप पाएंगे कि आप अब सिर्फ अटक नहीं रह सकते क्योंकि जीवन कठिन है। उस बिंदु पर, जीवन अभी भी कठिन है, लेकिन आपके पास अंतिम शब्द है । आपका जीवन अधिक अर्थपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण बन जाता है।

सकारात्मक सोच की शक्ति का उपयोग आपको सफलता और उपलब्धि का जीवन दे सकता है। आपके सपने को जीने के लिए आपके पास सबसे महत्वपूर्ण संपत्ति है? यह आपकी नाक के नीचे सही है असल में आपकी नाक इसका हिस्सा है। यह बस है – आप अधिक विशेष रूप से आपका मन

द पॉवरहाउस टू अ ड्रीम सिक्स – आपका मन और सकारात्मक सोच की शक्ति: आपके विचार आपके सपनों को हासिल करने की अपनी इच्छा में सबसे महत्वपूर्ण संपत्ति हैं वे आपको उन तरीकों से प्रभावित करते हैं जिनकी कल्पना नहीं हो सकती है सच्चाई यह है कि चाहे आप इसे जानते हैं या नहीं, आपके विचार उस जगह या स्थिति के लिए ज़िम्मेदार हैं जो आप अभी हैं।

सकारात्मक सोच की शक्ति

कोई भी तर्क नहीं करेगा कि बिजली मौजूद है। आप इसे स्पर्श नहीं कर सकते, गंध नहीं कर सकते, सुन सकते हैं या देख सकते हैं, लेकिन इसके प्रभाव हर जगह आप देख रहे हैं। अपनी शक्ति हर जगह स्पष्ट है जो आप देखते हैं।

उसी तरह, आपके विचार ऊर्जा हैं आपके विचार आपके जीवन को संचालित करते हैं जैसे बिजली मोटर को चलाती है यह एक सकारात्मक मानसिक रवैया होने में शक्ति है।

हां, मैं यह कहने वाला पहला व्यक्ति नहीं हूं और मुझे यकीन है कि मैं आखिरी नहीं होगा या नहीं। तुम जानते हो क्यों? क्योंकि यह सच है यह सरल है, लेकिन सच है विचारों में शक्ति है; नकारात्मक और सकारात्मक सोच में सकारात्मकता चुनें और आप सकारात्मक ऊर्जा और सकारात्मक परिणामों का आनंद लेंगे।

जो तुम सोचते हो वही हो। यह मेरी पसंदीदा कविताओं में से एक है जो सकारात्मक मानसिक रुख रखते हैं:

"यदि आपको लगता है कि आप पीट चुके हैं;

यदि आपको लगता है कि आप नहीं की हिम्मत, आप नहीं करते हैं;

यदि आप जीतना चाहते हैं लेकिन आप नहीं सोच सकते हैं;

यह लगभग एक इंच है जो आप नहीं करेंगे।

यदि आपको लगता है कि आप खो देंगे तो आप हार गए;

दुनिया के बाहर के लिए हम पाते हैं

सफलता एक साथी की इच्छा के साथ शुरू होती है;

यह सब मन की स्थिति में है

जीवन की लड़ाई हमेशा नहीं जाती

मजबूत और तेज़ आदमी के लिए,

लेकिन जितनी जल्दी या बाद में वह आदमी जो जीतता है

वह आदमी है जो सोचता है कि वह कर सकता है। "

लेकिन वहां मत रोको उस जीवन को स्वीकार करना कठिन है इसका यह अर्थ नहीं है कि आप प्रत्येक सर्त को स्वीकार करते हैं।

बस कर दो

"कब्रिस्तान पृथ्वी पर सबसे अमीर जगह है क्योंकि यह यहां आप की सभी आशाएं और सपने जो कभी भी पूर्ण नहीं हुईं, किताबें जो कभी नहीं लिखी गई थीं, जो गाने कभी नहीं गाए गए थे, जो कभी भी साझा नहीं किए गए थे, इलाज करते थे कि कभी नहीं खोज रहे थे, क्योंकि सभी किसी को भी उस पहले कदम उठाने से डरते थे, समस्या के साथ रहते थे, या अपने सपने को पूरा करने के लिए निर्धारित "। ये असील मोयो नाम से प्रेरित और महत्वाकांक्षी लेखक के शब्द हैं।

इस ग्रह पर कोई अर्थपूर्ण सार्थक हासिल नहीं होता अगर सभी लोगों ने जो कुछ भी वे योजना बनाई हो या अधूरा शुरू करने के लिए छोड़ने का फैसला किया हो, क्योंकि वे समीक्षकों द्वारा भीड़ से मिले। कल्पना कीजिए अगर थॉमस एडीसन ने अपनी दृष्टि को पूरा नहीं करने का फैसला किया होता, तो क्या हम आधुनिक प्रकाश बना रहे होंगे? कल्पना करो कि दुनिया क्या होगी यदि राइट ब्रदर्स ने हवाई जहाज पर योजनाओं को रोकना तय किया है? अगर आज तक ये जीनियस ने अपने विचारों को शेल्फ के लिए चुना था, तो आज हमारे पास कुछ नहीं होगा।

ऐसा कहा जाता है, "एक हजार मील की यात्रा एक कदम से शुरू होती है" यह बात नहीं है कि आप कितना बड़ा या छोटा है, कुछ बड़े में उद्यम करना है, लेकिन आप जो कुछ भी करते हैं उसके साथ आप क्या करते हैं। "भय" तत्व है जो हमारी सफलता को भयभीत करता है। हम अक्सर उन लोगों के शब्दों से डरते हैं जो हम जीवन में लेने वाले कदमों से संबंधित होते हैं। कभी भी किसी की गैरजिम्मेदारीपूर्ण टिप्पणियां आपको रोक नहीं सकते हैं आम तौर पर वे आपकी दृष्टि और क्षमता का विस्तार नहीं देख सकते हैं। जब वे कहते हैं, "यह नहीं किया जा सकता", सुनिश्चित करें कि वे आपको यह कर रहे हैं देखते हैं। अपने कदमों को अपने रास्ते पर फेंकने वाले शब्दों का प्रयोग करें, बजाय अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए आपको अवरुद्ध करने वाली चट्टानों की बजाय।

आज मैं आपको बता रहा हूं कि सभी को इकट्ठा करना, "आप इसे नहीं बना सकते", अपनी सफलता को बढ़ाने के लिए नेल्सन मंडेला ने एक बार कहा था, "हम अक्सर अपने आप से पूछते हैं, मैं बहुत खूबसूरत, शानदार या प्रतिभाशाली हूं, लेकिन वास्तव में आप कौन नहीं हैं?" हवा का सामना करने के लिए सभी आत्मविश्वास और साहस को इकट्ठा करो जहां विजय की प्रतीक्षा है। हालांकि यात्रा भारी लग रही है और कठिन, बस पता है कि सुरंग के अंत में प्रकाश है जब चलना कठिन हो जाता है, तो मुश्किल हो जाता है बहुत मुश्किल हो, तूफानी तूफान का सामना करने के लिए जो आपसे आगे आ रहा है और कोई मोड़ नहीं है। जब जीवन आपको कठिन परिस्थितियों में डालता है, तो नहीं कहें, "क्यों मुझे", बस कहें, "मैं कोशिश करो" (ड्वेन जॉनसन)।

यह मुझे ईगल की जीवन शैली की याद दिलाता है जब बादल इकट्ठा होते हैं, तो ईगल्स उत्साहित होते हैं। ईगल अपने आप को ऊपर उठाने और बादलों के ऊपर उच्च करने के लिए तूफान की हवा का उपयोग करता

है। इससे ईगल को उच्च उड़ान भरने का अवसर मिलता है। ऐसा हो रहा है, जबकि अन्य सभी पक्षियों पेड़ों की पेड़ों और शाखाओं में छिपा हो जाएगा। हम जीवन के तूफानों को अधिक ऊंचाई तक पहुंचने के लिए भी उपयोग कर सकते हैं जीवन के उग्र तूफानों को आप सभी समस्याओं, सभी आलोचकों और सभी भय से ऊपर उड़ने के लिए साहस देते हैं।

इस बात को ध्यान में रखें, जब चीजें आसान हो जाती हैं, तब हम विकास नहीं करते हैं, जब हम चुनौतियों का सामना करते हैं तो हम बड़े होते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि जीवन आपको काम करने के लिए क्या देता है, लेकिन आप जो कुछ भी देते हैं उसके साथ ऐसा करते हैं। तुम्हें खुद पर भरोसा करना होगा। यदि आप अपने आप में विश्वास नहीं करते हैं और आपके पास क्या है, तो किसी और को आप पर विश्वास क्यों करना चाहिए? यह लोगों के बारे में क्या नहीं है, बल्कि यह है कि आप क्या सोचते हैं जब लोग आपको बताते हैं कि आप कुछ नहीं कर सकते, तो वे आपको बता रहे हैं कि वे क्या नहीं कर सकते।

जीवन में सबसे बड़ी प्रेरणाएं भीतर से आती हैं प्रत्येक दिन बड़ा काम करने के लिए, अपने आप को प्रेरित करें, फोकस करें और निष्पादित करें। सैनिक पर कार्रवाई करने के लिए किसी की प्रेरणा का इंतजार नहीं करना चाहिए जो बोनस के रूप में आना चाहिए।

तथ्य यह है कि किसी ने शुरू किया कि आप जो करना चाहते हैं या शुरू करना चाहते हैं, आपको अपने दृष्टिकोण का पीछा करने से हतोत्साहित नहीं करना चाहिए। आप अनोखे हैं, और आप में अद्वितीयता चमकते हैं। आपका भविष्य आपके कार्यों पर निर्भर करता है अपने आप को सीमित मत करो और दूसरों को यह न समझें कि आप क्या कर सकते हैं। अपने आप में विश्वास करें और फिर अपनी संभावनाओं तक पहुंचने के लिए जीवित रहें। आप जो भी मान सकते हैं वह प्राप्त कर सकते हैं

तो बस करो!

चुनौतियां आने लगीं,

युद्ध में अधिक मुश्किल हो रही थी,

जैसे अकेला दिन कभी खत्म नहीं होगा।

चींटी काम कर रही थी,

मधुमक्खियों को छोड़ने के बिना काम करने में व्यस्त हैं,

शेरों को जीवित रहने के लिए शिकार की तलाश थी

श्रमिकों ने कर्कश सूर्य के नीचे काम किया,

वे सूर्यास्त तक काम करते हैं

वे हार नहीं करना चाहते,

वे वास्तव में देखना चाहते हैं,

वे मजबूत बने रहना चाहते हैं,

हर मौसम में,

जब तक बुरे समय गिरगिट की तरह बदलते हैं,

ऐसी चीज़ को प्राप्त करने के लिए जो हमेशा चाहती है बारिश, सूरज, आग,

लेकिन वे कभी थके हुए नहीं होंगे।

हार न दें, मुसीबतों में आने के कारण,

बाधाएं आपके विचार से कहीं अधिक हैं,

प्रलोभन को मोहक रखा,

जब दुश्मन दोस्तों से ज्यादा होते हैं,

जब लोग सबलाथ और टोबीयाह जैसे लोग उसी रास्ते पर हैं

जब बड़े पहाड़ नीचे कुचल रहे हैं,

जब समुद्र दिखता है, सूखता है,

जब जंगल जंगल से डरते हैं,

जब तूफान आंधी की तरह बरस रही है,

जब प्रलोभन चलते रहे, सैनिकों की तरह युद्ध करने जा रहे थे

हार न दें, क्योंकि लड़ाई खत्म नहीं हुई है।

बीज से बढ़ते फूल बहुत काम है। बिल्कुल शारीरिक काम नहीं है, लेकिन एक अधिक अनुशासन किसी को बीज की देखभाल करनी चाहिए, यह सुनिश्चित कर लें कि उन्हें नियमित आधार पर पानी मिलता है और यह मातम नहीं मनाते। यदि आप फूलों में निवेश नहीं कर रहे हैं, यदि आप यह नहीं मानते हैं कि वे वास्तव में बहुत खूबसूरत नमूनों में खिलेंगे, तो आप उनकी देखभाल करने के लिए याद रखना कम होने की संभावना नहीं है। विश्वास नहीं करते कि वे खिलते हैं, उनकी ओर ध्यान नहीं देते हैं, जो उन्हें खिला नहीं लेते हैं - एक आत्मनिर्भर भविष्यवाणी

कोई गलती न करें, एक प्रतीत होता है कि मृत बीज में भव्य खिलता की पूरी फसल का उत्पादन होता है एक चमत्कार है। लेकिन उस चमत्कार को बनाने के लिए, यह उस विश्वास को मानने और उनका पालन-पोषण करने लगता है।

जीवन में यह वही परिदृश्य कैसे खेलता है? जिस चमत्कार का मैंने सपना देखा था वह एक पेशेवर वक्ता बनना चाहता था। मैं ईमानदारी से, ईमानदार, प्रेरक घटनाओं की अगली पंक्ति में बैठकर बधाई देता हूं कि स्पीकर मुझमें कुछ स्थान देंगे और मुझे उस सपने का पालन करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। मैंने कभी कुछ नहीं कहा, कुछ भी नहीं किया, लेकिन इच्छा फिर एक दिन, मैं एक सम्मेलन में एक प्रोफेशनल स्पीकर से मिला जिसमें मैंने भाग लिया। उन्होंने मेरे साथ साझा किया कि नेशनल स्पीकर एसोसिएशन वास्तव में व्यक्तियों को पेशेवर बोलने वाले कारोबार शुरू करने में मदद करता है। बैठकें दो घंटे दूर थी, सप्ताह के दिनों और महंगी दौरान, लेकिन मैं बहुत उत्साहित थी, इससे कोई फर्क नहीं पड़ा। मैं हर मीटिंग में भाग लिया, अकादमी में शामिल हो गया, मेरा पहला भाषण बमबारी और छोड़ दिया मैं थोड़ी देर के लिए खारिज कर दिया, टोस्टमास्टर्स में शामिल हो गया और वापस चला गया। मैंने अपने घर में तीन दिनों के लिए अपने आप को बंद कर दिया और अंत में मुझे पता चला कि मैं किस पर बात करूंगा, एक लोगो, व्यवसाय कार्ड, एक शीट, वेबसाइट बनाने में मदद मिली और मेरी बातचीत पर मेहनत की। मैंने उनसे कहा था जो मुझे पेश करने के लिए आमंत्रित करेंगे। और मैंने अपने सिर में उस आवाज से तोड़फोड़ करने की इजाजत दे दी, जो इतनी हताश थी कि

मुझे सुरक्षित और छोटा रखें और फिर एक चमत्कार हुआ। 53 साल की उम्र में, मैं एक पेशेवर वक्ता बन गया।

एक और चमत्कार मेरे वजन के साथ मेरा संघर्ष था। । । मेरे पूरे जीवन (कोई अतिशयोक्ति नहीं) फिर एक दिन मैंने छोड़ दिया और यीशु की बैठक (या उच्च शक्ति, भगवान, स्रोत, आत्मा, जो भी आपके लिए काम करता है) के लिए एक शाब्दिक आते हैं, बताते हुए कि मैंने किया था! मैंने अपने भगवान को बताया कि मेरे पास दो गैर-वार्तालाप हैं: मैं कभी भी फिर से भोजन नहीं करता था और मैं 30 पाउंड को छोड़ना होता था। मुझे नहीं पता था कि यह कैसे होगा, परन्तु भरोसेमंद भगवान ने मुझे दिखाया। कुछ ही समय बाद, मैंने एक अध्ययन के बारे में सुना, जहां वैज्ञानिकों ने उन्हें कोकीन के आदी होने के लिए चूहों के साथ काम किया, और फिर उन्हें कोकीन और चीनी पानी के बीच का विकल्प दिया। चूहों ने हर बार चीनी का पानी चुना! सुनवाई ने मुझे इतना गुस्सा दिलाया, जैसा कि मुझे एहसास हुआ कि मैं एक नशे की लत से चीनी के लिए कुछ भी नहीं

था! उस दिन, 1 अगस्त 2016, मैंने सोना 100% छोड़ दिया। कोई शक्ति की ज़रूरत नहीं होगी (मैं पैसे निकालने के बाद जो सुंदर नहीं था!) अब मैं 35 पाउंड हल्का हूं और कभी बेहतर महसूस नहीं किया। यकीन के लिए एक चमत्कार!

क्या चमत्कार आप के लिए उम्मीद कर रहे हैं? क्या आप रेत में एक रेखा खींचना चाहते हैं और एक चमत्कार करने के लिए आगे बढ़ना चाहते हैं? क्या बीज आप कर सकते हैं संयंत्र और फिर पानी, अपने चमत्कार बढ़ने के लिए? क्या आप पहले से ही करते हैं?